हिंदी

पाठ्यक्रम शैक्षिक मापदंड

कक्षा 1 से कक्षा 10 तक (प्रथम भाषा)

कक्षा 6 से कक्षा 10 तक (द्वितीय भाषा)

वर्ष 2012

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद
आंध्रप्रदेश, हैदराबाद

भाषा की आवश्यकता

आज तक हमारी यही विचार धारा रही है कि भाषा का अर्थ भावाभिव्यक्ति तथा विचारों का आदान-प्रदान मात्र है। इसी के चलते हम विस्मृत हुए है कि भाषा विचार साधन के रूप में, विषयानुभूति एवं उसकी प्रतिक्रिया का एक साधन भी है। छोटे बच्चों के साथ कार्यरत रहते हुए भाषा के संबंध में भाषा का विस्तृत प्रयोग अति आवश्यक है क्योंकि बाल्यावस्था में उनके व्यक्तित्व विकास, कौशलों की अभिवृद्धि में भाषा निर्माणात्मक भूमिका निभाती है। सांसारिक विषयों के प्रति चेतना, रूचि, कौशल एवं मूल्यों तथा विचार प्रक्रिया की अभिवृद्धि में भाषा सूक्ष्म रूप से सामाजिक जिम्मेदारी का निर्वाहण करती है। कोई भी बालक अपनी मातृभाषा के अतिरिक्त शीघ्रातिशीघ्र प्रयोग की पूर्ति हेतु भाषा का प्रयोग करता है। सांसारिक विषयों का ज्ञान होना एक मुख्य लाभ है। भाषा इसी साधन की उपलब्धि में मुख्य भूमिका निभाती है। बच्चों के दृष्टिकोण के अनुरूप उनके जीवन में भाषा संबंधित कार्यकलापों की जानकारी प्राप्त किये बिना उनके भले-बुरे का ध्यान रखते हुए अभिभावक के रूप में हम अपना कर्तव्य बोध का निर्वाहण नहीं कर सकते।

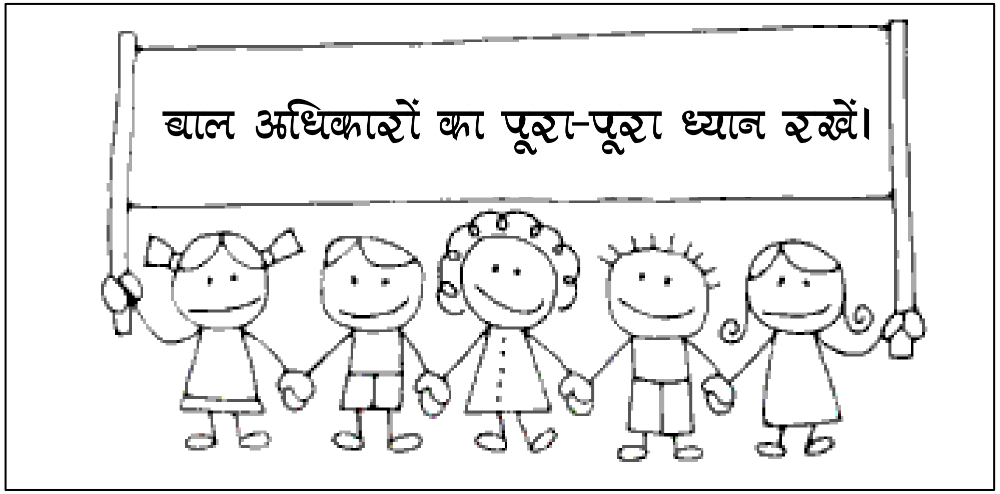

सहभागी लेखक गण

श्री सय्यद मतीन अहमद समन्वयक,
एस.सी.ई.आर.टी., आं.प्र., हैदराबाद

श्री सुरेश कुमार मिश्रा
एस.आर.जी., रंगारेड्डी

श्री डॉ. सय्यद एम.एम. वजाहत
एस.आर.जी., हैदराबाद

कुमारी ऋतु भसीन
एस.आर.जी., रंगारेड्डी

श्री डॉ. शेख़ अब्दुल ग़नी
एस.आर.जी., नलगोंडा

श्री डॉ.बी.जयप्रकाश जोसफ़
एस.आर.जी., विजयनगरम्

श्रीमती ए.वी. रमणा
एस.आर.जी., हैदराबाद

श्रीमती डॉ. शारदा
एस.आर.जी., मेदक

श्री डॉ. राजीव कुमार सिंह
एस.आर.जी., रंगारेड्डी

श्री मुहम्मद सुलेमान 'आदिल'
एस.आर.जी., नलगोंडा

डॉ.मयाना खदीरुल्ला खान
एस.आर.जी., वै.यस.आर.जिला

श्री के. शिवराजन
एस.आर.जी., निजामाबाद

कुमारी के. भारती
एस.आर.जी., रंगारेड्डी

श्रीमती जी. किरण
एस.आर.जी., हैदराबाद

श्री मुहम्मद उमर अली
एस.आर.जी., करीमनगर

डॉ. मुहम्मद हाजी नूरानी
एस.आर.जी., वरंगल

श्री मुहम्मद उसमान
एस.आर.जी., करीमनगर

श्री बी. रमेश बाबू
एस.आर.जी., चित्तूर

श्रीमती डॉ.दुर्गेश नंदिनी
एस.आर.जी., हैदराबाद

श्रीमती कविता
एस.आर.जी., हैदराबाद

श्रीमती जयश्री लोहारेकर
एस.आर.जी., हैदराबाद

श्रीमती शारदा
एस.आर.जी., महबूबनगर

श्रीमती रेशमा बेगम
एस.आर.जी., रंगारेड्डी

श्रीमती पी. जयलक्ष्मी
एस.आर.जी., पूर्व गोदावरी

श्रीमती बी. मधुमति
एस.आर.जी., विशाखापट्टणम्

भाषा विशेषज्ञ - संपादक गण

श्रीमती विजयलक्ष्मी,
अध्यक्ष, हिंदी विभाग, ऐ.ए.एस.ई.-नेल्लूर

प्रो. शकुंतला रेड्डी क्षेत्रीय निदेशक,
केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद

श्रीमती डॉ. अनीता गांगुली एसोसियेट
प्रोफेसर, केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद

श्री. सुवर्ण विनायक (समन्वयक तेलुगु)
एस.सी.ई.आर.टी., आ.प्र. हैदराबाद

विशेष सलाहकार

श्री डॉ. एन. उपेंदर रेड्डी
अध्यक्ष, पाठ्यक्रम व पाठ्यपुस्तक विभाग,
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद,
आंध्र प्रदेश, हैदराबाद

श्री ए. सत्यनारायण रेड्डी
निदेशक,
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद,
आंध्र प्रदेश, हैदराबाद

आमुख

मनुष्य के पास अपने विचार-विनिमय, भावाभिव्यक्ति का एक सर्वोत्तम साधन ‘‘भाषा’’ ही है। भाषाविदों का यह मानना है कि भाषा का बोध सहज व स्वतंत्र रूप में संपन्न हो सकता है। भाषा का नवीन सिद्धांत कहता है कि भाषा बोध में भाषा, अंश से पूर्ण की ओर नहीं बल्कि पूर्ण से अंश की ओर होनी चाहिए। आधुनिक भाषा सिद्धांतों के अनुरूप भाषा शिक्षण में बदलाव और इसकी आवश्यकता को हमारी सरकार ने पहचाना तथा इसी दृष्टिकोण के अंतर्गत एन.सी.एफ.2005, आर.टी.ई-2009, एन.सी.एफ.टी.ई.-2010 के आधार पर राज्य पाठ्यक्रम की रूप-रेखा-2011 तैयार की गयी है और इसी के आधार पर भाषा आधार पत्र एवं उनके मापदंड निर्धारित किये गये हैं।

भाषा आधार पत्र में भाषा संबंधी नवीन दृष्टिकोण, पाठ्य-पुस्तकों की रूपरेखा, भाषा के मापदंड एवं मूल्यांकन, व्यावसायिक शिक्षणों तथा अन्य विषयों का समावेश किया गया है।

नवीन पाठ्यपुस्तक की रूपरेखा एवं मूल्यांकन के संबंध में अगर संक्षिप्त में कहा जाये तो यह पाठ्यपुस्तक एक खिलौने के रूप में, विद्या के तट तक पहुँचाने का कार्य कर रही है।

पाठशाला स्तर के अंतर्गत शैक्षिक पाठ्यक्रम और पाठ योजनाएँ

बालकों के भाषा सीखने की प्रक्रिया को प्रभावित करने वाली होती है। इसी कारण इसके निर्माण हेतु बहुत ध्यानपूर्वक जागरुक होकर सभी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए इस नवीन पुस्तक के पाठ्यक्रम निर्धारित किये गये हैं। यह पाठ्यक्रम भाषा शिक्षण बोध को प्रभावित तथा अध्यापकों व बालकों के कार्य-कलापों को दिशा निर्देश करने वाला है।

यह पाठ्यक्रम कक्षाओं के लिए निर्देशित दशाएँ, कौशल तथा गुणवत्ता के अनुरूप पाठों के निर्माण करने योग्य है।

रूचि उत्पन्न करने में तथा भाषा संबंधी कौशलों का विकास करने में सहायक सिद्ध होगा।

इस पाठ्यक्रम के द्वारा भाषा के अतिरिक्त विद्यार्थीगण संस्कृति सम्प्रदाय, आचार, व्यवहार आदि विषयों का आत्मसात कर पायेंगे और नैतिक मूल्यों, विश्व बंधुत्व आदि अंशों के आधार पर लिखे गये इतिवृत्तों के अभ्यासों के अनुकूल प्रक्रियाओं का मार्गदर्शन किया गया है।

इस पाठ्यक्रम के द्वारा ही पहली कक्षा से दसवीं कक्षा तक की पाठ्यपुस्तकों का निर्माण किया जाता है। कक्षा बोध के लिए बालकों में छुपी हुई भाषा कौशलों को उभारने में यह बहुत उपयुक्त माने जाएँगे।

पाठ्यपुस्तकों के निर्माण से संबंधित दार्शनिक पृष्ठभूमि एवं मूल भावनाओं को प्रदान करता है।

यह पुस्तक, पाठ्यपुस्तक रूपकर्ताओं और शिक्षक वर्ग के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगी।

इतना ही नहीं अपितु भाषा प्रेमियों को, अभिभावकों, विद्वानों का इस पुस्तक में भाषा के लक्ष्य और भाषा से संबंधित अंशों से संतुष्टता प्राप्त होगी।

हमारा मानना है कि इस पाठ्यक्रम के परिणाम सफलता पूर्वक अपने अंतिम लक्ष्य को प्राप्त कर शिक्षण उद्देश्य की सही मान्यताओं में पूर्ति करते हुए ज्ञान की परिभाषा को साकार करेंगे।

हम आशा करते हैं कि यह पाठ्यक्रम भविष्य में निर्मित किये जाने वाले पाठ्यक्रम और शैक्षिक मापदंड के लिए मार्गदर्शक सिद्ध होगा।

विषय-सूची

पाठ्यक्रम - शैक्षिक मापदंड

		पृष्ठ संख्या
I.	**पाठ्यक्रम परिवर्तन व विकास - आवश्यकता**	**1 - 3**
II.	**राज्य पाठ्यक्रम की रूपरेखा - 2011 संक्षिप्त सारांश**	**4 - 12**
III.	**भाषा-शैक्षिक योजना**	**13 - 26**
	अ) भाषा की प्रकृति : एक नया दृष्टिकोण,	
	आ) भाषा, समाज एवं अन्य मुद्दे,	
	इ) भाषा अधिगम - अपेक्षित दक्षताएँ,	
	***(i)* प्राथमिक स्तर - शिक्षण उद्देश्य (कक्षा *1* से कक्षा *6* तक)**	
	***(ii)* माध्यमिक स्तर - शिक्षण उद्देश्य (कक्षा *6* से कक्षा *10* तक)**	
IV.	**पाठ्यक्रम योजना - प्रथम चरण (कक्षा 1 और 2)**	**27 - 33**
	अ) अपेक्षित दक्षताएँ	
	आ) पाठ्यपुस्तकें	
	इ) पाठ्यांश विवरण	
	ई) अधिगम वातावरण - अभ्यसन प्रक्रियाएँ	
	उ) अध्यापक सन्नद्धता-दायित्व	
	ऊ) कक्षा-कक्ष वातावरण, भाषा शिक्षण की प्रक्रिया	
	ऋ) आकलन	
	ए) भाषा संसाधन व सहायक ग्रंथ, सामग्री	

V पाठ्यक्रम योजना - द्विवितीय चरण (कक्षा 3, 4 और 5) **34 - 44**

अ) अपेक्षित दक्षताएँ

आ) पाठ्यपुस्तकें

इ) पाठ्यांश विवरण

ई) अधिगम वातावरण - अभ्यसन प्रक्रियाएँ

उ) अध्यापक सन्नद्धता-दायित्व

ऊ) आकलन

ऋ) भाषा संसाधन - सहायक ग्रंथ, सामग्री

VI. पाठ्यक्रम योजना - तृतीय चरण (कक्षा 6, 7 और 8) **45 - 62**

अ) अपेक्षित दक्षताएँ - (i) प्रथम भाषा - अपेक्षित दक्षताएँ (ii) द्विवितीय भाषा - अपेक्षित दक्षताएँ

आ) पाठ्यपुस्तकें

इ) पाठ्यांश विवरण

ई) अधिगम वातावरण - अभ्यसन प्रक्रियाएँ

उ) अध्यापक सन्नद्धता-दायित्व

ऊ) आकलन

ऋ) भाषा संसाधन - सहायक ग्रंथ, सामग्री

VII. पाठ्यक्रम योजना - चतुर्थ चरण (कक्षा 9 और 10) **63 - 85**

अ) अपेक्षित दक्षताएँ

(i) प्रथम भाषा - अपेक्षित दक्षताएँ

(ii) द्विवितीय भाषा - अपेक्षित दक्षताएँ

आ) पाठ्यपुस्तकें

इ) पाठ्यांश विवरण

ई) अधिगम वातावरण - अभ्यसन प्रक्रियाएँ
उ) अध्यापक सन्नद्धता-दायित्व
ऊ) आकलन
ऋ) भाषा संसाधन - सहायक ग्रंथ, सामग्री

VIII. अनुबंध **86 - 112**

अ) बालक - भाषा
आ) बच्चे भाषा सीखते समय, लिखना सीख सकते हैं क्या?
इ) भाषा शिक्षण - विभिन्न दृष्टिकोण
ई) बच्चों को कौन सी पुस्तकें पढ़नी चाहिए? कौनसी कथाएँ पढ़नी चाहिए?)
उ) भाषा - अधिगम में कहानियों का क्या स्थान है?
ऊ) बालक - पुस्तकों की दुनियाँ
ऋ) भाषा अधिगम में विविध विधाएँ

IX. भाषा, भाषा शैक्षिक संबंधित सरकारी व स्वच्छंद संस्थाएँ, वेबसाईट, उपयुक्त ग्रंथ **113 - 115**

अ) भाषा विकास के लिए उपयोगी सरकारी संस्थाएँ
आ) स्वच्छंद संस्थाओं के नाम
इ) प्रचुरण संस्थाओं के नाम

X. उपसंहार एवं परिशिष्ट **116 - 120**

भाषा की शिक्षा में पठन का प्रमुख स्थान है कहकर स्वीकार करने पर भी पाठ्यक्रम केवल स्मृति कृत्यों से, समाचार संग्रहण के लिए सीमित होकर भरा हुआ है। पठनानंद के बिना नीरस पठन अरुचि का कारण हो रहा है। इसलिए सभी स्तरों पर व्यक्तिगत पठन के अवसर देने के द्वारा पठन संस्कृति को विकसित कर सकते हैं । अध्यापक को भी इस पठन संस्कृति का उदाहरण बनना चाहिए। पठन क्रिया के द्वारा बालक निरूत्साहित न हो जैसी सावधानियाँ लेनी चाहिए। अतिरिक्त पठन सामग्री की व्यवस्था करना, छात्रों तक पहुँचाना और उन्हें पठन के लिए प्रेरित कर सभी स्तरों पर पठन अभिरूचि का विकास कर सकते हैं।

- NCF 2005

I पाठ्यक्रम परिवर्तन व विकास - आवश्यकता

पाठ्यक्रम बालक के सर्वांगीण विकास का केंद्र है। यह एक दौड़ का मैदान भी है। शिक्षा त्रिमुखी प्रक्रिया होने के नाते छात्र, अध्यापक व समाज इन तीनों के बदलते विचारों के अनुरूप पाठ्यक्रम का होना आवश्यक है। प्राचीन व आधुनिक समाज के बीच बदलते विचारों को परखकर उनमें सामंजस्य स्थापित कर उत्तम नागरिकों के निर्माण के साथ-साथ देश का उज्जवल भविष्य बनाना पाठ्यक्रम परिवर्तन व विकास का मूल उद्देश्य रहा है।

भाषा की शिक्षा कंठस्थ परीक्षा प्रणालियों के कारण दिन ब दिन कुंठित होती जा रही है। यह राष्ट्र के भविष्य के लिए एक कलंक जैसा प्रतीत हो रहा है। भाषा के विकास में केवल भाषा विकास ही नहीं, अपितु कला, संस्कृति, सृजनात्मकता, भाव संचय, आदि कई चीज़ें जुड़ी हैं। अतः भाषा शिक्षण को केवल भाषा अधिगम के लिए ही न देखकर भाषा के द्वारा छात्र के समग्र विकास पर ध्यान देना चाहिए। जैसे बौद्धिक, नैतिक, मानसिक, सामाजिक, वैयक्तिक आदि के साथ-साथ बालक का सर्वांगीण विकास करना चाहिए।

मानव समाज में भाषा एक महत्वपूर्ण शक्तिशाली साधन है। इसके द्वारा हम धार्मिक सद्भावना, राष्ट्रीय एकता विश्वकल्याण, मानवकल्याण आदि से सुशोभित समाज का निर्माण कर सकते हैं। अतः भाषा शिक्षण को केवल सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना कौशलों तक सीमित न रखकर व्यापक दृष्टिकोण पर अग्रसर करना चाहिए।

आधुनिक समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति करने में भाषा का सर्वोपरी स्थान है। छात्रों को सोचने में, चिंतनशील, क्रियाशील और सृजनशील बनाने में भाषा के अलावा अन्य कोई साधन नहीं है। अतः नवीन पाठ्यक्रम में भाषा का पाठ्यक्रम बालक की रुचियों, स्तर व सर्वांगीण विकास के अनुरूप हो। इन बातों को कार्यान्वित करने कक्षा 1 से कक्षा 10 तक के नवीन पाठ्यक्रम का निर्माण राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, आंध्रप्रदेश हैदराबाद (SCERT, A.P., Hyderabad) की ओर से किया गया है। इसके अनुरूप नवीन पाठ्य पुस्तकों का निर्माण व विकास किया जाय।

पाठ्यक्रम परिवर्तन व विकास की आवश्यकता पर बल देते हुए एक अध्यापिका ने अपनी भावनाओं को इस तरह प्रकट किया है-

''आज विद्यार्थी के रूप में मेरे बच्चे भी उन्हीं पाठों का अध्ययन कर रहे हैं जो बीस साल पहले विद्यार्थी रूप में मैंने पढ़े थे। सारे संसार में अध्यापन और मूल्यांकन की नयी-नयी पद्धतियाँ आजमाई जा रही हैं, लेकिन हमारे विद्यार्थी श्यामपट पर लिखे अभ्यासों की नकल करते हैं, उन्हें याद कर लेते हैं और परीक्षा में उगल देते हैं। जो बदलाव होते हैं, वे और भी खराब हैं। बच्चों की पहुँच अब और अधिक सूचना माध्यमों तक हो चुकी है, इसलिए अधिक से अधिक विषय बच्चों के बस्ते में भरे जा रहे हैं।

कंप्यूटर, नैतिक शिक्षा आदि-आदि नए लोकप्रिय विषय हैं तो कौन बनेगा करोड़पति की सफलता की वजह से सामान्य ज्ञान विषय का अध्यापन भी शुरू किया गया है .... हमारे पाठ्यक्रम विशालकाय और शिक्षकों की अध्यापन क्षमता से परे होते जा रहे हैं, इसलिए शिक्षक जल्दी-जल्दी और नीरस भाव से उन्हें पढ़ाते रहते हैं। विद्यार्थी ध्यान नहीं लगा पाते या तो वे कक्षा के पाठ को समझ नहीं पाते या शून्य भाव में विचरते रहते हैं।

अलग-अलग विषयों में नए-नए पाठ शामिल होते रहते हैं जबकि पिछले पाठों की पढ़ाई ही सही ढंग से पूरी तक नहीं हो पाती। पाठ्यक्रम का बोझ इस तरह से या तो अभिभावकों या ट्यूशन कक्षाओं पर डाल दिया जाता है। बच्चों के कंधों पर शिक्षा का और ट्यूशन का बोझ बढ़ता जाता है, उनका बचपन पीछे छूटता जाता है। विद्यार्थियों का एक हिस्सा एक-दूसरे से अधिक अंक लाने की होड़ में और भी अधिक मेहनत से पढ़ता है। ज्यादातर बच्चे अभिभावकों द्वारा और अधिक पढ़ने के दबाव में आकर तनावग्रस्त हो जाते हैं। कई बच्चों को इसके लिए इलाज की भी ज़रूरत पड़ जाती है। केवल मुख्य विषयों में अच्छा करने वाले बच्चे सफल माने जाते हैं। खेल और कलाओं में अच्छा करने वाले बच्चों को कुछ खास नहीं समझा जाता है। खेल या किसी अन्य रुचि की दिशा में आगे बढ़ने से बच्चों को रोका जाता है क्योंकि अंकतालिका में वे कोई मायने नहीं रखते। पाठ्यचर्या और सफलता परीक्षा का यह दबाव होता है कि वे वास्तविक संसार के अनुभवों से अपना ध्यान हटाकर किताब में लगाएँ। यहाँ तक कि छटी कक्षा के बच्चों को भी स्कूल के अलावा अंकों की दौड़ में बने रहने के लिए चार घंटे अतिरिक्त पढ़ना पड़ता है।

अगर विद्यार्थी अपने विकास के दौर में अधिक समय यथार्थ विश्व के बदले किताबों की दुनिया में बिताते हैं तो उनके टूट जाने की बहुत संभावना रहती है। शिक्षा एक नकारात्मक दिशा में बढ़ जाती है। यह विद्यार्थीयों के दिमाग को दो टुकड़ों में बाँट देता है। ऐसी किताबी दुनिया जिसे वह याद करने में लगा रहता है और यथार्थ विश्व जिस पर ध्यान की कमी के कारण उसका कोई वश नहीं होता। अगर कक्षा चार के एक बच्चे का उदाहरण लें, वह जानता है कि पहाड़ों पर जानवरों को चरने से रोकने से मिट्टी के अपरदन को रोका जा सकता है लेकिन अपनी पेंसिल-कॉपी का ध्यान रखना उसे नहीं आता। आखिरकार वह एक पढ़े-लिखे बेवकूफ के रूप में बड़ा होता है जिसमें ज्ञान बोध तो होता है परंतु सामान्य बोध नहीं होता। अच्छे चरित्र और व्यक्तित्व तभी विकसित होते हैं जिसमें ज्ञान बोध तो होता है परंतु सामान्य बोध नहीं होता। अच्छे चरित्र और व्यक्तित्व तभी विकसित होते हैं जब बच्चों की वृद्धि पर ध्यान केंद्रित किया जाए। बजाए इसके, उन्हें काफी कुछ ऐसा

पढ़ाया जाता है जिसे वे अपने दैनंदिन अनुभवों और आस-पास के वातावरण से जोड़ नहीं पाते। वे बच्चे जिनका पढ़ाई में जी नहीं लगता और जो दिवास्वप्नों में खोए रहते हैं, उन पर कई तरह के दुष्प्रभावों के हावी होने का खतरा बढ़ जाता है। इस तरह की आवश्यकता वाले विद्‌यार्थियों के लिए कोई सहायता तंत्र नहीं है। आज के अभिभावक भी अपने बच्चों की ही तरह तनावग्रस्त रहते हैं। बोर्ड की परीक्षा की तैयारी करने वाले विद्‌यार्थियों में से 75 प्रतिशत तनावग्रस्त रहते हैं।

श्रीमती नीता मोहला ने संदेश में कई ठोस सुझाव दिए, जिनमें कुछ इस प्रकार हैं :

- क्या पढ़ाया जाना चाहिए और क्या सीखा जा सकता है? इन दोनों के बीच संतुलन बनाया जा सकता है? इन दोनों के बीच संतुलन बनाया जाना चाहिए। प्रकृति की संरचनाएँ वे वस्तुशिल्पीय चमत्कार हैं जिसमें हर हिस्सा दूसरे के साथ सामंजस्य में काम करता है। असली चुनौती पाठ्‌यचर्या को इस तरह तैयार करने की है जिसमें वे मुख्य तत्व हों जो असली जमीनी उपलब्धताओं और सीमाओं को समाहित करते हुए शिक्षा के व्यापक लक्ष्यों के लिए मार्ग प्रशस्त करें।
- बजाए ऐसी संरचना के जिसमें कुछ ही लोगों के लिए सफलता की राह बने हमें ऐसी संरचना ग्रहण करनी चाहिए जिसमें अधिगम में सबकी सहभागिता को बढ़ावा मिले। इसका आधार मज़बूत और टिकाऊ हो जो जीवन भर काम आए। इसके आधारों को विस्तृत बनाए जाने और उन्हें पुनर्परिभाषित किए जाने की ज़रूरत है। गणित, विज्ञान, इतिहास आदि के पुराने शैक्षिक ढाँचे सहित व्यक्तित्व, शारीरिक क्षमता, रचनात्मक और विवेचनात्मक चिंतन के लिए भी जगह बनाने की जरूरत है।
- विषय वस्तु का संबंध विभिन्न स्तरों पर जीवन और रोज़गार की चुनौतियों से हो। विद्‌यार्थियों और शिक्षकों को उन पर एकाग्र करने के लिए पर्याप्त समय दिया जाना चाहिए। शुद्‌ध ज्ञान प्राप्ति का उद्‌देश्य होना चाहिए। बच्चों द्‌वारा अपनी अभिरुचियों की स्वयं खोज। इसमें वैकल्पिक अध्यापन पद्‌धति, जैसे - परियोजना पद्‌धति और वैकल्पिक मूल्यांकन पद्‌धति, जैसे खुली पुस्तक परीक्षा, की मदद ली जा सकती है। हमें केवल हर विषय का बीज बोना है। इसके लिए समूचे पेड़ को ठोक-पीट कर घुसेड़ने की दरकार नहीं है। शिक्षा से बच्चों को इसकी प्रेरणा मिले कि वे जीवनपर्यंत शिक्षार्थी बने रहें।
- हमें शिक्षा को मानवीय बनाकर और मानवीय अभिरुचियों की विविधता का अनुकरण करते हुए प्रासंगिक बनाना चाहिए। विद्‌यार्थियों की प्रतिभा के वैविध्य को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इसके लिए वैकल्पिक मूल्यांकन अपनाने की ज़रूरत है। खेलकूद, कलाओं और शिल्पों में अच्छा करने वालों को भी पढ़ाकू विद्‌यार्थियों की तरह पहचाना जाए। उपलब्धियों की सूची को विस्तृत करने से निश्चय ही अभिभावक और विद्‌यार्थी तनावमुक्त होंगे। यदि ग्रेडिंग पद्‌धति की दिशा में बदलाव लाया जाए तो समाज का ध्यान डार्विन के सिद्‌धांत के सामाजिक निहितार्थ से दूर जा सकेगा।

हम उम्मीद करते हैं कि देश भर में पाठ्‌यचर्या, पाठ्‌यक्रम और पाठ्‌यपुस्तक बनाने वाले इस माँ के शब्दों पर पर्याप्त एवं तुरंत ध्यान देंगे।

- नीता मोहला का पत्र पृष्ठ संख्या 139, (NCF-2005)

II राज्य पाठ्यक्रम की रूपरेखा - 2011 संक्षिप्त सारांश

पहले शिक्षा सभी को नहीं मिलती थी। किंतु आज यह एक मौलिक अधिकार है। शिक्षा का अधिकार अधिनियम-2009 के अनुसार प्रारंभिक शिक्षा हर योग्य स्कूली बच्चे का निःशुल्क और अनिवार्य अधिकार है। हमारे देश में विभिन्न संस्कृतियों एवं भाषाई विविधता होने के कारण सभी को शिक्षा उपलब्ध करायी जाये, इसका स्पष्ट उल्लेख भारतीय संविधान में किया गया है। गत छह दशाब्दियों से भारत में सभी को शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए कई योजनाओं और कार्यक्रमों को लागू किया गया और किया जा रहा है। किंतु आज भी कई सवाल उठ खड़े हो रहे हैं। बाल मज़दूरी, पाठशाला के बाहर बच्चों का रहना, दायित्व की कमी, यांत्रिक शिक्षण अधिगम प्रक्रियाएँ, मापदंडों के नाम पर अधिक जानकारी से भरी हुई भारी पाठ्यपुस्तकें, तनाव, असमंजसता, अंक और रैंक तक सीमित होती हुई मूल्यांकन पद्धतियाँ, मूल्यों का पतन, दिन-ब-दिन बढ़ते व्यापारिक दृष्टिकोण से क्रमशः संपन्न लोगों की एक तरह की महंगी पढ़ाई, निर्धन का एक और तरह की पढ़ाई प्राप्त करने का शैक्षिक वातावरण, मौलिक सुविधाओं की कमी आदि सवालों को हम देख सकते हैं।

अपने राज्य में भी परिस्थिति इससे कुछ अलग नहीं है। इसके साथ सरकारी पाठशालाओं में छात्रों की संख्या का घटते जाना, जानकारी को याद रखना ही ज्ञान समझना, जनजाति, अल्पसंख्यक वर्ग, बालिकाएँ आदि वर्ग दूसरे वर्ग के बराबर शिक्षा प्राप्त न कर सकना अतिरिक्त समस्याएँ भी हैं।

ऐसी परिस्थितियों को सुलझाने के लिए भारत सरकार ने राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा-2005 का निर्माण ''भार रहित शिक्षा'' नामक प्रतिवेदन के आधार पर तैयार किया। बच्चों की पढ़ाई रटने की विधि तक सीमित न होकर अर्थपूर्ण बदलना, सीखे हुए ज्ञान का दैनिक जीवन में उपयोग करना, सीखना पाठ्यपुस्तकों तक सीमित न हो, असमंजसता, प्रतियोगिता के अधिगम के लिए परीक्षा पद्धति में संशोधन लाने के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या सूचित करती है।

इन अंशों के साथ सभी बच्चों के लिए प्रामाणिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए क़ानूनी अधिकार बनाते हुए मुफ्त शिक्षा का अधिकार अधिनियम-2009 लागू हुआ। पाठशाला शिक्षा में महत्वपूर्ण व्यक्ति अध्यापक है। अध्यापक की क्षमता पर ही प्रामाणिक शिक्षा आधारित है। अध्यापक शिक्षा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा अध्यापक शिक्षण-2010 को राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद ने तैयार किया है।

भार रहित शिक्षा प्रतिपादन, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा-2005, शिक्षा का अधिकार अधिनियम, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, अध्यापक शिक्षण-2010 के प्रस्ताव और मार्गदर्शक सूत्रों को ध्यान में रखते हुए अपने राज्य में पाठशाला शिक्षा में संशोधन लाना ही अति आवश्यक माना गया है। इसके लिए अपने राज्य में भी राज्य पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2011 को तैयार करने के लिए राष्ट्रीय स्तर के विषय विशेषज्ञ, आचार्य, अध्यापकों, स्वैच्छिक संस्थाओं के सदस्यों, विश्वविद्यालय के आचार्यों आदि से सलाहकार समिति, परिचालन समिति का राज्य सरकार ने गठन किया है। उसी तरह विभिन्न विषयों में समकालीन परिस्थिति का विश्लेषण करते हुए प्रस्तावों के साथ आधार पत्रों के निर्माण के लिए एक-एक अंश के लिए फोकस ग्रूप की नियुक्ति की।

विषय विशेष पर आधार पत्र

1.1 भाषा एवं भाषा सिखाने पर आधारित आधार पत्र

1.2 अंग्रेजी भाषा शिक्षण - आधार पत्र

1.3 विज्ञान शिक्षण - आधार पत्र

1.4 गणित शिक्षण - आधार पत्र

1.5 सामाजिक शास्त्र शिक्षण - आधार पत्र

1.6 पर्यावरण शिक्षण - आधार पत्र

1.7 कला शिक्षण - आधार पत्र

व्यवस्थागत बदलाव पर आधार पत्र

2.1 शिक्षा के उद्देश्य - आधार पत्र

2.2 शिक्षा के व्यवस्थागत बदलाव पर आधार पत्र

2.3 अध्यापक शिक्षण एवं अध्यापन वृद्धि - आधार पत्र

2.4 शिक्षा अधिगम का मूल्यांकन - आधार पत्र

2.5 तकनीकी शिक्षा - आधार पत्र

2.6 पाठ्यपुस्तक एवं पाठ्यक्रम - आधार पत्र

राज्य संबंधित मुख्य अंश - आधार पत्र

3.1 विभिन्न वर्गों की शिक्षा (SC-ST-Minority-Girls सम्मिलित शिक्षा) - आधार पत्र

3.2 स्वास्थ्य और व्यायाम शिक्षा - आधार पत्र

3.3 प्रारंभिक बाल शिक्षा - आधार पत्र

3.4 कार्य तथा शिक्षा - आधार पत्र

3.5 नैतिक मूल्य - मानव अधिकार - आधार पत्र

राज्य पाठ्यक्रम रूपरेखा-2011 तथा 18 आधार पत्रों के निर्माण के लिए निम्न रपटों की मूल बातें ली गयी हैं।

- भारतीय संविधान की प्रस्तावना 73 व 74 वाँ संविधान संशोधन
- राष्ट्रीय पाठ्यक्रम रूपरेखा - 2005
- भारत सरकार का निवेदन - भार रहित शिक्षा
- शिक्षा का अधिकार अधिनियम - 2009
- शिक्षक शिक्षण एवं राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली अधिकार - 2010
- राष्ट्रीय विज्ञान कमीशन का सुझाव

यह बात अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है कि पाठ्यपुस्तक लेखक और शिक्षक इस तथ्य को स्वीकार करें कि निष्क्रिय व हेय समझी जानी वाली भूमिकाएँ, जिनसे स्त्रियों को स्वभावतः जोड़कर देखा जाता रहा है, सामाजिक-सांस्कृतिक रूप से निर्मित हैं और इन्हें जितनी जल्दी हो सके नष्ट करने की जरूरत है।

उपर्युक्त दिये गये निवेदनों के आधार पर राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली-2011 में इन सूत्रों का प्रतिपादन किया है। इनके आधार पर ही विविध विषयों, सहपाठ्यांश, संबंधित आधार पत्र, पाठ्यक्रम एवं शैक्षणिक स्तरों का निर्माण किया है। इस प्रकार पाठ्यपुस्तकों का आधुनिकीकरण, मूल्यांकन एवं परीक्षा प्रणाली में बदलाव किया गया है। इस क्रम में आंध्र प्रदेश राज्य पाठ्यक्रम रूपरेखा-2011 का दृष्टिकोण इसके मूल सूत्रों की जाँच करेंगे।

राज्य के दृष्टिकोण

- शिक्षा का मूल उद्देश्य यह है कि बालक को दायित्वपूर्ण व समझदार नागरिक बनायें।
- शिक्षा प्रणाली की रूपरेखा में बालक की आवश्यकता और इच्छा/रुचि ही केंद्रबिंदु हो।
- बच्चों को इस प्रकार तैयार किया जाय कि वे अपनी संस्कृति, संप्रदाय, पारंपरिक्ता की प्रशंसा कर सकें और सामाजिक अभिवृद्धि में सहायक हों।
- बच्चे संज्ञानात्मक प्रणाली द्वारा सीखते हैं। शिक्षा प्राप्त करने की प्रणाली बालक के मानसिक स्तर पर आधारित हो।
- सीखने की प्रणाली में परिणाम प्राप्त से अधिक उसे प्राप्त करने वाली प्रक्रिया पर अधिक ध्यान दिया जाये। इस प्रक्रिया से बालक विषय को न रटकर बल्कि विषयगत ज्ञान प्राप्त करते हैं तथा विषय विश्लेष’ करने में सामर्थ्य प्राप्त करने में सक्षम बनें।
- ज्ञान का भंडार विशाल है। इसे विषय के आधार पर विभाजित करना कृत्रिम तरीका है। ज्ञान संज्ञानात्मक क्षमताओं से युक्त होता है। एक ही अंश को समझाने के लिए अलग-अलग विषयों में अलग-अलग तरीके अपनाये जाते हैं।
- शिक्षा प्रणाली एक गतिशील प्रक्रिया है। यह केवल पाठ्यपुस्तकों तक ही सीमित नहीं है। पर्यावरण या बाहरी दुनिया के साथ मिलकर छात्र अध्यापकों के सृजनात्मक अभिवृद्धि में सहायक होते हैं।
- शिक्षा प्रणाली के साथ शिक्षा प्रशासन, पाठशाला से संबंधित सभी क्रियाकलापों का विकेंद्रीकरण करना है।

ए.पी.एस.सी.एफ.-2011 के मौलिक सूत्र

- छात्र अपने सहज दक्षताओं के आधार पर सीखने में अधिक रुचि रख सकते हैं।

- छात्रों की भाषा और समाज में विभिन्न प्रकार के ज्ञान का आदर करना, उन्हें अभ्यसन कार्यों में उपयोग में लाना।
- अर्जित ज्ञान को बाहरी दुनिया से जोड़ना।
- रटंत पद्धति की समाप्ति। इसके बदले में परस्पर वार्तालाप, चर्चा, परियोजना कार्य, अनुसंधान, शोध, विश्लेषण आदि पद्धतियों के द्वारा बच्चे अर्थ सहित सीखते हैं।
- सीखे हुए ज्ञान को पाठ्यपुस्तकों तक ही सीमित न रखते हुए छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा प्रणाली में अनुरूप अवसर प्रदान करना। इसके अनुरूप पाठ्यपुस्तकों में बदलाव करना।
- सतत् समग्र मूल्यांकन के द्वारा परीक्षाओं को सरलीकृत करना। शिक्षण अभ्यसन प्रक्रिया में उसे एक भाग बनाना।
- छात्र के सीखने के स्तर का मूल्यांकन करने के स्थान पर ऐसा मूल्यांकन करें जो छात्रों को सिखाने में रुचि उत्पन्न करें।
- पाठ्यक्रम में विभिन्न अंशों को सम्मिलित करते हुए अर्थयुक्त सीखने के अनुरूप सामाजिक निर्माणात्मक, तुलनात्मक/तार्किक शिक्षण पद्धतियों के आधार पर शिक्षण अभ्यसन प्रक्रियाओं का आयोजन करना।
- छात्रों की संस्कृति, अनुभव, स्थानीय मुद्दों को कक्षा कक्ष में प्रधानता देना।

राज्य के दृष्टिकोण और मौलिक सूत्रों के आधार पर राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली रूपरेखा-2011 का निर्माण किया। निम्न अंशों में बदलाव का प्रतिपादन किया गया-

पाठ्यपुस्तक

अब तक बनायी गयी पाठ्यपुस्तकों का बदलाव दस वर्षों में एक बार हुआ। मौलिक बदलाव केवल नाम मात्र ही था। उसी प्रकर विभिन्न विषयों की पाठ्यपुस्तकों के शिक्षण के लिए कोई आधार पत्र नहीं थे। इस कारण बदलाव केवल पाठ्यपुस्तकों के पाठ्यांशों में ही हुआ न कि विषयों के चयन में अभ्यासों की विधा को स्थान नहीं दिया गया। इसी तरह पाठशाला में दिये गये विषयों, अपेक्षित लक्ष्यों व विषयों की विशेषताओं, छात्रों के स्वभाव आदि को पाठ्यपुस्तक को प्रामाणिकता के नाम पर अधिक जानकारी से भरकर वज़नदार बना दिया गया। गणित, विज्ञान शास्त्र जैसे विषयों में ऊपर

की कक्षाओं के अंश निचली कक्षाओं में जुड़ गये। ये मानसिक रूप से बच्चों के लिए भार बन गये। राज्य में हुए एपेप (APEP) और डिपेप (DPEP) जैसे कार्यक्रम के कारण प्राथमिक स्तर की पाठ्यपुस्तकों में कुछ हद तक बदलाव आने पर भी यह एन.सी.एफ.-2005, आर.टी.ई.-2009, ए.पी.एस.सी.एफ.-2011 के अनुसार और समग्र रूप में बदलने की आवश्यकता है। ए.पी.एस.सी.एफ.-2011 इन समस्याओं को पार करते हुए सार्थक पाठ्यपुस्तकों के निर्माण के लिए निम्नलिखित प्रस्ताव सुझाये गये हैं।

- भाषा, गणित, विज्ञान सामाजिक अध्ययन आदि विषयों में पुस्तकें तैयार करने के लिए विषयानुसार आधार पत्र होने चाहिए।
- पाठ्यपुस्तक बच्चों को सोचने व स्वयं में निहित दक्षताओं के द्वारा सीखने में सहायक हो।
- पाठ्यपुस्तकों में जानकारी अधिक मात्रा में न हो, बल्कि बच्चे ही जानकारी इकट्ठा कर सकें और उस जानकारी का विश्लेषण कर निर्णय ले सकें।
- बच्चों के ज्ञानार्जन के लिए पाठ्यपुस्तक सहायक होने चाहिए। उस ज्ञान को अपने दैनिक जीवन में प्रयोग करने में काम आना चाहिए।
- बच्चे केवल पाठ्यपुस्तकों तक ही सीमित न रहे बल्कि अतिरिक्त शिक्षण के लिए संदर्भ ग्रंथों, पत्र-पत्रिकाओं, पठनसामग्री, समाज के सदस्यों से परस्पर प्रतिक्रिया द्वारा भी शिक्षा ग्रहण कर सकें।
- पाठ्यपुस्तकों की भाषा सरल होनी चाहिए। सीखने में भाषा प्रतिबंध या अवरोध न बनें। बहुभाषिकता को भी स्थान मिलना चाहिए।
- पाठ्यपुस्तकों में लिंग भेदभाव के लिए कोई स्थान नहीं होना चाहिए। पाठ्यपुस्तक बच्चों को आत्मविश्वास बढ़ाने, सोचने, मानवाधिकार के प्रति चेतना उत्पन्न करने में सहायक हो। उसके लिए प्रतिक्रिया, आलोचनात्मक विचार, बहुआयामी विचार, सृजनात्मक विचार, संप्रेषण कुशलताएँ जैसी कुशलताओं का विकास करना चाहिए।
- स्थानीय कलाएँ, संस्कृति, उत्पादन क्रियाकलाप, स्थानीय अंश आदि पाठ्यांश में होना चाहिए।
- विभिन्न अंशों के लिए निर्धारित शैक्षिक प्रमाण, संभावित शिक्षा अधिगम परिणाम को प्राप्त करने के अनुकूल अभ्यास होने चाहिए।
- क्रियाकलाप, परियोजना कार्य, अन्वेषण, प्रयोग, बहुआयामी प्रश्न, खेल, पहेली आदि के रूप में चिंतनोत्तेजक अभ्यास होने चाहिए।
- बच्चों के लिए व्यक्तिगत रूप से, समूह में और संपूर्ण कक्षा में सीखने के अनुकूल अभ्यास होने चाहिए।

- पाठ्य सहगामी विषय, मानवमूल्य, नैतिकता, कलाएँ, स्वास्थ्य कार्य आदि जैसे अंशों को सीखने के अनुकूल पाठ्यपुस्तकों में पाठ्यांश और अभ्यास होने चाहिए।
- पाठ्यपुस्तकें निचली कक्षाओं के निर्धारित कौशलों के पुनःश्चरण के अवसर प्रदान करते हुए कक्षा के कौशलों को प्राप्त करने और अगली कक्षाओं के अंशों से समन्वय करने लायक होने चाहिए।
- पाठ्यपुस्तक आकर्षक, सुंदर, अच्छी गुणवत्ता वाले कागज़, मुद्रण, चित्रों से युक्त होनी चाहिए।

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया

- रटना, दोहराना, पुस्तकों व गाइडों से सहायता लेना, प्रश्न कुंजियों से विषय लेकर लिखना या यांत्रिक रूप से पढ़ना जैसे कृत्रिमता के बदले शिक्षण अधिगम प्रक्रिया बच्चों में अर्थपूर्ण ढंग से सीखने में सहायक होने चाहिए। उसके लिए ए.पी.एस.सी.एफ-2011 निम्न प्रस्ताव रखता है -
  - परस्पर प्रतिक्रिया, स्व-अभिव्यक्ति, प्रश्न करना जैसे अंशों को शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में अधिक महत्व देना चाहिए।
  - प्रयोग, अन्वेषण, क्रियाकलाप, परियोजना कार्य और खेल आदि में छात्र भाग लें। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के अंतर्गत होने चाहिए।
  - शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का अर्थ केवल विवरण दे या पढ़कर सुनाये ऐसा नहीं है। अध्यापक यह सुनिश्चित करें कि बच्चे सीखने के लिए प्रेरित व सम्मिलित हो। साथ ही साथ आवश्यक सामग्री का उपयोग करें। उसके लिए सामग्री उपलब्ध करवायें तथा शैक्षिक संदर्भ उपलब्ध करवायें जाय।
  - बच्चे व्यक्तिगत रूप से सहपाठियों से अध्यापकों दूवारा, सहायक सामग्रियों द्वारा तथा सीखने के अनुकूल शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं का निर्वाह होना चाहिए। बच्चों के शैक्षिक समय का पूर्ण रूप से सदुपयोग होना चाहिए। बच्चों को अपनी घरेलू भाषा सीखने के अनुकूल व्यवस्था व वातावरण रहना चाहिए। अध्यापक भी बच्चों की स्थानीय भाषा का प्रयोग करें।
  - शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं का संचालन बच्चों के अनुभव व पूर्व ज्ञान से आरंभ होना चाहिए।
  - स्थानीय कलाएँ, उत्पादन सामग्री, श्रमजीवी अनुभवों को शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं में संसाधन के रूप में उपयोग किया जाना चाहिए।

मूल्यांकन और परीक्षाएँ

- बच्चों के आकलन के लिए हम अब तक केवल परीक्षाओं पर निर्भर हैं। परीक्षाएँ भी बच्चों को आकलन करने के बदले बच्चों को दोषी बताने, हीनभाव उत्पन्न करने दबाव, असमंजसता बढ़ा रही हैं। एक तरह से परीक्षाएँ ही शिक्षा व्यवस्था को शासित कर रही हैं। इस संदर्भ में ए.पी.एस.सी.एफ-2011 इस तरह से प्रस्तावित किया है-
    - ♦ मूल्यांकन व परीक्षाएँ बच्चों के केवल आकलन तक सीमित न होकर बच्चों के सीखने में सहायक होनी चाहिए (अर्थात् सीखने के लिए मूल्यांकन)
    - ♦ शिक्षा का अधिकार अधिनियम-2009 के अनुसार मूल्यांकन को सतत् समग्र मूल्यांकन (सी.सी.ई) द्वारा किया जाना चाहिए।
    - ♦ बच्चों के आकलन के लिए केवल परीक्षाओं तक सीमित न रहकर परियोजना कार्य, प्रदत्त कार्य, पोर्ट फोलियों (छात्र अभिलेख), संगोष्ठी, प्रदर्शन, अनेक्डाट (शिक्षक अभिलेख), पर्यवेक्षण आदि के भी प्रयोग करें। इन अंशों को वार्षिक परीक्षाओं में समुचित भार निर्धारित करें।
    - ♦ इसके लिए मूल्यांकन को शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में समावेशित किया जाये।
    - ♦ प्रश्नों के स्वभाव बदलना, रटंत स्वभाव को प्रेरित करने वाले प्रश्नों, पाठ्यपुस्तकों में निहित सूचनाओं तक सीमित प्रश्नों के आधार पर बच्चे स्वयं सोचकर लिखने के लिए, अपने अनुभवों को व्यक्त करने के लिए विविध प्रकार के समाधान देने वाले प्रश्न, दैनिक जीवन से जोड़ने के अनुकूल सोचने वाले प्रश्न होने चाहिए। बच्चे अर्जित ज्ञान को किस हद तक उपयोग कर सकते हैं, इसका आकलन करने के लिए मूल्यांकन होना चाहिए।
    - ♦ बच्चे स्वयं स्वमूल्यांकन कर सकें। माता-पिता अपने बच्चों के विकास का परीक्षण कर सकें। इसके लिए खुले मूल्यांकन पद्धति/पारदर्शित मूल्यांकन पद्धति हो।
    - ♦ बोर्ड की परीक्षाओं में भी पाठशाला में संचालित सतत् समग्र मूल्यांकन के अंशों को भी समुचित भार प्रदान करें।
    - ♦ बोर्ड की परीक्षाओं की उत्तर पुस्तिकाएँ माँगने पर माता-पिता को देना, पुनर्मूल्यांकन करना।
    - ♦ सहगामी अंशों, रुझान, मूल्य, कार्य, स्वास्थ्य खेल आदि का भी मूल्यांकन करना।

व्यवस्थागत संशोधन

- ए.पी.एस.सी.एफ-2011 लागू करने के लिए उपर्युक्त अंशों में बदलाव के साथ नीचे दिये गये व्यवस्थागत संशोधनों को प्रतिपादित किया गया।
  - प्रशासन और पाठशाला संचालन विकेंद्रीकरण के लिए पंचायतीराज संस्थाओं को भागीदार बनाना।
  - पाठशाला परिसर में प्रधान अध्यापक के अधीन कार्य करने, ई.सी.ई केंद्रों की स्थापना करना, बच्चों के संरक्षण और स्वास्थ्य संबंधी जिम्मेदारियों को आई.सी.डी.एस विभाग, शिक्षा संबंधी दायित्वों को शिक्षा विभाग स्वीकार करें।
  - शिक्षा का अधिकार अधिनियम के निर्देशानुसार सभी पाठशालाओं में मौलिक सुवधिाएँ व अध्यापकों की नियुक्ति करना।
  - उसी तरह बच्चों के माता-पिता से पाठशाला प्रबंधन समिति का गठन कर पाठशाला संचालन में उन्हें भागीदारी देना।
  - योजना, संचालन, निरीक्षण, पैसों का उपयोग आदि सभी अंशों में विकेंद्रीकरण की पद्धति को अमल करना।
  - शिक्षा के साथ, अध्यापक सहायता व सहकारिता को प्रबल बनाना।

आवश्यक कौशलों, मूल्यों रुझानों को बढ़ाने के लिए ए.पी.एस.सी.एफ-2011 दिशा-निर्देश देता है। इसके लिए किये गये आधार पत्रों द्वारा विभिन्न विषयों और अंशों में प्रस्ताव दिये गये हैं। इनको लागू करने के लिए संस्थागत संशोधन करना, इसके लिए सभी वर्ग के लोग शिक्षाविद्, अध्यापक समितियाँ, अध्यापक स्वैच्छिक संस्थाएँ आदि से सदा सूचनाएँ स्वीकार कर आवश्यक संशोधन करते हैं। इसके द्वारा राज्य शिक्षा क्षेत्र में विकसित होकर अग्र स्थान प्राप्त करें ऐसा प्रयास करेंगे।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूप रेखा - 2005 मौलिक सूत्र

- अर्जित ज्ञान को छात्रों के बाहरी जीवन से जोड़कर अनुसंधान करवायें।
- कंठस्थ प्रणालियों को अधिगम से दूर रखें।
- पाठ्य पुस्तक को साध्य न बनाकर एक साधन के रूप में छात्रों का सर्वांगीण विकास करने में सहायक बनें।
- परीक्षा प्रणालियों में सुधार कर बोझ रहित करें।
- लोकतंत्र राज्य के अनुरूप छात्रों में संवैधानिक मूल्यों का विकास करें।

❖ ❖ ❖

III भाषा - शैक्षिक योजना

अ) भाषा की प्रकृति : एक नया दृष्टिकोण

आ) भाषा, समाज एवं अन्य मुद्दे

इ) भाषा अधिगम - अपेक्षित दक्षताएँ

(i) **प्राथमिक स्तर - शिक्षण उद्देश्य (कक्षा 1 से कक्षा 6 तक)**

(ii) **माध्यमिक स्तर - शिक्षण उद्देश्य (कक्षा 6 से कक्षा 10**

> दूविभाषिकता और पराभाषिक चेतना को बढ़ावा देना हमारा प्रयास होना चाहिए। साथ ही विद्यार्थियों में विनम्रता व नम्यता की क्षमता विकसित करना ज़रूरी है ताकि वे सभी प्रकार की स्थितियों में सहिष्णुता व आत्मसम्मान के साथ संबंध स्थापित करने की क्षमता प्राप्त कर सकें।

III अ) भाषा की प्रकृति : एक नया दृष्टिकोण

परिचय

यह आधार पत्र राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के दो आधार पत्रों- ''भारतीय भाषाओं का शिक्षण'' तथा ''अंग्रेजी शिक्षण'' को आधार बनाकर तैयार किया गया है। भाषा का नया दृष्टिकोण, जिसकी वकालत इस आधार पत्र में की गयी है वह भाषा अधिगम की प्रक्रिया की व्याख्या करने वाले पारम्परिक ''उद्दीपन-प्रतिक्रिया'' और अनुकरण मॉडल से पर्याप्त रूप से भिन्न है।

सामान्यतः आम लोग भाषा को केवल संप्रेषण माध्यम समझते हैं। भाषा वैज्ञानिकों के विचार में भाषा शब्दों और वाक्य संरचना के नियम में बंधकर शब्दों तथा वाक्यों के स्तर पर नियमबद्ध है। लेकिन इतना कहने मात्र से पूरी तस्वीर उभरकर नहीं आती है। भाषा को व्यापक रूपरेखा में विश्लेषित करना चाहिए, ताकि यह अध्यापकों, अध्यापक प्रशिक्षकों, पाठ्यपुस्तक लेखकों, पाठ्यचर्या निर्माताओं तथा शैक्षिक नीति-निर्माताओं के लिए लाभदायक हो। भाषा को उसके संरचनागत, साहित्यिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक एवं सौंदर्य शास्त्रीय आदि बहुआयामी पक्षों के मद्देनज़र देखना होगा।

भाषा क्या है?

भाषा के बिना समाज या व्यक्ति की कल्पना करना हमारे लिए कठिन है। वास्तव में भाषा हमारी पहचान बनती है और समाज तथा प्रकृति के साथ संबंध जोड़ने में हमारी सहायता करती है। हमारे दिमाग में समाज तथा प्रकृति दोनों का प्रतिनिधित्व करने के लिए भाषा एक मध्यस्थ की भूमिका निभाती है।

भाषा, इंसानों की अनोखी विशेषता है। भाषा हमारे विचारों का वाहन है। इसका उपयोग हम कई उद्देश्यों के लिए करते हैं, जैसे - सोचने, समस्या सुलझाने, नाटक करने, स्वप्न देखने, व्याख्या करने, भावों का संप्रेषण और सूचनाओं के आदान-प्रदान के लिए। हम केवल दूसरों से बात करने के लिए ही नहीं, बल्कि अपने आपसे बात करने के लिए भी भाषा का इस्तेमाल करते हैं। हमें यह समझना चाहिए कि हमारे सामाजिक व्यवहार और सत्ता संबंधों से भाषा घनिष्ठ रूप से जुड़ी है।

अभिभावकों, अध्यापकों, अध्यापक प्रशिक्षकों और शैक्षिक नीति-निर्माताओं को यह समझना अत्यंत महत्वपूर्ण है कि चार वर्ष का बालक भाषाई दृष्टि से वयस्क हो जाता है। कोई भी अभिभावक या रिश्तेदार अपने बच्चों को भाषा सचेत रूप से नहीं सिखाते हैं। बच्चे ध्वनियों, शब्दों, वाक्यों तथा अर्थों के स्तर पर भाषा के संचालित नियमों की बहुत जटिल तथा समृद्‌ध व्यवस्था का अर्जन कर लेते हैं। हिंदी बोलने वाला बच्चा यह जानता है कि कब 'तू' का, कब 'तुम' का और कब 'आप' का प्रयोग करना है।

भाषा सीखने की क्षमता

ऊपर बतायी गयी बातों से यह स्पष्ट होता है कि बच्चा भाषा सीखने की जन्मजात भाषाई क्षमता के साथ जन्म लेता है। हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि बच्चा न केवल एक भाषा सीखता है, बल्कि आस-पास की अन्य भाषाएँ भी सीख लेता है। इसलिए अगर हम बच्चे की जन्मजात भाषाई क्षमता के साथ भाषा का समृद्‌ध माहौल मिला दें तथा उसे प्यार दें उसका ख्याल रखें तो वह भाषा स्वतः ही सीख जाता है। बच्चे में भाषा क्षमता जन्मजात होती है, एक महत्त्वपूर्ण शिक्षाशास्त्रीय परिणाम है। यदि बच्चे को पर्याप्त अवसर दिये जायें तो वह नयी भाषा सरलता से सीख लेता है। पर्याप्त अवसर, समृद्‌ध प्रबंधन तथा देख-रेख के प्रभाव से सीखी हुई भाषा में बच्चा अपने विचार व्यक्त करता है। इसलिए हमारा ध्यान व्याकरण के नियमों पर न होकर अर्थ निर्माण की प्रक्रिया पर होना चाहिए।

बच्चे भाषा कैसे सीखते हैं?

मातृभाषा हिंदी बोलने वाला साधारण बच्चा कहता है - 'माँ, खाना दो। खाना खाकर खेलूँगा।' यहाँ ध्यान देने वाली बात यह है कि बच्चा चाहता तो... 'देता हूँ', 'देती हूँ', 'दूँगी', 'देगी' आदि शब्द कह सकता था, लेकिन वह 'माँ' से माँगता है इसलिए वह देने के लिए 'दो' क्रिया रूप का ही प्रयोग करता है। इसी प्रकार बच्चा 'खेलूँगा' कहता है न कि 'खेलेगा', 'खेलोगे' आदि।

ऊपर का उदाहरण हमें बताता है कि बच्चे ने हिंदी की वाक्य संरचना के जटिल नियमों को समझने की एक व्यवस्था अपने दिमाग़ में तैयार कर ली है जो कि उसे किसी ने नहीं सिखायी है। हर भाषा के अध्यापक को यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि सभी बच्चे भाषा के ज्ञान निर्माण की क्षमता के साथ जन्म लेते हैं। यदि आप ऊपर लिखे वाक्य को सूक्ष्मता के साथ देखें तो आपको पता चलेगा कि भाषा कितनी जटिल है। यह जटिल और नियमबद्‌ध व्यवस्था है। ऊपर लिखा वाक्य शब्दक्रम, कर्ता-कर्म के संबंध, सकर्मक, अकर्मक क्रिया आदि की जटिलता को व्यक्त करता है। कोई भी व्यक्ति बच्चों को शब्द-दर-शब्द या वाक्य-दर-वाक्य में भाषा नहीं सिखाता, लेकिन बच्चे संदर्भपूर्ण परिस्थितियों में भाग लेते हुए इसका

अनौपचारिक रूप से ज्ञान प्राप्त करते हैं। हमें भाषा सीखने में बच्चों से त्वरित उपलब्धि की अपेक्षा नहीं रखनी चाहिए। बच्चे तभी बोलते हैं, जब वे शारीरिक तथा संज्ञानात्मक रूप से तैयार होते हैं और कुछ कहने के लिए उपयुक्त संदर्भ हो। निरर्थक अभ्यास बच्चों को रटंत भाषा के पुनरुत्पादन पर बल देता है जो कि बिल्कुल व्यर्थ प्रयास है। अतः हम कह सकते हैं-

- हर इंसानी बच्चा आनुवांशिक रूप से सार्वभौमिक व्याकरण (चौम्स्की) नामक भाषाई क्षमता/व्यवस्था के साथ जन्म लेता है तथा भाषा सीखने में हम इस अन्तर्निहित व्यवस्था को खोलने या उजागर करने का काम करते हैं।
- भाषा अर्जन घुमावदार या चक्राकार तरीके में प्रगति करता है न कि रेखीय तरीके में।
- भाषार्जन में अनुकरण का बहुत सीमित व सतही तौर पर योगदान हो सकता है। प्रत्यक्षतया दिखायी दे रहा अनुकरण वास्तव में सीखने वाले दिमाग में बनाये भाषाई ज्ञान का प्रतिबिंब है।
- भाषा दोहराने से नहीं, बल्कि आवश्यकता आधारित व अर्थपूर्ण संवादों में भाषाई तथ्यों की आवृत्ति द्वारा अर्जित की जाती है।
- भाषा अकेले शब्द और संरचना सीख लेने मात्र से नहीं आती, बल्कि संवाद में शामिल होने और संवाद करने से अर्जित की जाती है।
- भाषा केवल चार कौशलों सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना का योग नहीं है, बल्कि इन भाषा कौशलों के प्रदर्शन से अन्तर्निहित क्षमता व्यक्त होती है।
- भाषा अर्जन हमेशा पूर्ण से अंश की ओर बढ़ता होता है न कि अंश से पूर्ण की ओर। बच्चों को संवाद के स्तर के इनपुट देने और एक समय के बाद उनसे संवाद के रूप में आउटपुट प्राप्त करने से हम सम्पूर्णता में भाषा शिक्षण की अनिवार्यता को सुनिश्चित कर सकते हैं।
- सहयोगपूर्ण वातावरण में ही भाषा अर्जन संभव हो सकता है (वायगोट्स्की, ब्रूनर), जहाँ बच्चा अंतर्वैयक्तिक (इंटरपर्सनल) तथा आंतरवैयक्तिक (इंट्रापर्सनल) वार्तालाप में शामिल होने के पर्याप्त अवसर प्राप्त करता है।

भाषा के इनपुट (आगत) और आउटपुट (निर्गत)

अध्यापकों और अभिभावकों में धैर्य होना चाहिए। उनके लिए यह समझना महत्त्वपूर्ण है कि बच्चे को शुरुआत में बहुत सारे इनपुट की आवश्यकता पड़ सकती है और हो सकता है कि बहुत कम आउटपुट प्राप्त हो। भाषार्जन में हमेशा एक लंबी खामोशी होती है कुछ आउटपुट दिखायी

नहीं देता है जबकि उस समय भाषार्जन चल रहा होता है। एक बार जब बच्चा तैयार हो जाता है तो फिर आउटपुट हमेशा इनपुट से अधिक होगा।

- भाषा सीखने की कोई क्रमिकता नहीं होती, जैसे- वर्णमाला, शब्द, वाक्य। बच्चा हमेशा भाषा समग्र रूप से (पूर्ण से अंश सीखता है, न कि अंश से पूर्ण) सीखता है। बच्चा बोधगम्य संवाद/चर्चा में भाग लेता है और वहाँ से वह आगे बढ़कर ध्वनि, शब्द, वाक्य व अर्थ के अलग-अलग अर्थ/व्यवस्था बनाता है।
- भाषा अर्जन में एक निश्चित क्रम जैसे 'सरल से जटिल' या 'जटिल से सरल' नहीं होता है। माता-पिता, रिश्तेदार, दोस्त आदि बच्चों से बातचीत करते समय यह अपनी बातचीत में यह नहीं जाँचते की सरल वाक्य बोला जाए या जटिल वाक्य। वो बातचीत बहुत नैसर्गिक होती है जिसमें सरल, जटिल, संयुक्त सभी प्रकार के वाक्य होते हैं।
- बच्चा शब्दों के अर्थ को संदर्भ के द्वारा ग्रहण करता है, और अर्थ बनाने की प्रक्रिया में भाग लेता है।
- बच्चा परिस्थिति के अनुसार सीमित और ज्ञात शब्दावली के आधार पर असीमित वाक्य बना सकता है।
- बच्चा बोधगम्य तथा चुनौतीपूर्ण इनपुट चाहता है। समझ (बोध) मस्तिष्क में चलनेवाली प्रक्रिया के अलावा कुछ और नहीं है। अन्य भाषाएँ सुनते समय बहुत सारी चीज़ें (जैसे संदर्भ, वार्तालाप से अपेक्षा, परिचित शब्द, भाव-भंगिमाएँ आदि) बच्चे को व्यक्तिगत रूप में सहायता करती हैं।

लाखों बालक लेखन को एक यांत्रिक कौशल के रूप में सीख रहे हैं। यह वर्णमाला के अक्षरों के आकार सिखाते समय से आरंभ होता है। एक-एक अक्षर को कई बार लिखने के लिए बच्चों को आदेश दिया जाता है। लिखे गये अक्षरों को अध्यापक देखते हैं। इस तरह कई पाठशालाओं में देखा गया है कि वर्णमाला पूरा करने में कई सप्ताह लग जाते हैं। इस लंबे समय में छात्र को लेखन कार्य नीरस जान पड़ता है।

उसके बाद शब्दों को फिर वाक्यों को लिखने के लिए कहने पर वे अध्यापक के ऊपर निर्भर रहते हैं। एक बात में कहें तो छात्र लेखन कौशल को भावाभिव्यक्ति का साधन न मानकर केवल अध्यापक के द्वारा करवाये जाने वाला अभ्यास मात्र ही समझते हैं। ऐसी दुस्थिति बदलने के लिए हमें वार्तालाप/संवाद को आगे बढ़ाने के साधन के रूप में लेखन कौशल का परिचय करवाना चाहिए।

- प्रोफेसर कृष्णकुमार, दिल्ली विश्व विद्यालय

III आ) भाषा, समाज एवं अन्य मुद्दे

भाषा और समाज

यद्यपि बच्चे जन्मजात भाषा क्षमता के साथ जन्म लेते हैं फिर भी प्रत्येक भाषा विशेष प्रकार के सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक संदर्भों में अर्जित की जाती है। हर बच्चा यह सीखता है कि उसे किससे कहाँ और क्या बात करनी है।

> **'भाषा का समाज के बाहर न ही अस्तित्व है, और न ही विकास।'**
>
> -ऑरोरिन

जैसा कि ऑरोरिन ने बताया, समाज तथा भाषा एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। समाज के बिना भाषा का अस्तित्व नहीं है। जैसे समाज बदलता है वैसे ही भाषा भी बदलती है। अतः भाषा अधिगम अंतर्निहित सामर्थ्य और सामाजिक परिवेश की जटिल अंतःक्रिया का परिणाम है।

भाषा सामाजिक संप्रेषण के लिए इस्तेमाल में लायी जाती है और समाज की आवश्यकता के अनुसार बदलती रहती है। वह मानव संबंधों के सभी आदान-प्रदान में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भाषा की लोकप्रियता सामाजिक अंतःक्रियाओं, उपयोग और कार्य पर निर्भर करती है।

समाज का सृजन तब तक नहीं किया जा सकता है जब तक कि लोगों का एक समूह आपस में कुछ साझा मूल्यों को नहीं अपनाता है तथा मूल्यों को आत्मसात् करने तथा व्यक्त करने के लिए भाषा की ज़रूरत पड़ती है। यह भाषा ही है जो लोगों को क़रीब लाती है और एक सूत्र में पिरोती है।

बहुभाषिकता

बहुभाषिकता मनुष्य की पहचान बनाती है। यहाँ तक कि किसी दूरदराज के गाँव में तथाकथित एकल भाषा में मौखिक भंडार होता है जो कि कई सारे संप्रेषित अवसरों पर पर्याप्त रूप से भाषा को कार्य करने के लिए समृद्ध बनाता है।

हमारी कक्षाओं का बहुभाषिक होना स्वाभाविक है। जब सभी समाज विभिन्न प्रकार की परिस्थितियों में सामंजस्य के लिए बहुत अधिक विविधतापूर्ण भाषा का इस्तेमाल कर रहा है। इसलिए कक्षा में मौज़ूद भाषाई विविधता को एक बाधा मानने के बजाय उसे संसाधन के रूप में देखना चाहिए और उसे एक शिक्षण की रणनीति के साथ में इस्तेमाल करने का प्रयास करना चाहिए। अतः बहुभाषिकता को जीवित रखना और उसका संरक्षण करना हमारी भाषा योजना का केंद्रबिंदु होना चाहिए। अतः कक्षा में उपलब्ध भाषाओं और विविधताओं को इस्तेमाल करने व सम्मान करने के तरीके हमें खोजने होंगे। एक बच्चा जिसकी आवाज़ को नहीं सुना जाता है निश्चित ही वह अपने आपको अलग-अलग महसूस करेगा और एक समय पर वह स्कूल छोड़ देगा। यांत्रिक

और उबाऊ तरीके से व्याकरण पढ़ाने के बजाय कक्षा-कक्ष में उपलब्ध भाषाओं की विविधता को हम भाषा की संरचना पर सोचने, विचार करने का एक आधार बना सकते हैं।

आंध्र प्रदेश में बहुभाषिकता

भारत के अन्य किसी भी राज्य की तरह आंध्र प्रदेश भी उच्च बहुभाषिकता वाला राज्य है। यहाँ बोली जाने वाली कई भाषाएँ विविध भाषा परिवारों से संबंध रखती हैं। इसकी मुख्य भाषाओं में तेलुगु, उर्दू और अंग्रेज़ी शामिल है। यहाँ अनेक जनजाति भाषाएँ भी हैं, जिन्हें शिक्षा के साथ-साथ सभी सरोकार की वास्तव में ज़रूरत है। कई विद्‍वान्‌ और शिक्षाविद्‌ आंध्रप्रदेश में भाषाई मुद्‍दे के रूप में केवल तेलुगु और अंग्रेजी को ही देखते हैं।

इसी क्रम में हम कक्षा में पायी जाने वाली बहुभाषिकता को ध्यान में रखते हुए अपनी पाठ्‌यचर्या, पाठ्‌यक्रम, पाठ्‌यपुस्तकों और कक्षा-कक्ष प्रक्रियाओं को निर्मित करने की ज़रूरत है।

हमें यह भी याद रखने की ज़रूरत है कि बहुभाषिकता के इस्तेमाल और उसे बनाये रखने से शैक्षिक उपलब्धि तथा संज्ञानात्मक विकास में बहुत ही सकारात्मक परिणाम प्राप्त होते हैं।

- वैसे तो तेलुगु आंध्र प्रदेश की अधिकारिक भाषा है, किंतु यहाँ संप्रेषण के लिए अन्य कई भाषाओं का इस्तेमाल किया जाता है।
- यहाँ शिक्षा का मुख्य माध्यम तेलुगु, उर्दू और अंग्रेजी है। इन सबके अलावा कुछ क्षेत्रों में हिंदी, गुजराती और अन्य अल्पसंख्यक माध्यम की पाठशालाएँ भी कार्यरत हैं।
- आंध्र प्रदेश के जनजाति क्षेत्रों में कोलामी, कोया, कोंडा, बंजारा, कुवी, गोंडी, सवरा और उड़िया भाषाएँ भी बोली जाती हैं।
- आंध्र प्रदेश के बहुत प्रसिद्‍ध भाषाविद्‌ तुमटि दोनप्पा, भद्रीराजु कृष्णमूर्ति, चेकूरी रामाराव, बूदराजू राधाकृष्णा, कोमराजू लक्ष्मण राव और सुरवरम प्रताप रेड्‍डी के शोध अध्ययन स्कूलों में बहुभाषिक शिक्षा लागू करने में काफी उपयोगी साबित हो सकते हैं।

भाषा और विचार

पहले क्या आती है- भाषा या विचार? वास्तव में यह एक कठिन प्रश्न है। विचार भाषा और सोच एक दूसरे पर आश्रित और आधारित हैं। क्या हम भाषा के अस्तित्व के बिना एक विचार की कल्पना कर सकते हैं? भाषा बच्चे के भावात्मक पहलू को छूती है और सक्रिय बनाती है। कोई काम पूरा करने या किसी खास परिस्थिति में जीवित रहने में भाषा एक व्यक्ति को खुद से सोचने में मदद करती है। सोचने की क्रिया भाषा को गतिशील बनाती है।

- भाषा और विचार एक-दूसरे से अलग नहीं किये जा सकते, दोनों के बीच का संबंध काफी जटिल है।
- भाषा एक ओर हमारी विचार प्रक्रिया को संरचना प्रदान करती है तो दूसरी ओर ज्ञान और कल्पना के अनखोजे क्षेत्रों में हमें नेतृत्व प्रदान करती है।

- भाषा के माध्यम से ही संस्कृति, रीति-रिवाज और परम्पराएँ एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को स्थानांतरित किये जायेंगे।

भाषा सोचना सिखाती है। विभिन्न प्रकार के तार्किक चिंतन से सृजनात्मकता आती है। यदि एक बच्ची को नये तरीके से सोचने का मौक़ा दिया जाये तो वह विभिन्न विधाओं (जैसे-गीत, कविता, निबंध, कहानी आदि) का सृजन करती है।

भाषा की कक्षा में बच्चे को अपनी कल्पना और सृजनात्मकता का विकास करने के लिए पर्याप्त अवसर मिलने चाहिए। अपनी भाषा का विकास करने में कक्षाकक्ष की प्रकृति और अध्यापक-छात्र संबंध बच्चे में आत्मविश्वास का निर्माण करते हैं।

भाषा और बोली

अधिकांश लोग भाषा के साथ अपनी प्रतिष्ठा को जोड़ते हैं और बोली को तुच्छ और ख़राब विभिन्नताओं के रूप में मानते हैं। भाषा और बोली के मुद्‌दे पर लोगों की बहुत ही सामान्य प्रतिक्रिया निम्नलिखित होती है-

- भाषा एक निश्चित व्याकरण का अनुसरण करती है और उनकी एक लिपि होती है, जबकि बोलियों के पास ये चीजें नहीं होती।
- भाषा बहुत बड़े क्षेत्र में, बहुत बड़ी जनसंख्या के द्‌वारा बोली जाती है। लेकिन बोली स्थानीय या एक खास क्षेत्र में सीमित होती है।
- भाषा प्रामाणिक और परिष्कृत होती है और साहित्य, पत्रकारिता, सरकार और दूसरे कार्यालयों, न्यायालयों आदि में उपयोग की जाती है, जबकि बोली का उपयोग साधारण वार्तालाप में होता है।

फिर भी भाषा वैज्ञानिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से :

- भाषा और बोली में कोई अंतर नहीं है। दोनों का व्याकरण होता है और दोनों नियमों का अनुसरण करती है।
- बोलियों को भी लिखा जा सकता है। हम उनका व्याकरण और शब्दकोश भी लिख सकते हैं।
- किसे भाषा कहा जाय और किसे बोली - यह युद्‌ध रूप से एक सामाजिक और राजनैतिक मुद्‌दा है। यह कहा जाता है कि 'भाषा केवल एक बोली है जो सेना और शस्त्रों से सुसज्जित है।' इसका मतलब विभिन्न उपयोग और धनी और सत्ताधारी लोगों के सहयोग से वह सामाजिक भाषा बन जाती है।

महत्त्वपूर्ण लोग (सत्ताधारी और धनी) भाषा के जिस रूप का उपयोग करते हैं या संरक्षण प्रदान करते हैं वह ध्यान में लायी जाती है और कालांतर में उसे भाषा घोषित कर दिया जाता है। धीरे-धीरे इसकी शब्दावली, शब्दकोश और व्याकरण लिखे जाते हैं। क्रमशः उस क्षेत्र में यह साहित्य की भाषा बन जाती है। कालांतर में यह प्रामाणिक रूप प्राप्त करती है और पाठशालाओं में बच्चों के लिए निर्देश का माध्यम बन जाती है। कुछ समय के बाद उस क्षेत्र में बातचीत की तरह की भाषाएँ उन विशेष, सत्ताधारी भाषा की बोलियाँ घोषित हो जाती हैं।

इन जटिल सामाजिक-राजनैतिक प्रक्रियाओं में निम्न सुविधा प्राप्त बच्चों की हानि होती है, क्योंकि वे जिस भाषा के साथ पाठशाला आते हैं उनका उस प्रामाणिक भाषा की वेदी पर बलिदान देना पड़ता है। अध्यापक स्वयं के शुद्ध और मानकीकृत भाषा का रखवाला मानता है।

अध्यापक को ये बातें ध्यान में रखनी चाहिए कि -

- भाषा के समृद्ध कोष के साथ बच्ची पाठशाला में आती है। वह अपने द्वारा बोली जाने वाली भाषा के सारे व्याकरणिक नियम जानती है।
- उसकी मातृभाषा(एँ) स्कूल में शिक्षा का माध्यम, पढ़ाई का माध्यम नहीं बन पायी है। यह एक राजनैतिक मुद्दा है। वह अपनी भाषा में गलती नहीं कर सकती।
- मानकीकृत भाषा सीखते समय वह जो गलतियाँ करती हैं। वे आधारहीन नहीं होते हैं, वे कुछ निश्चित पैटर्न दर्शाते हैं। कालांतर में ये गलतियाँ सुधरती हैं। ये सीखने की प्रक्रिया के अनिवार्य चरण हैं।
- कोई भी बच्चा बिना त्रुटियों के भाषा नहीं सीख सकता और प्रथम भाषा सीखने वाले भी वही गलतियाँ करते हैं जो दूसरी या तीसरी भाषा सीखते समय करते हैं।

भाषा और लिपि

भाषा प्राथमिक रूप से बातचीत है। बातचीत को लिखने में ही लिपि का महत्त्व या अर्थ है। भाषा और लिपि के बीच कोई अंतर्निहित संबंध नहीं होता है।

वास्तव में संसार की सारी भाषाएँ किसी एक लिपि में लिखी जा सकती हैं या कोई भी व्यक्ति सूक्ष्म परिवर्तनों के साथ किसी भी भाषा को संसार की सारी लिपियों में लिख सकता है। भाषा लिपि के पहले आती है और कुछ भाषाओं के साहित्य के विकास में इसकी (लिपि) कोई भूमिका नहीं होती। लिपि निर्भर होती है। समाज में अपनी उपयोगिता और समृद्ध वर्ग, जो किसी समाज को शासित करते हैं पर इसमें कोई अजीब बात नहीं है कि लिपि उन लोगों के अनुसार बदलती है जो सत्ता में आते हैं। कई भाषाएँ जो कभी फ़ारसी, अरबी लिपि में लिखी जाती थी, आज देवनागरी, गुरुमुखी या रोमन लिपि में लिखी जाती हैं। उदाहरण के लिए, उर्दू शायरी आजकल फ़ारसी, अरबी, देवनागरी और रोमन लिपि में बहुत आसानी से उपलब्ध हो जाएगी। संथाली भाषा पाँच विभिन्न लिपियों में लिखी जाती है।

द्वितीय भाषा अधिगम

जैसा कि हमने पहले ही ध्यान दिलाया है कि मानव समुदाय भाषा संकाय या भाषाई क्षमता के साथ जन्म लेता है और यह क्षमता और जीवनकाल में कभी भी कितनी ही भाषाएँ अर्जित करने सीखने में उन्हें सक्षम बनाती है। यह सही है कि बच्चे नयी भाषाएँ बहुत तेजी से अर्जित करते हैं खासकर उनकी ध्वनि व्यवस्थाएँ। शब्दों और वाक्य संरचना को अर्जित करने के ख्याल से वयस्क प्रायः बेहतर होते हैं। यदि बच्चे नयी भाषाएँ जैसे- आंध्र प्रदेश में हिन्दी और

अंग्रेजी सीखने में असफल होते हैं तो समस्या बच्चों के साथ नहीं है, बल्कि सामग्रियों, विधियों, अध्यापकों तथा स्कूल में उपलब्ध संपूर्ण संसाधन के साथ है। द्वितीय भाषा आसानी के साथ सीखी जायेगी यदि हम समृद्ध और चुनौतीपूर्ण मौक़े, देखरेख और सहानुभूतिपूर्ण वातावरण सुनिश्चित करें। समृद्ध मौक़ों में शामिल है- विभिन्न प्रकार के संवादों में भाग लेना जैसे कविता, कहानियाँ, नाटक, चुटकुले, विज्ञापन लगाने आदि और इस भागीदारी में यह सुनिश्चित हो कि बच्चे अपनी प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण करें। इस तरह का वातावरण सृजित करने का एक हिस्सा यह है कि बच्चे जिन भाषाओं और सांस्कृतिक व्यवहारों को लेकर पाठशाला आते हैं, उनका अवश्य सम्मान हो और शिक्षण की प्रक्रिया में सृजनात्मक रूप से उनका उपयोग किया जाए। सामान्यतः द्वितीय भाषा शिक्षण की प्रक्रिया घनिष्ठ रूप से प्रथम भाषा सीखने के लिए काम में आनेवाली परिस्थितियों के निकट होनी चाहिए। वास्तव में यह एक कठिन कार्य है लेकिन इस तरह की निकटता हमेशा संभव है।

भाषा और समावेशी शिक्षा

हमें यह समझने की ज़रूरत है कि हम सभी में कुछ खास तरह की या दूसरे प्रकार की निःशक्तता है। बच्चे और बूढ़े लोगों को हमेशा मदद की ज़रूरत होती है, कुछ लोग गा नहीं सकते, कुछ लोग गंभीर हृदय या मस्तिष्क समस्याओं से पीड़ित होते हैं। हमें यह भी समझने की ज़रूरत है कि हमने 'पूर्ण मानव' जो वास्तव में मौजूद नहीं है, की कल्पना करके एक संसार का सृजन किया। सभी लोगों को सुरक्षित रास्ते की ज़रूरत है केवल दृष्टिहीन लोगों को नहीं। हमें ऐसी पाठशालाओं का निर्माण करना है जो कि सभी निःशक्त लोगों जेसे दृष्टिहीन, मूक, बधिर या पंगु की पहुँच में हों। हमें ऐसी पाठशाला का निर्माण करना है जो सभी बच्चों को समृद्ध, बौद्धिक और सांस्कृतिक माहौल प्रदान करें। ठीक इसी तरह भाषा की समस्याओं से ग्रस्त बच्चों के लिए सारे प्रावधान बनाने की ज़रूरत है। मूक-बधिर के संबंध में हमें अवश्य महसूस करना चाहिए कि उनके पास संकेत भाषा है जो कि अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, हिंदी या तेलुगु के समान ही एक व्यवस्थित भाषा है। यह यथोचित है कि अधिकारियों ने स्कूलों में संकेतों की उपलब्धता का कोई प्रावधान नहीं बनाया। यह मात्र बहुभाषिकता का सम्मान और सावधानीपूर्वक उपयोग ही है, जो विभिन्न भाषिक समस्याओं से ग्रस्त/क्षमताओं के व्यक्तियों के लिए सम्मान की जगह आश्वस्त कराती है।

यह बिल्कुल स्वाभाविक है कि हमारे कक्षाकक्ष ऐसे में बच्चे भी होते हैं जो विशेष आवश्यकता वाले हैं जो भाषा सीखने के दौरान पीछे रह जाते हैं। दशकों के विभिन्न शोध यह दिखाते हैं कि इस समस्या का सबसे उपयुक्त हल यह हो सकता है कि हम समावेशी भाषा अधिगम वातावरण स्कूलों में सुनिश्चित करें।

कठिनाइयों के विवरण के आधार पर खास भाषाई समस्या जैसे डिसलेक्सिया, विशिष्ट भाषा क्षतिग्रस्तता, ध्यान की कमी (Attention Deficit Disorder) न्यून दृष्टि, श्रवण क्षमता की क्षति आदि समस्याओं से ग्रस्त बच्चों के लिए रोग निदान संपन्न किया जाना चाहिए। इससे पार पाने के लिए कक्षा-कक्ष में समावेशी अधिगम वातावरण निर्मित करना होगा।

समावेशी कक्षा-कक्ष का मतलब है ऐसा शिक्षण अधिगम वातावरण निर्मित करना जो कि हर स्तर पर बच्चे की व्यक्तिगत भिन्नता को ध्यान में रखते

हुए उन्हें सहयोग दें। कुछ बच्चों को विशेष सहायता की ज़रूरत पड़ती है, जो कि अवश्य ही विशेष पाठशालाओं में दिया जाना चाहिए। लेकिन प्रत्येक संभव प्रयास करना चाहिए ताकि इन बच्चों को सामान्य कक्षा-कक्ष से बाहर न जाना पडे।

शिक्षा का अधिकार अधिनियम (आर.टी.ई. - 2009) और भाषा के मुद्दे

बच्चों का निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम-2009 छह वर्ष की आयु से चौदह वर्ष की आयु वर्ग के सभी बच्चों के लिए निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा प्रदान करती है। इसका लक्ष्य यह भी है कि सभी को गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा मिलें। विशेष रूप से शिक्षा का अधकार अधिनियम (आर.टी.ई.-2009) कहता है कि पाठ्यचर्या, पाठ्यपुस्तकें, आकलन प्रक्रियाएँ (सतत व समग्र मूल्यांकन सी.सी.ई.) आदि निर्मित किये जाने चाहिए ताकि गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा सुनिश्चित की जा सकें। इस संदर्भ में अधिनिमय में दी गई भाषा संबंधी धाराओं के बारे में शिक्षकों, शिक्षक प्रशिक्षकों, अभिभावकों, सामाजिक नेताओं की समझ होनी चाहिए। धारा सुझाती है कि 8(C) (RTE 2009:4) ‘‘सरकार को यह आश्वस्त करना होगा कि समाज के कमज़ोर और वंचित समूह के बच्चों की किसी भी आधार पर प्रारंभिक शिक्षा पाने और पूरा करने में किसी भी तरह का न तो भेदभाव किया जाय और न ही रोका जाये।’’ यह धारा बच्चों को भय, सदमा, चिंता से मुक्ति और स्वतंत्र रूप से अपने विचार अभिव्यक्त करने में भी मदद करती है। (RTE 2009, Section 29.2g:9) यह भी सुझाती है कि जहाँ तक व्यावहारिक हो, निर्देश का माध्यम बच्चे की मातृभाषा हों। (RTE 2009, Section 29.2f:9) किसी तरह से आश्वस्त हो कि बच्चों की भाषाएँ सम्मान प्राप्त करें। हमारे द्वारा सुझाए गये बहुभाषिक शिक्षण शास्त्र का अनुसरण करना ही आश्वस्त होने का एक मात्र तरीका है।

अध्याय-II खण्ड-4 कहता है -

‘‘यदि कोई बच्चा छह वर्ष की आयु तक किसी विद्यालय में प्रवेश नहीं ले पाता है या अपनी प्रारंभिक शिक्षा पूरी नहीं कर पाता हो वह बाद में अपनी उम्र के अनुरूप कक्षा में प्रवेश ले सकता है।’’

जहाँ बच्चे ने अपनी उम्र के अनुरूप सीधा प्रवेश उपयुक्त कक्षा में, उसे अपनी कक्षा के स्तर पर आने के लिए विशेष प्रशिक्षण, जो कि निर्धारित समय-सीमा पर पाने का भी अधिकार होगा। (RTE 2009:3) उक्त खंड के अनुसार जिन बच्चों को विशेष भाषाई समस्याएँ जो कि पढ़ने व लिखने की हों, वे विशेष प्रशिक्षण व अवधान पाने के अधिकारी हैं।

ये सभी प्रावधान आश्वस्त कराते हैं कि बच्चों को भाषा के आधार पर भेद-भाव न दिखायें। शिक्षा ही एक ऐसा मार्ग है, जो सभी बच्चों की भाषाओं की गरिमा बहुभाषिकता की रूपरेखा में कार्य करने का आश्वासन दिलाता है।

> ‘‘ज्ञान’’ कोई वस्तु नहीं है जो छात्र को दे सकते हैं। यह एक स्वशोधन शक्ति है, जो अनुभव के द्वारा अर्जित की जा सकती है।
>
> नवीन विषय के प्रति बालक विचारात्मक, निर्णयात्मक व आचरणात्मक समझ के विकसित होने पर ही ज्ञानार्जन किया जा सकता है।
>
> —APSCF – 2011

III इ) भाषा अधिगम - अपेक्षित दक्षताएँ

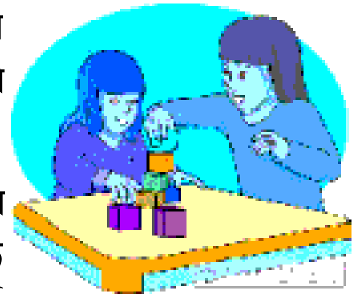

परंपरागत रूप से अधिगम उपलब्धियों को सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना जैसे अलग-अलग कौशलों के अर्थ में देखा जाता रहा है जबकि भाषाई उपलब्धियों के लिए हमें एक समग्र नज़रिये की ज़रूरत है जैसा कि भाषा शिक्षण के लिए हमने समग्र नज़रिया पहले सुझाया है। अतः भाषा उपलब्धियों के लिए हमें अधिक समग्र परिप्रेक्ष्य की ज़रूरत है।

भाषा शिक्षण की प्रक्रिया के लिए हमने और अधिक समग्र परिप्रेक्ष्य सुझाये हैं। पर हम बच्चों के द्वारा उत्पादित संवादों का मूल्यांकन (आकलन) करना चाहते हैं। इन संवादों में केवल सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना ही शामिल नहीं होंगे, बल्कि विभिन्न परिस्थितियों में भाषा के उचित प्रयोग और विविध दृश्य माध्यम जैसे चित्रकारिता (ड्राइंग/पेंटिंग) भी होंगे। भाषाई उपलब्धियों में मुख्यतः ध्यान अर्थ के साथ पढ़ने व लिखने पर होना चाहिए। इसे बच्चों को दूसरों की बातें ध्यानपूर्वक सुनने और उनसे आत्मविश्वास के साथ बोलने में सहायक होना चाहिए। हमें इस बात पर ज़ोर देना है कि भाषा-शिक्षण कार्यक्रम बच्चों को पहले-पहल उनकी मातृभाषा में सक्षम बनाएँ। एक बार यह आश्वस्त हो जाय तो यह बच्चों को दूसरी भाषाओं तथा विषयों में उच्च स्तर तक प्रवीण बनाने में लंबी दूरी तक सहायक होगी।

अपेक्षित दक्षताएँ - प्राथमिक स्तर - शिक्षण उद्देश्य (कक्षा *1* से कक्षा *6* तक), माध्यमिक स्तर - शिक्षण उद्देश्य (कक्षा *6* से कक्षा *10* तक)

भाषा शिक्षण कार्यक्रम के द्वारा इस पत्र में सुझाये गये निम्नांकित अंशों में बच्चों को योग्य बनाना चाहिए। इस आधार पत्र में सुझाये गये भाषा शिक्षण कार्यक्रम से गुज़रने वाले बच्चे प्रारंभिक शिक्षा के अंत तक निम्नलिखित चीज़ें करने में सक्षम होंगे-

- वे दूसरों को सुनने एवं समझने व उस पर उपयुक्त प्रतिक्रिया दे सकें जो उस व्यक्ति, स्थान एवं संभाषण के अनुकूल हो। वे पूर्वानुमान लगा सकें कि उन्हें क्या करना है। वे उस प्रकार के संवादों/चर्चा क्रियाओं में भाग लें जहाँ उन्हें जिम्मेदारी के साथ अपनी बात कहने का मौक़ा मिलें। छोटी-छोटी बातों पर उत्तेजित होने के बजाय वे तार्किक चर्चाओं में शामिल होने में सक्षम हो सकें।
- सामान्यतः बोलने को एक यांत्रिक क्रिया के रूप में लिया जाता रहा है। विशेषकर प्राथमिक कक्षाओं में जहाँ बच्चा शिक्षक दूवारा कहे गये छोटे-छोटे गीतों व कविताओं को सूत्रबद्ध रूप में पुनः प्रस्तुत या अभिवादन करता है। बच्चे पहले से ही जानते हैं कि उन्हें विविध व्यर्थ स्थानों एवं विषयों के संदर्भ में किस प्रकार अपनी भाषा का प्रयोग करना है।

विद्यालय में औपचारिक चर्चाओं दूवारा इसे और अधिक मज़बूती प्रदान करने की ज़रूरत है।

- बच्चों को पाठ्यपुस्तकों के वाचन तक ही सीमित नहीं रखना चाहिए। वे अपने स्तर की लिखित सामग्री समझ सकें। पाठशाला के समक्ष सबसे महत्त्वपूर्ण प्रश्न यह है कि बच्चों में अर्थग्रहण करते हुए पढ़ने की उच्च स्तरीय प्रवीणता कैसे विकसित की जाय। यह केवल ऐसी सामग्री द्वारा संभव है जो बच्चों को अर्थपूर्ण, रोचक व चुनौतीपूर्ण लगें। जब तक बच्चों को विविध विषयों की विविधता के द्वारा जिज्ञासा की प्रवृत्ति को बढ़ावा नहीं मिलता, तब तक वे अपनी पाठ्यपुस्तकों के बाहर प्रगति करने में योग्य नहीं बन सकते। यह तभी संभव है जब बच्चे किसी विषय का तार्किक विश्लेषण तथा उसे अनुक्रम चार्ट (फ्लो चार्ट) आदि में स्थानांतरित कर सकें।
- अधिकांश अध्यापक और अभिभावक सोचते हैं कि बच्चे पहली बार पाठशाला आने पर लिखना शुरू करते हैं। वास्तव में बच्चे उसी समय से अपने तरीके से लिखना शुरू कर देते हैं जब वे आड़ी-तिरछी रेखाएँ खींचते हैं। यदि उन्हें पाठशालाओं में स्वतंत्र रूप से लिखने का प्रोत्साहन दिया जाय, तो वे अत्यंत शीघ्र गति से सीखेंगे। प्राथमिक चरणों में मूल्यांकन करते समय ध्यान बच्चों की त्रुटियाँ पकड़ने के बजाय उन्हें अपनी इच्छानुसार लिखने के लिए प्रोत्साहित करने पर रहें। लेखन यांत्रिक कौशल नहीं है, यह एक सृजनात्मक क्रियाकलाप है।
- शब्द अलग-अलग करके नहीं सीखे जा सकते, ऐसे सीखना भी नहीं चाहिए। दुर्भाग्यवश शब्दावली पर समकालीन दृष्टिकोण हमेशा से पृथक्-पृथक् शाब्दिक तत्त्वों पर रहा है। जबकि शब्द का अर्थ इस बात पर निर्भर है कि उसका किस संदर्भ में प्रयोग किया गया है। तो इसे कैसे पढ़ाया जाए? कैसे परखा जाए? जबकि एक ही शब्द विविध संदर्भों में विविध अर्थ देता है। शब्द भंडार को भाषा-शिक्षण के महत्त्वपूर्ण घटक के रूप में माना जाना चाहिए। यह तभी हो सकता है, जब बच्चों को संदर्भानुसार शब्दों के अनुमान लगाने के लिए प्रोत्साहित किया जाये।
- बच्चों में कल्पनात्मक अभिव्यक्ति के लिए विभिन्न दक्षताएँ निहित होती हैं। उन्हें अपने विचार मौखिक तथा लिखित रूप में अभिव्यक्त करने का अवसर प्रदान किया जाना चाहिए। बच्चे अपनी खुद की कहानियाँ, गीत, संवाद, पत्र, करपत्र, स्वपरिचय, सूचनाएँ, विज्ञापन, नाटक आदि का सृजन कर सकें। क्योंकि जैसे-जैसे वे बड़ी कक्षाओं में जायें, आपस में मिलकर किसी नाटक आदि का सृजन करने में सक्षम हो सकें। पुस्तकों की समीक्षा, प्रतिवेदन, चर्चा, सामूहिक क्रियाकलापों में भाग लेना, भाषण देना आदि ये सब बच्चों के सृजनात्मक अभिव्यक्ति को इंगित करते हैं।
- बहुभाषिक ढाँचे के तहत किये जाने वाले भाषा शिक्षण की बड़ी उपलब्धियों में से एक यह हो सकती है कि बच्चों की सौंदर्यशास्त्रीय संवेदना समृद्ध की जायें ताकि वे कविता व उसकी संरचना को बेहतर समझ सकें। हम यह भी आशा कर सकते हैं कि वे ज्यादा जिम्मेदार नागरिक बन पाएँगे जो दूसरों की ज़रूरतों के प्रति संवेदनशील हों।
- भाषा कक्षा-कक्ष बच्चों को विविध संस्कृतियों से परिचित कराने एवं विविध भाषाओं और संस्कृतियों के प्रति उनकी संवेदनशीलता बढ़ाने में बहुत ही उपयोगी है। बच्चे अपनी प्राथमिक शिक्षा पूरी होने तक सरल कविताओं, कहानियों तथा अन्य विषयों को समझकर सराह सकें और साथ ही साथ वे किसी विषयवस्तु पर चर्चा में शामिल होने हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न उठाने में सक्षम हों।

- सामाजिक विज्ञान का शिक्षण विद्यालय में सर्वाधिक चुनौतीपूर्ण क्षेत्र है क्योंकि यह अत्यंत अमूर्त है। ऐसा इसलिए है क्योंकि हम प्रायः शिक्षा को बच्चों के वास्तविक जीवन से जोड़ने में असफल रहे हैं। सामाजिक विज्ञान की शिक्षा को वास्तविक जीवन के निकट ले जाना और उनमें अन्य विषयों के प्रति जागरूकता का निर्माण करना प्राथमिक शिक्षा की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि मानी जानी चाहिए। वैसे यह कार्य सामाजिक विज्ञान की कक्षाओं में ही किया जायेगा। फिर भी स्कूली शिक्षा के शुरुआत के वर्षों में, भाषा की कक्षा कविता, कहानी आदि के माध्यम से इंसान की दूसरे इंसानों के प्रति संवेदनशीलता जगाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
- हाल ही के शोधों से पता चला है कि अधिभाषिक चेतना अर्थात भाषा के अवचेतन ज्ञान के बारे में चेतन सजगता भाषाई दक्षता और अकादमिक उपलब्धियों से बहुत ही सकारात्मक रूप से सहसंबंधित है। एक बहुभाषिक कक्षा, भाषा कैसे काम करती है को समझने की आदर्श जगह है। उदाहरण के लिए बच्चे अचानक ही यह खोज कर सकते हैं कि वे सभी नकारात्मक वाक्य बनाने के लिए एक जैसे तरीके इस्तेमाल करते हैं।

बजाय इसके कि बच्चे व्याकरण के नियमों को रटें वे ध्वनि, शब्द और वाक्य के स्तर पर भाषा के नियमों पर वैज्ञानिक रूप से परीक्षण कर सकते हैं।

❖ ❖ ❖

भाषा

- लिखने-बोलने, सुनने एवं पढ़ने की भाषिक क्षमताएँ स्कूल के सभी विषयों और अनुशासनों के शिक्षण से विकसित होती है। प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च माध्यमिक स्तर तक बच्चों के ज्ञान निर्माण में उनके बुनियादी महत्त्व को समझाना आवश्यक है।
- त्रिभाषा फॉर्मूले को पुनः लागू किए जाने की दिशा में काम किया जाना चाहिए, जिसमें बच्चों की घरेलू भाषाओं और मातृभाषाओं को शिक्षण के माध्यम के रूप में मान्यता देने की ज़रूरत है। इनमें आदिवासी भाषाएँ भी शामिल हैं।
- अंग्रेज़ी को अन्य भारतीय भाषाओं के बीच स्थान दिए जाने की आवश्यकता है।
- भारतीय समाज के बहुभाषात्मक प्रकृति को स्कूली जीवन की समृद्धि के लिए संसाधन के रूप में देखा जाना चाहिए।

- NCF 2005

IV पाठ्यक्रम योजना - प्रथम चरण (कक्षा 1 और 2)

अ) अपेक्षित दक्षताएँ

आ) पाठ्यपुस्तकें

इ) पाठ्यांश विवरण

ई) अधिगम वातावरण - अभ्यसन प्रक्रियाएँ

उ) अध्यापक सन्नद्धता - दायित्व

ऊ) आकलन

ऋ) भाषा संसाधन - सहायक ग्रंथ, सामग्री

IV पाठ्यक्रम योजना- प्रथम चरण (कक्षा 1 और 2)

(अ) अपेक्षित दशताएँ

दक्षता	कक्षा - एक	कक्षा - दो
सुनो-बोलो	♦ पाठशाला चित्र पर बातचीत,दादाजी बच्चे- ऐनक, साग-सब्जियों, फूलों, फलों के रस शरबत, अदरक का स्वाद, ईख और इमली का स्वाद गाँधी जी का चरखा-खादी कपड़े, बढ़ई-लकड़ी से बनी वस्तुएँ, बरगद का पेड़, सड़क का महत्व, पतंग, फलों का राजा आम, मेला, ऋषभ, ओखली का औषधि कूटने में उपयोग, जंगल-जानवर-शिकारी, चिड़िया व पक्षी, बरसात में छतरी का महत्व, तितली-हवा-गुलाब की कली, सूरज, फलदार-छायादार वृक्षों में अंतर महत्व, ठेला व ठेलेवाले के बारे में बातचीत।	♦ चींटी कबूतर और शिकार द्वारा सच्ची दोस्ती का महत्व, ऊँट, जानवरों और खेलों के नाम, प्रकृति से सीखना, चूज़ा, चूहे व बिल्ली जैसे जानवरों का परिचय, सब्जियों का परिचय, अंकों का परिचय, दूध व उसकी उपयोगिता, उद्यान का महत्व, व्यवसायों, इंद्रधनुष व रंग मोतियों के प्रकार, चित्रों का वर्णन व बहादुरी, तिरंगा झंडे का महत्व, नदी व पुल, पानी से उपयोग आदि।
पढ़ो	♦ शब्दों पर गोला लगाना, अक्षरों को वर्णमाला में पहचानना, चित्र के आधार पर वाक्य पढ़ना, अक्षर पहचानना, उनसे नये शब्द बनाना, चित्रों के आधार पर अक्षरों एवं शब्दों को पहचानना, अक्षरों से शब्द बनाना, जोड़ी बनाना, शब्द पढ़ना, जल्दी-जल्दी पढ़ना, सही-गलत का चिह्न लगाना, वर्ग पहेली में अक्षरों को पहचानना, शब्द पढ़ना और बोलना, अक्षरों को अनुस्वर के साथ पढ़ना, शब्दों को पढ़ना और अंतर समझना, हाँ या नहीं, चित्र के नाम पढ़ना, अक्षर मात्रा के साथ बोलना, तालिका में शब्द ढूँढ़कर निशान लगाना।	♦ वाक्यों को कविता पाठ में पहचानना, वर्णमाला चार्ट में अक्षरों को पहचानना, तुक शब्द, शब्द के बीच अंतर, चित्रों के नाम व वाक्य प्रयोग, शब्दों को वर्णमाला क्रम देना, शब्दों का सही रूप, चित्रों के नाम, शब्दों को पाठ में पहचानना, शब्दों पर गोला लगाना, जोड़ी बनाना, द्वित्वाक्षर, रिक्त स्थान, वाक्य क्रम, अंक पढ़ना, सही शब्द के नीचे रेखा खींचना, संयुक्ताक्षर शब्दों पर गोला लगाना, द्वित्वाक्षर-संयुक्ताक्षर शब्द पढ़ना, वाक्य पढ़ना, महीनों के नाम, कहानी सुनाना, शब्द-अंत्याक्षरी, भाव के आधार पर दोहा बनाना।
लिखो	♦ अनुलेख, एक जैसे शब्द, रिक्त स्थान, चित्रों के नाम, अक्षरों से शब्द बनाना, चित्र उतारना, अक्षर वर्णमाला में पहचानना, सही शब्द पहचानकर लिखना, वर्ग पहेली, सुलेख आदि।	♦ वर्णमाला के अक्षर पाठ में पहचानना, चित्रों के बदले नाम, अक्षरों से शब्द बनाना, रिक्त स्थान, चित्र बनाना, तालिका से वाक्य बनाना, शुद्ध वर्तनी, अपना परिचय, अंकों को अक्षरों में लिखना।

(आ) पाठ्यपुस्तकें

1, 2 कक्षाओं की पाठ्यपुस्तकों में निम्नलिखित लक्षण होने चाहिए-

- पाठ्यपुस्तक वाचक, अभ्यास-पुस्तिका के रूप में उपयोगी हों।
- बच्चों की अपेक्षित दक्षताओं के आधार पर पाठ्यपुस्तकों का निर्माण होना चाहिए।
- पाठ्यपुस्तक में भौतिक लक्षण यानी कागज़ की गुणवत्ता, परिमाण, मुद्रण, मुख पृष्ठ, अक्षर परिमाण (फॉन्ट) आदि सुंदर और आकर्षणीय होने चाहिए।
- पाठों में भाषा के विविध रूप होने चाहिए। वे बाल-गीत, गाने, कथाएँ, चित्रकथा, गीत कथाएँ, संवाद, घटना के रूप में होने चाहिए।
- पाठ्यपुस्तक के चित्र भावों का अर्थग्रहण करने के साथ-साथ, सूचनाओं, कृत्यों से संबंधित समझ को विकसित करनेवाले हों।
- पाठ्यपुस्तक के चित्र भावों का अर्थग्रहण करने के साथ-साथ, सूचनाओं, कृत्यों से संबंधित समझ को विकसित करनेवाले हों।
- पाठ्यपुस्तक में चित्रों को अधिक स्थान दिया जाना चाहिए।
- चित्र सोचने-विचारने वाले हों।
- जहाँ तक हो सकें पाठ परिचित अंशों पर आधारित हों। पाठों के गीतों, कथाओं और गानों में परिचित परिवेश को पाठ्यांश के रूप में उपयोग करना चाहिए।
- पाठ्यपुस्तक में अभ्यास स्तर के अनुसार हों।
- सुनना-बोलना के अभ्यासों में बच्चों को स्वयं बोलने की स्वतंत्रता होनी चाहिए।
- पढ़ने वाले अभ्यास ऐसे होने चाहिए, जिससे बच्चे धारा प्रवाह से पढ़ सकें, अर्थग्रहण करके बोल सकें।
- लिखने के अभ्यासों में सुंदर शब्दों में लिखना, बिना त्रुटियों के लिखना, स्वयं लिखना जैसे अभ्यास सम्मिलित होने चाहिए।
- सृजनात्मक अभिव्यक्तिकरण से संबंधित अभ्यास जहाँ तक हो सकें, हर पाठ में होने चाहिए।
- पाठ्यपुस्तकों में दी जानेवाली सूचनाएँ ऐसी होनी चाहिए कि बच्चे उसे स्वयं पढ़कर समझ सकें।
- पाठ्यपुस्तकों की भाषा ऐसी होनी चाहिए कि बच्चे उसे आसानी से समझ सकें।

❖ ❖ ❖

(इ) पाठ्यांश विवरण

कक्षा – एक विषय – सूची

क्र.सं.	भाव	विधा	पाठ का नाम	लेखक/कवि
1.	भाषा के	बालगीत	कलम	संकलित
2.	प्रति	बालगीत	एक ऐनक	संकलित
3.	रुचि जागृत	बालगीत	मटर	संकलित
4.	करने वाले	निबंध	घर	संकलित
5.	बालगीत,	बालगीत	फल	संकलित
6.	चित्रकथा,	बालगीत	शरबत	संकलित
7.	पहेलियाँ	बालगीत	अदरक	संकलित
8.	आदि प्रधान	बालगीत	इमली ईख	संकलित
9.	अंश।	निबंध	चरखा	संकलित
10.		बालगीत	बढ़ई	संकलित
11.		बालगीत	बरगद	संकलित
12.		बालगीत	सड़क	संकलित
13.		बालगीत	पतंग	संकलित
14.		बालगीत	आम	संकलित
15.		बालगीत	उल्लू, ऊन	संकलित
16.		बालगीत	ऋषभ	संकलित
17.		बालगीत	ओखली औषध	संकलित
18.		बालकथा	बाण	संकलित
19.		बालगीत	चिड़िया	संकलित
20.		बालगीत	छतरी	संकलित
21.		बालगीत	गुलाब	संकलित
22.		निबंध	सूरज	संकलित
23.		बालगीत	वृक्ष	संकलित
24.		बालगीत	ठेला	संकलित
25.		बालकथा	सैर	संकलित
26.		बालगीत	झोला	संकलित
27.		बालगीत	हथौड़ा	संकलित
28.		पहेलियाँ	बूझो तो जानें	संकलित
29.		निबंध	अपनाओ	संकलित

कक्षा – दो विषय – सूची

क्र.सं.	भाव	विधा	पाठ का नाम	लेखक/कवि
1.	भाषा के	बालगीत	तितली और कली	संकलित
2.	प्रति	कहानी	सच्ची दोस्ती	संकलित
3.	रुचि जागृत	बालगीत	ऊँट चला	संकलित
4.	करने वाले	कहानी	भालू ने खेली फुटबॉल	संकलित
5.	बालगीत,	बालगीत	सीखो	संकलित
6.	चित्रकथा,	चित्रकथा	मैं भी	संकलित
7.	पहेलियाँ	कहानी	घंटी कौन बाँधे	संकलित
8.	आदि प्रधान	कविता	कद्दूजी की बारात	संकलित
9.	अंश।	कविता	अंकों का व्यवहार	संकलित
10.		निबंध	ग्वाला	संकलित
11.		निबंध	उद्यान	संकलित
12.		कहानी	रुक्की	संकलित
13.		कविता	इंद्रधनुष	संकलित
14.		कहानी	बिल्ली का हार	संकलित
15.		कहानी	बहादुर बच्चे रोते नहीं	संकलित
16.		कविता	राष्ट्र धर्म	संकलित
17.		संवाद	पुल	संकलित
18.		पहेली	मैं कौन हूँ	संकलित
19.		चित्र कथा	चूज़ा	संकलित
20.		कविता	असली मोती	संकलित

(ई) अधिगम वातावरण - अभ्यसन प्रक्रियाएँ

- कक्षा-कक्ष का वातावरण ऐसा होना चाहिए कि बच्चे उसमें आनंदपूर्ण ढंग से भाग ले सकना।
- भय, तनाव, दंड, दुर्व्यवहार का पूर्णतः विरोध करना।
- व्यक्तिगत, सामूहिक क्रियाकलापों में भाग लेने योग्य वातावरण का निर्माण करना।
- बच्चों को किसी एक जगह पर बैठाने की बजाय क्रियाकलापों के अनुरूप वृत्ताकार, अद्र्धवृत्ताकार, सामूहिक रूप में बैठाया जा सकता है।
- पहली और दूसरी कक्षाओं में पाठ्यपुस्तक आधारित शिक्षण अभ्यसन प्रक्रियाओं का अध्ययन करना चाहिए। पाठ्यपुस्तकों के साथ-साथ अतिरिक्त पठन सामग्री का भी उपयोग करना चाहिए।
- बच्चों से चित्रकथा पुस्तकें, कार्ड देकर बात करवाना, पढ़ना सिखाना।
- प्रतिदिन सीखने की प्रक्रिया में बातचीत करने और प्रश्न करने के लिए आवश्यक समय का उपयोग करना।
- बच्चों से बातचीत करते समय उनके द्वारा कहे गये शब्द, वाक्य, संवाद श्यामपट पर लिखकर उसके आधार पर पढ़ने-लिखने का अभ्यास करवाना।
- बच्चों के अभ्यास के समय का पूरी तरह से सदुपयोग हो। भाषा सिखाने के लिए दिये गये 85 मिनट के कालांश में क्रियाकलाप करवाना। क्रियाकलापों में बच्चों के अनुभवों एवं अनुमानों को स्थान दिया जाना चाहिए।
- बच्चों द्वारा बनाये गये चित्रों, लिखे गये अंशों का कक्षा में दीवार पत्रिका पर प्रदर्शन किया जाय।
- कक्षा में भिन्न-भिन्न प्रांतों के, विविध भाषाई क्षेत्र के बच्चे होते हैं। बच्चों को घर की भाषा/मातृभाषा में बातचीत करने की स्वतंत्रता अवश्य होनी चाहिए।
- कक्षा का वातावरण ऐसा होना चाहिए कि बच्चे अपने पसंद की कहानी की पुस्तकें, सामग्री आदि का स्वतंत्रतापूर्वक उपयोग कर सकें।
- सीखने की प्रक्रिया में वितरीत सामग्री का आवश्यक रूप से सदुपयोग करना चाहिए।
- प्रतिदिन कम से कम 30 मिनट बच्चों के स्तर को पहचानकर जिस स्तर के बच्चे अधिक हो उनको दृष्टि में रखते हुए सीखने की प्रक्रिया करवानी चाहिए।

(उ) अध्यापक सन्नद्धता-दायित्व

- 1, 2 कक्षाओं को पढ़ाने वाले अध्यापक कक्षाओं के अनुसार उत्तरदायित्वों को समझकर उनके अनुसार समय सारिणी का निर्माण करें।
- भाषा के लिए प्रदत्त 85 मिनट के कालांशों में, 10 मिनट बच्चों को स्वेच्छापूर्वक बात करने, प्रश्न पूछने, 15 मिनट श्रुतलेख करवाने-दोष सुधारने, 40 मिनट पाठ्यपुस्तक के आधार पर पढ़ाने, आखिरी 20 मिनट में स्तर के अनुसार पहचानकर, कक्षा में पिछड़े बच्चों पर, दृष्टि केंद्रित कर, हर स्तर के बच्चों के लायक अभ्यास करवायें।
- वार्षिक सारिणी के अनुसार, हर महीने में पढ़ाये जानेवाले पाठों की प्रणाली या पद्धति की तैयारी कर लें।
- प्रतिदिन पहले 10 मिनट बच्चों से पाठ/चित्र या परिचित विषयों पर बातचीत करवायें।
- प्रतिदिन बच्चों से श्रुतलेख लिखवाकर, उनकी त्रुटियाँ पहचानकर श्यामपट का उपयोग करते हुए, चर्चा के द्वारा, बच्चों से ही उनकी गलतियाँ सही करवायें।
- यह ध्यान दें कि सीखने की प्रक्रिया में सभी बच्चे भाग लें। बच्चों से अक्षरों की पहचान करवाकर उनसे वाक्य बनवायें, इन वाक्यों को श्यामपट पर लिखवायें, पढ़वायें।
- बच्चों से चित्र बनवायें, रंग भरवायें, सूचनाएँ तैयार करवायें और उनके बारे में बातचीत करवायें। बच्चों द्वारा तैयार की गयी सामग्री को दीवार पत्रिका के रूप में प्रदर्शित करें।

(ऊ) कक्षा-कक्ष वातावरण, भाषा शिक्षण की प्रक्रिया

- 1, 2 कक्षाओं में निम्न सीखने की सामग्री उपयुक्त मात्राओं में होनी चाहिए।
- प्रकृति संबंधी चित्र। (जैसे : हिम से ढका पर्वत, वर्षा का दृश्य, चंद्रमा पर मानव, रेगिस्तान के दृश्य, समुद्र आदि।)
- बच्चे सुंदर अक्षरों में लिखें, इसके लिए पुस्तकों में अभ्यास दें।
- पाठ आरंभ करने से पहले बच्चों से एकलव्य, बरखा जैसे कथा बाल-साहित्य पढ़वायें।
- अध्यापकों के लिए आयोजित किये गये प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लें। पाठशाला समुदाय कार्यक्रम में पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियों, सहायक सामग्री, शिक्षण तकनीक आदि शिक्षा की समस्याओं की चर्चा की जानी चाहिए।
- कक्षा की परिस्थितियों के अनुरूप कक्षा में समावेशी शिक्षा को बढ़ावा दें।

- 1, 2 कक्षाएँ पूरी होने तक बच्चों में कक्षानुसार दक्षताएँ प्राप्त करवायें।
- इसके लिए उनके स्तर के आधार पर स्व-निर्मित प्रश्न-पत्र का उपयोग करना चाहिए। बच्चों दूवारा प्रस्तुत किये गये स्तर को सही रूप से पहचानकर विश्लेषण करना चाहिए। उसके बाद क्रियाकलाप करवाना चाहिए।
- अध्यापकों को प्रतिदिन डायरी लिखना चाहिए। उसमें बच्चों की प्रगति, प्रतिस्पंदन, उनके अनुभवों की पहचान करनी चाहिए।

(ऋ) आकलन

- सतत समग्र मूल्यांकन का निर्वाहण करना चाहिए।
- इसमें छात्रों दूवारा किये गये दत्त कार्यों को, परियोजनाओं को और उनके दूवारा लिखित सामाग्री को ध्यान में रखकर उनका आकलन करना चाहिए।
- इसमें छात्रों के मौखिक भाषा क्षमताओं का आकलन करना चाहिए।
- इसमें छात्रों के लिखित व सृजनात्मक दक्षताओं का आकलन करना चाहिए।

(ए) भाषा संसाधन व सहायक ग्रंथ, सामग्री

- वर्णमाला चार्ट, बारहखड़ी चार्ट, दूवित्वाक्षर, संयुक्ताक्षर चार्ट, बाल साहित्य, समाचार पत्र, चित्रकथा की पुस्तकें आदि।

> बहुभाषिकता, जो बच्चे की अस्मिता का निर्माण करती है और जो भारत के भाषा - परिदृश्य का विशिष्ट लक्षण है, उसका संसाधन के रूप में उपयोग, कक्षा की कार्यनीति का हिस्सा बनाना तथा उसे लक्ष्य के रूप में रखना रचनात्मक भाषा शिक्षक का कार्य है। यह केवल उपलब्ध संसाधन का बेहतर इस्तेमाल नहीं है बल्कि इससे यह भी सुनिश्चित हो सकता है कि हर बच्चा स्वीकार्य और संरक्षित महसूस करे और भाषिक पृष्ठभूमि के आधार पर किसी को पीछे न छोड़ा जाए।

V पाठ्यक्रम योजना - द्वितीय चरण (कक्षा 3, 4 और 5)

अ) अपेक्षित दक्षताएँ

आ) पाठ्यपुस्तकें

इ) पाठ्यांश विवरण

ई) अधिगम वातावरण - अभ्यसन प्रक्रियाएँ

उ) अध्यापक सन्नद्धता - दायित्व

ऊ) आकलन

ऋ) भाषा संसाधन - सहायक ग्रंथ, सामग्री

...एक शिक्षार्थी एक भाषा के व्याकरण को सहज निर्मित करने में तभी सक्षम होगा यदि उसे चिंता रहित परिस्थितियों में बोधगम्य सामग्री उपलब्ध करवाई जाए। जैसा कि क्राषेन (1985) ने सुझाव दिया, निवेश केवल तभी ग्राह्य बनेंगे यदि अभिवृत्तियाँ सकारात्मक हों और अभिप्रेरणा सुदृढ़ हो।

V पाठ्यक्रम योजना - द्‌वितीय चरण (कक्षा 3, 4 और 5)

(अ) अपेक्षित दक्षताएँ

दक्षता	कक्षा - तीन	कक्षा - चार	कक्षा - पाँच
सुनो-बोलो	♦ व्यक्तियों के नाम, अनुशासन, मौसम, रंगों की जानकारी, क्यों और कैसे तथा कहानियों, कविताओं व अन्य विधाओं से संबंधित बातचीत।	♦ पाठ आधारित प्रश्न, चित्रों का वर्णन, अभिवादन शब्द, साक्षात्कार, पत्र, विचारात्मक प्रश्न।	♦ खिलौनों,पुस्तकों, होशियारी, हाज़िरजवाबी, पानी का उपयोग, देशभक्ति,फसलों, समेकित शिक्षा, क्रियाकलाप, चिट्ठी आदि के बारे में बातचीत।
पढ़ो	♦ वर्णों की पहचान, युग्म शब्द, पाठ आधारित प्रश्न, जोड़ी बनाना, कविता का भाव, मुहावरे, तालिका की पूर्ति, वाक्यों का सही क्रम, सूची बनाना, विलोम शब्द आदि।	♦ किसने किससे क्या कहा, रिक्त स्थान, पाठ आधारित प्रश्न, जोड़ी बनाना, पाठ आधारित प्रश्न बनाना, मात्राओं से शब्द बनाना, बहुविकल्पीय प्रश्न, कारीगर-व्यवसाय के नाम आदि।	♦ पुनरूक्त शब्द, काव्य पंक्तियों की पूर्ति, कविता का भाव, पाठ आधारित प्रश्न, विशेषण, वाक्यों का सही क्रम, प्रश्नवाचक वाक्य, युग्म शब्द, काव्य पंक्तियाँ, रिक्त स्थान, ध्वनि साम्य शब्द, वाक्यों की पूर्ति, किसने किससे कहा, सही-गलत।
लिखो	♦ पाठ आधारित प्रश्न।	♦ पाठ आधारित प्रश्न।	♦ पाठ आधारित प्रश्न।
शब्द-भंडार	♦ शब्दार्थ, विलोम, मात्रावाले, पुनरुक्ति, ध्वनि, पहेली, नुक़्ता, संज्ञा, संबोधन, भिन्नार्थी, विरामचिह्न आदि।	♦ वर्णमाला से शब्द बनाना, युग्म शब्द, पर्याय, वाक्य प्रयोग, योजक, शब्द के अर्थ मातृभाषा में लिखना, जोड़ी बनाना, तुकबंदी शब्द, वार्तालाप के नियम, मनोरेखा चित्रण आदि।	♦ खिलौनों के नाम, विलोम, तालिका, मुहावरे, उपसर्ग, क्रिया से भाववाचक में बदलना, शब्द संक्षेप आदि।
सृजनात्मक अभिव्यक्ति	♦ पात्राभिनय, कहानी, कविता, आगे बढ़ाना, वार्तालाप, चित्र का वर्णन, विचारात्मक कहानी, कविता बनाना, घटना को आगे बढ़ाना, वार्तालाप आदि।	♦ चित्र बनाना, कहानी, किसी खेल का आँखों देखा वर्णन, प्रस्तावना चित्र आधारित कहानी, नाव बनाना, लोक गीत, कविता, सूची बनाना, एजेंडा तैयार करना, संवाद, संबंधित प्रश्न व कहानी आगे बढ़ाना।	♦ वार्तालाप, विज्ञान की प्रगति, बालगीत, कहानी, पोस्टर तैयार करना, निबंध, कविता आगे बढ़ाना, साक्षात्कार, वाक्य पूरा करना, पत्र, घटना का वर्णन, नारे लिखना।

दक्षता	कक्षा - तीन	कक्षा - चार	कक्षा - पाँच
प्रशंसा	♦ पाठ सार के आधार पर प्रशंसा।	♦ पाठ सार के आधार पर प्रशंसा।	♦ पाठ सार के आधार पर प्रशंसा।
भाषा की बात	♦ लिंग, वचन आदि का अभ्यास।	♦ संज्ञा, सर्वनाम का अभ्यास	♦ संज्ञा के भेद, सर्वनाम, मुहावरे, कारक, विशेषण, भिन्नार्थी शब्दों का अभ्यास, क्रिया,लिंग।
परियोजना कार्य	♦ तथ्य संग्रहण व प्रस्तुतीकरण	♦ तथ्य संग्रहण व प्रस्तुतीकरण	♦ तथ्य संग्रहण व प्रस्तुतीकरण

त्रुटियों को न ढूँढ़ें

अगर हम बालकों को बिना रोक-टोक के डाँट फटकार के या अप शब्दों का प्रयोग करते हुए उनकी त्रुटियों को सुधारते हुए उनका मार्गप्रदर्शित करेंगे तो इससे उनका मनोबल एवं आत्मविश्वास बढ़ेगा। अगर ये बातें हम बड़े-बुजुर्ग समझ लें और बालकों को स्वेच्छायुक्त वातावरण प्रदान करेंगें।

- गिजुबाई

(आ) पाठ्यपुस्तकें

- 3, 4 और 5 कक्षाओं की पाठ्यपुस्तकें बच्चों को सोचने, विचारों को क्रमबद्ध तरीके से प्रस्तुत करने और सृजनात्मकता का विकास करने लायक होनी चाहिए।
- पाठ्यपुस्तक में कम से कम 40% चित्र होने चाहिए।
- तीसरी कक्षा की पाठ्यपुस्तकें 50% अभ्यास-पुस्तिका के रूप में होनी चाहिए।
- 4, 5 कक्षाओं की पाठ्यपुस्तकें भी 30% - 40% तक अभ्यास-पुस्तिका के रूप में होनी चाहिए।
- पाठ्यपुस्तकों में 18 से 20 तक पाठ्यांश होने चाहिए।
- पाठ्यपुस्तक के पाठ विविध भाषा व्यवहार के रूप में होने चाहिए। वे कहानी, गीत, पत्र, निबंध, संवाद आदि के रूप में होने चाहिए।
- स्थानीय लोक कलाएँ जैसे : ओग्गु कथा, बुर्र कथा, पल्लेसुद्दुलु, चिरुतल रायबारम, तोलुबोम्मलाटा आदि भी पाठ्यांशों में होने चाहिए।
- 3, 4 और 5 कक्षाओं की समाप्ति तक बच्चे कम से कम 30-40 पद्य सीख लेने चाहिए। जैसे : कबीर, तुलसी, रहीम आदि के दोहे।
- पाठ चुनिंदा लेखकों से लिखवा सकते हैं। कुछ पाठ्यांश उदा : पद्य, गीत, कथाएँ आदि एकत्रित किये जा सकते हैं।
- पाठ्यांश मानवता, सहयोग, पर्यावरण, संस्कृति, संप्रदाय, दर्शनीय स्थल, समानता, संवैधानिक मूल्यों पर आधारित होने चाहिए।
- पाठ्यांश बच्चों के स्वभाव के सन्निकट, पढ़ने योग्य, मनोरंजक, सोचने के अवसर प्रदान करने वाले होने चाहिए।
- बच्चों के लिए अपेक्षित कौशलों के आधार पर अभ्यास कार्य होने चाहिए।
- प्रश्न ऐसे होने चाहिए जिसके एक ही जैसे समाधान न आकर भिन्न-भिन्न उत्तर आयें। इसी प्रकार पात्रों के स्वभाव, अस्तित्व आदि के बारे में बच्चे स्वतंत्र रूप से अपने विचार प्रस्तुत कर सकें।

https://www.freshersnow.com/category/govt-boards/board-syllabus/

- पाठ के नीचे शब्दों के अर्थ सीधे न दिये जाय, बल्कि संदर्भों के आधार पर अर्थग्रहण कर सकने वाले अभ्यास होने चाहिए। उसी प्रकार पाठ्यपुस्तक के अंत में ''अ'' स्वर के क्रम में शब्दार्थ सारिणी देकर, उसमें से शब्दों के अर्थ ढूँढ़ने के लिए कह सकते हैं।
- अभ्यास ऐसे हो, जिसमें व्याकरण अंश केवल कंठस्थ करने के लिए न होकर, दिये गये अंशों को पढ़कर, उसका विश्लेषण कर, समझ कर अर्थग्रहण करने वाले होने चाहिए।
- अभ्यास कार्य में भाषा क्रियाकलाप, पहेली, परियोजना कार्य आदि सम्मिलित किये जायें।
- पाठ्यपुस्तक के चित्र विषय को समझने के साथ-साथ, सीखने की प्रक्रिया का अर्थग्रहण करने लायक, सोचने की क्षमता को बढ़ाने वाले, सृजनात्मकता का विकास करने लायक होने चाहिए।
- पाठ्यपुस्तक का उपयोग करने के तरीके को पाठ्यपुस्तक में सम्मिलित कर सकते हैं।
- पाठ्यपुस्तक केवल भाषा अभ्यास तक ही सीमित नहीं रहनी चाहिए, बल्कि पढ़ने के लिए अतिरिक्त पठन-सामग्री वाले अभ्यास भी होने चाहिए।

> *''लोकतंत्र प्रत्येक व्यक्ति के मनुष्य के रूप में सम्मान व योग्यता में आस्था पर आधारित होता है .... अतः लोकतांत्रिक शिक्षा का उद्देश्य है व्यक्तित्व का पूर्ण व चहुँमुखी विकास - अर्थात् एक ऐसी शिक्षा जो विद्यार्थियों को एक समुदाय में जीने की बहुआयामी कला में दीक्षित अकेले न तो रह सकता है न ही विकसित हो सकता है... उस शिक्षा का कोई लाभ नहीं जो अपने साथी नागरिकों के साथ शालीनता, सामंजस्य, कार्यकुशलता के साथ जीने की शैली के लिए आवश्यक गुणों को पोषित न करती हो।''*
> *(माध्यमिक शिक्षा आयोग, 1952-53, पृष्ठ 20)*

(इ) पाठ्यांश विवरण

विषय – सूची

कक्षा – तीन

क्र.सं.	भाव	विधा	पाठ का नाम	लेखक/कवि	
1.	मनोरंजन	कविता	कक्कू	रमेशचंद्र शाह	
2.	नैतिक कहानी	कहानी	शेखीबाज़ मक्खी	योगेश जोशी	
3.	संवेदनशीलता	घटना	चाँद वाली अम्मा	तारा निगम	
4.	बाल स्वभाव	कविता	मन करता है	सुरेंद्र विक्रम	
5.	साहस	कहानी	बहादुर बित्तो	–	इनके अतिरिक्त बाल स्वभावयुक्त "पढ़ो-आनंद लो" के पठन हेतु अतिरिक्त पाठ दिये गये हैं।
6.	बाल स्वभाव	कविता	हमसे सब कहते	निरंकार देव सेवक	
7.	संस्कृति	कथा	टिपटिपवा	गिरिजा रानी अस्थाना	
8.	सामाजिक मूल्य	कहानी	बंदर-बाँट	हरिवंशराय बच्चन	
9.	कौतूहलता	कहानी	कब आऊँ	आर.एस.त्रिपाठी	
10.	नैतिक मूल्य	कहानी	क्योंजीमल और कैसे कैसलिया	सुबीर शुक्ला	
11.	अहिंसा	घटना	मीरा बहन और बाघ		
12.	कुप्रथा विरोध	कहानी	जब मुझको साँप ने काटा	शंकर	
13.	हास्य	बालगीत	मिर्च का मज़ा	रामधारी सिंह 'दिनकर'	
14.	पर्यावरण	कहानी	सबसे अच्छा पेड़		

(इ) पाठ्यांश विवरण

विषय - सूची

कक्षा - चार

क्र.सं.	भाव	विधा	पाठ का नाम	लेखक/कवि	
1.	पर्यावरण	गीत	मन के भोले-भाले बादल	कल्पनाथ सिंह	इनके अतिरिक्त बाल स्वभावयुक्त "पढ़ो-आनंद लो" के पठन हेतु अतिरिक्त पाठ दिये गये हैं।
2.	मनोरंजन	कहानी	जैसा सवाल वैसा जवाब	—	
3.	हास्य	कहानी	गेंद का कमाल	शांताकुमारी जैन	
4.	समयस्फूर्ति	कहानी	दोस्त की पोशाक	—	
5.	बालस्वभाव	कविता	नाव बनाओ नाव बनाओ	हरिकृष्णदास गुप्त	
6.	चतुराई	कहानी	दान का हिसाब	—	
7.	कौतूहलता	कविता	कौन?	सोहनलाल द्विवेदी	
8.	देशभक्ति	घटना	स्वतंत्रता की ओर	सुभद्रासेन गुप्ता	
9.	वैज्ञानिक	संवाद	वाह! क्या बात है	—	
10.	हास्य	कविता	पढ़क्कू की सूझ	रामधारी सिंह 'दिनकर'	
11.	विकलांगता	कहानी	सुनिता की पहिया कुर्सी	—	
12.	सामाजिक	निबंध	हुदहुद	—	
13.	नैतिक मूल्य	कहानी	मुफ़्त ही मुफ़्त	ममता पण्ड्या	

(इ) पाठ्यांश विवरण

विषय - सूची

कक्षा - पाँच

क्र.सं.	भाव	विधा	पाठ का नाम	लेखक/कवि	
1.	बाल स्वभाव	कविता	खिलौनेवाला	सुभद्रा कुमारी चौहान	इनके अतिरिक्त बाल स्वभावयुक्त "पढ़ो-आनंद लो" के पठन हेतु अतिरिक्त पाठ दिये गये हैं।
2.	विज्ञानपरक	कहानी	वे दिन भी क्या दिन थे	आइज़क असीमोव	
3.	कौतूहलता	लोककथा	राख की रस्सी	—	
4.	सामाजिक	निबंध	पानी रे पानी	अनुपम मिश्र	
5.	देशभक्ति	कविता	बढ़े चलो, बढ़े चलो	—	
6.	काल्पनिकता	नाटक	चावल की रोटियाँ	पी. औंग खिन	
7.	साहस	यात्रा-वृत्तांत	चुनौती हिमालय की	सुरेखा पणंदीकर	
8.	संवेदनशीलता	कविता	एक माँ की बेबसी	कुँवर नारायण	
9.	कल्पनाशीलता	कहानी	एक दिन की बादशाहत	जीलानी बानो	
10.	संस्कृति-संप्रदाय	निबंध	फ़सलों का त्यौहार	—	
11.	प्रेरणा	लेख	जहाँ चाह वहाँ राह	—	
12.	चेतना	कविता	बाघ आया उस रात	नागार्जुन	
13.	विज्ञान	लेख	चिट्ठी का सफ़र	—	
14.	साहस	कहानी	बिशन की दिलेरी	प्रतिभा नाथ	

(ई) अधिगम वातावरण - अभ्यसन प्रक्रियाएँ

3, 4 और **5** कक्षाओं में भाषा के अनुकूल वातावरण, सीखने की प्रक्रिया किस रूप में होनी चाहिए, के बारे में यहाँ चर्चा की जा रही हैं।

- कक्षा में मनोरंजक व स्वतंत्रतापूर्ण वातावरण होना चाहिए।
- सभी बच्चों के पास पाठ्यपुस्तक होना चाहिए।
- कक्षा में दीवार पत्रिका, पोस्ट बॉक्स आदि बच्चों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति में उपयोगी होती है। इसीलिए उसका अनुसरण होना चाहिए।
- बच्चों का बाल-साहित्य, कहानी कार्ड, कहानियों की पुस्तकें बच्चों के लिए रखनी चाहिए। ऐसा वातावरण होना चाहिए, जिसमें बच्चे इनका स्वतंत्र रूप से उपयोग कर सकें।
- बच्चों से बातचीत करवाते समय उनके विचारों को खंडित करना, दूसरों से तुलना करना, नीचा दिखाना आदि न करें।
- बच्चों से पाठ्यपुस्तकें पढ़ाना, पात्रों के बारे में चर्चा करना, बच्चों को स्वतंत्रतापूर्वक विचार व्यक्त करने के अवसर देना।
- पाठों के चित्र, वर्णनात्मक चित्र, प्रकृति संबंधी चित्र, सृजनात्मक चित्रों का प्रदर्शन कर, अवलोकन करवाना। इनके बारे में स्वतंत्रतापूर्वक बातचीत करना।
- सीखने की प्रक्रिया में पूर्ण कक्षा-कक्ष क्रियाकलाप, सामूहिक क्रियाकलाप, व्यक्तिगत क्रियाएँ होनी चाहिए। बच्चे व्यक्तिगत रूप में लिखना, प्रदर्शित करना, पढ़ना, उसके बारे में बातचीत करना, विकसित रूप में होने चाहिए।
- कहानी, वर्णन, विवरण आदि के बारे में बच्चों से प्रश्न पूछना। उन पर प्रतिक्रिया करना।
- कहानी का नाटकीकरण करवाना।
- बच्चों के लिए स्वरचना पर आधारित अभ्यास कार्य अवश्य सम्मिलित किये जायें। अर्थात् परिचित विषयों पर उनके अनुभवों, विचारों को अपने शब्दों में लिख सकें।
- भाषा के लिए निर्धारित 85 मिनटों में प्रतिदिन पहले 10 मिनट बच्चों से स्वतंत्रतापूर्वक बातचीत करवाना, प्रश्न पूछना। 45 मिनट पाठ्यपुस्तक/अभ्यास सामग्री के आधार पर बच्चों से व्यक्तिगत, सामूहिक, कक्षा-कक्ष के पूर्ण कार्यों में भाग लें। बाद के 30 मिनट बच्चों के स्तर के अनुसार समूह बनाना। पिछड़े हुए बच्चों को अध्यापक पाठ्य सामग्री का उपयोग करके पढ़ने, लिखने के पर्याप्त अभ्यास प्रदान करें।
- बच्चे अपने द्‌वारा लिखी डायरी की बातों को सप्ताह में एक बार पढ़कर सुनायें।
- दीवार पत्रिका का आयोजन बच्चों द्‌वारा ही करवाया जाय। बच्चों द्वारा प्रदर्शित किये गये अंश पठन सामग्री के रूप में उपयोग में लायें।

(उ) अध्यापक सन्नद्धता-दायित्व

- अध्यापक 3, 4 और 5 कक्षाओं की पाठ्यपुस्तकें पूरी तरह से पढ़ें। पाठ्यांश पूरी तरह से समझें।
- वार्षिक योजना के अनुसार मासिक रूप से पाठ्यांश पूरा कर सकें ऐसी सामग्री सम्मिलित हों।
- पाठ्यांश, पठन सामग्री, अभ्यास सामग्री, बाल साहित्य बच्चों से पढ़ाना, चर्चा करना, बातचीत करवाना, डायरी लिखवाना, प्रोत्साहित करना।
- भाषा सिखाने के लिए निर्धारित समय का पूर्ण सदुपयोग किया जाय। बच्चों के लिए अर्थपूर्ण क्रियाकलाप, कार्य, अभ्यास सम्मिलित हों।
- लड़कियाँ, लड़कों, विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को मिलाकर समूह बनाना। मिलकर कार्य करना, अनुभवों पर चर्चा करना, एक-दूसरे की सहायता करने के लिए प्रोत्साहित करना।
- कथाओं, पाठ्यांशों पर चर्चा होने वाले संदर्भों को विभिन्न भाषाओं के बच्चों से उनकी अपनी-अपनी भाषाओं में बुलवायें। अवसर पड़ने पर अध्यापक बच्चों की सहायता से अन्य भाषाओं के बच्चों को अर्थ समझा सकते हैं।
- एक ही स्तर वाले बच्चों को शेष अभ्यास दिये जायें।
- भाषा के अभ्यासों में आशानुसार परिणाम को दृष्टि में रखते हुए बच्चों की प्रगति की तभी जाँच की जाय। स्वयं प्रश्न पत्र तैयार करके परीक्षा ली जाय।
- बच्चों में स्वरचना का विकास करने के लिए हर दिन कोई एक विषय देकर बच्चों को स्वयं लिखने के लिए प्रोत्साहित करें।
- बच्चों द्‌वारा लिखे गये अंशों की चर्चा करवायी जाय।
- अध्यापक स्वयं के सामर्थ्य के विकास के लिए पाठशाला समुदाय बैठकों में सम्मिलित होकर भाषा के अंशों पर चर्चा कर सकते हैं। साथी अध्यापकों के अंशों को ग्रहण कर सकते हैं। इसके पश्चात् मासिक योजना ली जाय। अध्यापक व्यवसाय के अंतर्गत प्राप्त प्रशिक्षण के द्‌वारा व्यावसायिक दक्षताएँ अर्जित करनी चाहिए।
- शैक्षिक वर्ष में अधिक से अधिक बाल-साहित्य की पुस्तकें पढ़ने के लिए बच्चों को प्रोत्साहित किया जाय। यह देखें कि बच्चे स्वयं द्वारा पढ़े गये अंशों के बारे में डायरी में लिखें। अध्यापक भी हर दिन डायरी लिखें। इसमें बच्चों की प्रगति, सृजनात्मकता, स्व-अनुभव, स्व-प्रतिस्पंदन पत्र सम्मिलित करें।

(ऊ) आकलन

- सतत समग्र मूल्यांकन का निर्वाहण करना चाहिए।
- इसमें छात्रों द्वारा किये गये दत्त कार्यों को, परियोजनाओं को और उनके द्वारा लिखित सामाग्री को ध्यान में रखकर उनका आकलन करना चाहिए।
- इसमें छात्रों के मौखिक भाषा क्षमताओं का आकलन करना चाहिए।
- इसमें छात्रों के लिखित व सृजनात्मक दक्षताओं का आकलन करना चाहिए।

(ऋ) भाषा संसाधन - सहायक ग्रंथ, सामग्री

- कक्षा में विविध प्रकार की कहानी की पुस्तकें, कथा कार्ड, बाल-साहित्य।
- गाने, गीतों, कहानियों से संबंधित दृश्य-श्रव्य सामग्री।
- बच्चों को सृजनात्मक ढंग से सोचने के लिए प्रकृति संबंधी चित्र, काल्पनिक चित्र, हास्य चित्र, कार्टून, वन पृष्ठभूमि के चित्र आदि।
- शब्द-भंडार तालिकाएँ, पत्रिकाएँ, समाचार पत्र, बच्चों से संबंधित अंश।
- द्विभाषा-चित्र, कथा कार्ड, चित्र, शब्दकोश आदि।

❖ ❖ ❖

VI पाठ्यक्रम योजना - तृतीय चरण (कक्षा 6, 7 और 8)

अ) अपेक्षित दक्षताएँ

(i) प्रथम भाषा - अपेक्षित दक्षताएँ

(ii) द्वितीय भाषा - अपेक्षित दक्षताएँ

आ) पाठ्यपुस्तकें

इ) पाठ्यांश विवरण

ई) अधिगम वातावरण - अभ्यसन प्रक्रियाएँ

उ) अध्यापक सन्नद्धता - दायित्व

ऊ) आकलन

ऋ) भाषा संसाधन - सहायक ग्रंथ, सामग्री

VI पाठ्यक्रम योजना - तृतीय चरण (कक्षा 6, 7 और 8)

अ) अपेक्षित दक्षताएँ (प्रथम भाषा)

दक्षता	कक्षा - छह	कक्षा - सात	कक्षा - आठ
सुनो-बोलो	♦ बालक अपने विचार, अनुभव, वस्तु विशेष का वर्णन कर सकते हैं।	♦ अनुभव, पसंद-नापसंद, माँ के महत्व, दोहों की चर्चा, खेल और शहीदों के बारे में चर्चा कर सकते हैं।	♦ सफलता के लिए आवश्यक गुणों, कारीगरों के महत्व, पत्र, एस.एम.एस., एकल व संयुक्त परिवार, समाज का प्रभाव, फिल्मों और सच्चे मित्र के बारे में बता सकते हैं।
पढ़ो पाठ आधारित प्रश्न	♦ गीत का भाव वाक्यों में देकर, अवतरण को पहचानना, प्रश्न बना सकना, किसने किससे पूछा, वर्णन कर सकना, प्रश्न का उत्तर बिंदुओं के रूप में देना आदि।	♦ भाव से संबंधित पंक्तियाँ, वाक्य क्रम में लगाना, पाठ में आये चीज़ों को छांटकर लिखना, वाक्यों की सहायता से अपने विचार व्यक्त करना, बहु-विकल्पीय प्रश्न सुलझाना, छोटे प्रश्नों के उत्तर देना, कविता की पंक्तियाँ सामान्य रूप में बदलना।	♦ कविता देकर उससे प्रश्न पूछना, सूक्तियों का भाव स्पष्ट करना, अवतरण पढ़कर प्रश्नों के उत्तर देना, पत्र पढ़कर प्रश्नों के उत्तर देना, एक अर्थवाले, भिन्न भाषाओं के शब्दों की जानकारी, बेहतर शीर्षक का सुझाव देना, क्या-किसने कहा आदि।
लिखो	♦ बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर देना, मिलते-जुलते शब्द खोजकर लिखना, अपने बारे में लिखना, अपने विचार प्रकट करना, छोटे-छोटे प्रश्नों के उत्तर प्रकट करना, शीर्षक बदलने का मौक़ा देना, बिदुओं के रूप में उत्तर लिखना, कविता का सारांश लिखना, तालिका की सहायता से सूची बनाना।	♦ भाव स्पष्ट करना, अपने विचार लिखना, प्रश्नों के उत्तर लिखना, रेखा खींचना, अपनी राय देना, शीर्षक देना, पाठ के आधार पर कथन की पुष्टि करना, अनुभव के आधार पर लिखना।	♦ प्रश्नों के उत्तर पाँच - दस वाक्यों में लिखना, प्रश्न करना, अपने विचार लिखना, शीर्षक के पक्ष में तर्क करना, कथन का अभिप्राय स्पष्ट करना, कल्पना से कहानी पूरी करना, उदाहरण सहित लिखना।

दक्षता	कक्षा - छह	कक्षा - सात	कक्षा - आठ
शब्द-भंडार	♦ कहावत का अर्थ, कहावतों को वाक्यों में बदलना, अर्थ शब्दकोश में देखना, पर्याय लिखना, तालिका बनाना, रेखांकित शब्दों से वाक्य बनाना, लिपियों की जानकारी प्राप्त करना, नकारात्मक शब्दों का प्रयोग, विलोमार्थी वाक्य लिखना, पाठ में आये कुछ प्रत्येक शब्दों को छांटकर लिखना, युग्म शब्दों को पहचानना।	♦ भिन्नार्थी वाले शब्द पहचानना, पर्याय शब्द लिखना, वर्गीकरण करना, मुहावरों को वाक्यों में प्रयोग करना, लिंग बदलकर लिखना, अर्थ जानकर वाक्य में प्रयोग, विलोमार्थी वाक्य बनाना, युग्म शब्द लिखना, विज्ञान से संबंधित शब्द चुनना, वाक्यों में प्रयोग करना आदि।	♦ एक ही वाक्य में एक शब्द का भिन्नार्थी में प्रयोग करना, दो विपरीतार्थक शब्दों का ही वाक्य में प्रयोग करना, समानार्थी शब्दों का प्रयोग करना,
भाषा की बात	♦ सर्वनाम, भाववाचक संज्ञा, विशेषण के भेद, उपसर्ग, प्रत्यय, योजक चिह्नों का परिचय, कारक, संधि, मुहावरे, पुरुषवाचक सर्वनाम, विराम चिह्न, वाक्य प्रयोग, विलोम शब्द, अर्थ की दृष्टि से वाक्य के भेद, लिंग आदि।	♦ गुणवाचक विशेषण शब्द ढूँढ़ना, द्वंद्व समास के उदाहरण खोजना, क्षेत्रीय बोलचाल के शब्दों का उच्चारण समझना, समानता का बोध कराने वाले शब्दों का वाक्य प्रयोग करना, लय या तालमेल बनाने के लिए प्रचलित शब्द पहचानना, 'वाला' प्रत्यय का प्रयोग	♦ क्रिया शब्दों को वाक्य में प्रयोग करना, विशेषण के प्रकार, वाक्य बनाना, संज्ञा शब्द बनाना, मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्य प्रयोग करना, प्रत्यय शब्द खोजकर लिखना, संधि के प्रकार, स्वर संधि का ज्ञान प्राप्त करना, उपसर्गों से बनने वाले शब्द ढूँढ़ना, द्वंद्व समास वाले शब्द ढूँढ़कर लिखना, अलंकार का परिचय, कारक, पर्याय, विपरीतार्थक

दक्षता	कक्षा - छह	कक्षा - सात	कक्षा - आठ
भाषा की बात		करना, मुहावरों और कहावतों का वाक्यों में प्रयोग करना। एक शब्द का भिन्नार्थी में प्रयोग करना। संख्यावाची शब्द जानना, वचन बदलना आदि।	उच्चारण संबंधी अंतर को पहचानना, अतिशयोक्ति अलंकार शब्द ढूँढ़ना, कर्ता, कर्म, करण आदि कारकों को पहचानकर लिखना, पर्यायवाची शब्द लिखना, समानार्थी प्रत्ययों से शब्द बनाना।
सृजनात्मक अभिव्यक्ति	♦ सहयोग करने की घटना से जुड़ी कहानी लिखना, छोटी-सी कविता लिखना, प्रकृति का वर्णन शीर्षक के साथ, एकल अभिनय करना, कल्पना से गद्य या पद्य लिखना, कहानी सुनाना, सवैये रागयुक्त गाना, नाटक का अभिनय कक्षा में करना, लोकगीत इकट्ठा करके कक्षा में सुनाना, आत्मकथा लिखना, चित्र बनाकर उसका वर्णन करना।	♦ कविता की पंक्तियाँ आगे बढ़ाना, अभिनय के साथ पात्र को प्रस्तुत करना, वार्तालाप करना, आत्मकथा लिखना, एक कहानी लिखना, नारे लिखना, संवाद लिखना, सूक्तियाँ बनाना, किसी खेल का वर्णन करना, किसी नाटक का अभिनय करना, साक्षात्कार संबंधी प्रश्नावली तैयार करना।	♦ एक विधा से दूसरी विधा में बदलना, आत्मकथा लिखना, एस.एम.एस. तैयार करना, पत्र लिखना, कल्पना से बातचीत करना, सूक्तियाँ बनाना, कहानी संवाद के रूप में लिखना, ग्रीटिंग कार्ड तैयार करना, समाचार तैयार करना, नारे लिखना आदि।
प्रशंसा	♦ पाठ के सार की प्रशंसा आदि।	♦ पाठ के सार की प्रशंसा आदि।	♦ पाठ के सार की प्रशंसा आदि।

अ) अपेक्षित दक्षताएँ (द्‌वितीय भाषा)

दक्षता	कक्षा - छह	कक्षा - सात	कक्षा - आठ
सुनो-बोलो	♦ बालक अपने विचार, अनुभव, वस्तु विशेष का वर्णन कर सकते हैं।	♦ बातचीत के प्रश्न	♦ सफलता के लिए आवश्यक गुणों, नैतिक गुण, घरेलू-उद्‌योगों का परिचय, प्रकृति के बारे में बातचीत, विज्ञान की जानकारी, ऐतिहासिक स्थानों का परिचय, त्यौहार, बुद्‌धिमत्ता, सिनेमा, पोलियो, खुराक़, डायरी आदि।
पढ़ो	♦ जोड़ी बनाना, क्रम बताना, वर्तनी, पंक्तियाँ सुनाना, उचित शब्द बताना, भाव पंक्तियाँ बताना आदि।	♦ जोड़ी बनाना, क्रम बताना, वर्तनी, पंक्तियाँ सुनाना, उचित शब्द बताना, भाव पंक्तियाँ बताना आदि।	♦ पंक्तियों के भाव बताना, शब्दों से वाक्य बनाना, वाक्य क्रम में लिखना, चित्र बनाना, शब्द-संक्षेप, अगले वाक्य लिखना, गद्‌यांश के प्रश्नोत्तर लिखना, किसने कहा, चित्र से जुड़े वाक्य, अनुच्छेद बनाना आदि।
लिखो	♦ पाठ आधारित प्रश्नोत्तर आदि।	♦ पाठ आधारित प्रश्नोत्तर आदि।	♦ पाठ आधारित प्रश्नोत्तर आदि।

दक्षता	कक्षा - छह	कक्षा - सात	कक्षा - आठ
शब्द-भंडार		♦ गिनती, पर्याय शब्द, तालिका बनाना, वर्ग पहेली, जोड़ी बनाना, परिवार के सदस्यों के नाम, रिक्त स्थान, विलोम शब्द, चित्र देखकर नाम लिखना आदि।	♦ मातृभाषा में अर्थ लिखना, शब्द अंत्याक्षरी, भिन्न शब्द पहचानना, तालिका बनाना, रिक्त स्थान, चित्रों के बारे में लिखना, वाक्य प्रयोग, गिनती, शब्द विश्लेषण आदि।
भाषा की बात		♦ तुकबंदी पद, वचन, संबोधन, संज्ञा, सर्वनाम, वाक्य प्रयोग, पढ़ो व समझो विशेषण, क्रिया आदि।	♦ सर्वनाम, विराम चिह्न, संज्ञा के भेद, विशेषण, सर्वनाम के भेद, विशेषण के भेद, काल, वाक्य प्रयोग, क्रिया के भेद, तुकबंदी शब्द, रिश्ते समझना, क्रिया विशेषण के भेद आदि।
प्रशंसा		♦ पाठ के सार की प्रशंसा आदि।	♦ पाठ के सार की प्रशंसा आदि।
सृजनात्मक अभिव्यक्ति	♦ चित्र बनाना, रंग भरना, उसके बारे में लिखना आदि।	♦ कविता को आगे बढ़ाना, संकेतों के आधार पर वाक्य बनाना, भाषण लेख, नारे, कहानी, डायरी, पत्र, एस.एम.एस., चित्र बनाना, उसका वर्णन करना, सूक्तियाँ बनाना, बधाई देते हुए दो वाक्य, प्रेरणा प्रसंग लिखना।	♦ कविता को अभिनय के साथ गाना, कहानी को संवाद के रूप में लिखना, शहर का वर्णन, कविता आगे बढ़ाना, उपग्रहों का महत्व, डायरी, चित्र बनाकर उसका वर्णन करना, वार्तालाप आगे बढ़ाना, पोस्टर बनाना, नारे बनाना, साक्षात्कार के लिए प्रश्नावली तैयार करना, पत्र आदि।

(आ) पाठ्यपुस्तकें

- इस स्तर पर पुस्तकों के पाठ्यांशों को पद्य, गद्य भाग में विभाजित न हो।
- प्रमुख कवि, रचयिता, प्राचीन, आधुनिक साहित्य को पाठ्यांश में सम्मिलित करना चाहिए।
- लिए गये पाठ्यांश बच्चों के जीवन के निकट स्तर के अनुसार हो।
- पाठ्यांश कम से कम 3 से 8 पृष्ठ तक हो सकते हैं।
- 30% चित्र होने चाहिए।
- अभ्यास पुस्तिका में पाठों के पश्चात् अभ्यास होने के बावजूद, पाठ से पहले बच्चों द्वारा पाठ पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करने वाले चित्र, प्रश्न होने चाहिए।
- अभ्यास कार्य मुख्य रूप से भाषा कौशल प्राप्त करने के लिए व सृजनात्मकता विकसित करने वाले होने चाहिए।
- अभ्यास कार्य स्व अध्ययन, अन्य पठन सामग्री पढ़ने के लिए प्रेरित करने वाले होने चाहिए।
- पाठ के पहले/नीचे अर्थ लिखने के बजाय संदर्भानुसार अर्थग्रहण करने वाले अभ्यास होने चाहिए।
- विस्तार पूर्वक पढ़ने के लिए पुस्तक में ही 'पढ़ो - आनंद लो' शीर्षक में पाठ्यांश, कहानियाँ रख सकते हैं।
- पाठ्यपुस्तक में मानवता, आत्मगौरव, स्व-परिश्रम, सहपाठी को समान भाव से देखना, गौरव प्रदान करना आदि गुण विकसित करने वाले पाठ्यांश होने चाहिए।

पाठ्यांश बच्चों में निम्न अंशों में संवेदनशीलता बढ़ाने वाले होने चाहिए।

- पर्यावरण संरक्षण
- प्राकृतिक संपदा की रक्षा करना
- बढ़ती जनसंख्या
- प्राकृतिक आपदाओं का सामना करने में समर्थ होना
- स्त्री, पुरुष में समानता
- सावधानी बरतना
- इस स्तर में अन्य भाषाओं की अनुवादित कहानियाँ, साहित्य विधाएँ आदि पाठ्यांश में सम्मिलित करना।

(इ) पाठ्यांश विवरण

कक्षा - छः (प्रथम भाषा)

विषय - सूची

क्र.सं.	भाव	विधा	पाठ का नाम	लेखक/कवि	
1.	एकता	गीत	साथी हाथ बढ़ाना	साहिर लुधियानवी	इनके अतिरिक्त बाल स्वभावयुक्त "पढ़ो-आनंद लो" के पठन हेतु अतिरिक्त पाठ दिये गये हैं।
2.	सामाजिकता	संस्मरण	बचपन	कृष्णा सोबती	
3.	प्रेरणा	निबंध	जो देखकर भी नहीं देखते	हेलेन केलेर	
4.	इतिहास	निबंध	अक्षरों का महत्व	गुणाकर मुले	
5.	रोचक	कविता	चाँद से थोड़ी-सी गप्पें	शमशेर बहादुर सिंह	
6.	विज्ञान	पत्र	संसार पुस्तक है	जवाहरलाल नेहरू	
7.	विज्ञान	कहानी	पार नज़र के	जयंत विष्णु नार्लीकर	
8.	सामाजिकता	कविता	वन के मार्ग में	तुलसीदास	
9.	बाल मनो विज्ञान	कहानी	नादान दोस्त	प्रेमचंद	
10.	संस्कृति	निबंध	लोकगीत	भगवतशरण उपाध्याय	
11.	बाल स्वभाव	कहानी	टिकट अलबम	सुंदरा रामस्वामी	
12.	जीव प्रेम	कविता	वह चिड़िया जो	केदारनाथ अग्रवाल	
13.	सामाजिक	एकांकी	ऐसे-ऐसे	विष्णु प्रभाकर	
14.	नैतिक	कहानी	नौकर	अनु बंधोपाध्याय	

(इ) पाठ्यांश विवरण

विषय - सूची

क्र.सं.	भाव	विधा	पाठ का नाम	लेखक/कवि
1.	जीव प्रेम	कविता	हम पंछी उन्मुक्त गगन के	शिव मंगल सिंह 'सुमन'
2.	सामाजिक	कहानी	दादी माँ	शिवप्रसाद सिंह
3.	संस्कृति	निबंध	खानपान की बदलती तस्वीर	प्रयाग शुक्ल
4.	रोचकता	कविता	कठपुतली	भवानीप्रसाद मिश्र
5.	जीवन कौशल	कहानी	मिठाईवाला	भगवतीप्रसाद वाजपेयी
6.	विज्ञान	निबंध	रक्त और हमारा शरीर	यतीश अग्रवाल
7.	जीव प्रेम	कहानी	चिड़िया की बच्ची	जैनेंद्र कुमार
8.	सामाजिक	संस्मरण	अपूर्व अनुभव	तेत्सुको कुरियानागी
9.	नीति	कविता	रहीम के दोहे	रहीम
10.	बाल स्वभाव	कहानी	कंचा	—
11.	नैतिक मूल्य	कविता	एक तिनका	हरिऔध
12.	जीवन मूल्य	जीवनी	वीर कुँवर सिंह	—
13.	व्यक्तित्व	साक्षात्कार	संघर्ष के कारण मैं तुनुकमिज़ाज हो गया:धनराज	—
14.	सामाजिक	कविता	विप्लव गायन	बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'
			उपवाचक -४	

(इ) पाठ्यांश विवरण

विषय सूची

क्र.सं.	भाव	विधा	पाठ का नाम	लेखक/कवि
1.	प्रकृति	कविता	बरसते बादल	सुमित्रानंदन पंत
2.	जीवन कौशल	कहानी	लाख की चूड़ियाँ	कामतानाथ
3.	रोचक	व्यंग्य	बस की यात्रा	हरिशंकर परसाई
4.	राष्ट्रीयता	कविता	दीवानों की हस्ती	भगवतीचरण वर्मा
5.	सामाजिक	निबंध	चिट्ठियों की अनूठी दुनिया	अरविंद कुमार सिंह
6.	नीति	कविता	अरमान	रामनरेश त्रिपाठी
7.	बालस्वभाव	कहानी	कामचोर	इस्मत चुगताई
8.	संस्कृति	निबंध	क्या निराश हुआ जाए	हजारीप्रसाद द्विवेदी
9.	शांति प्रेम	कविता	कबीर की साखियाँ	कबीरदास
10.	इतिहास	निबंध	जब सिनेमा ने बोलना सीखा	प्रदीप तिवारी
11.	सामाजिक	कविता	सुदामा चरित	नरोत्तमदास
12.	स्त्री चित्रण	रिपोर्ताज	जहाँ पहिया है	पी. साईनाथ
13.	प्रकृति	निबंध	पानी की कहानी	रामचन्द्र तिवारी
14.	पर्यावरण	एकांकी	हमारा संकल्प	—
15.	बाललीला	कविता	सूरदास के पद	सूरदास
16.	जीव प्रेम	कहानी	बाज और साँप	निर्मल वर्मा

उपवाचक -4

(इ) पाठ्यांश विवरण

विषय सूची

क्र.सं.	भाव	विधा	पाठ का नाम	लेखक/कवि	
1.	मनोरंजन	बाल गीत	आम ले लो आम	संकलित	इनके अतिरिक्त बाल स्वभावयुक्त "पढ़ो-आनंद लो" के पठन हेतु अतिरिक्त पाठ दिये गये हैं।
2.	भाषा के प्रति रुचि	बाल गीत	हमारा गाँव	संकलित	
3.	रेलवे स्टेशन की जानकारी	बाल गीत	रेलवे स्टेशन	संकलित	
4.	बाज़ार की जानकारी	बाल गीत	बाज़ार	संकलित	
5.	परिवार का परिचय	बाल गीत	मेरा परिवार	संकलित	
6.	जीव जंतु का परिचय	चित्र पठन	चिड़ियाघर	संकलित	
7.	खेलों की जानकारी	चित्र पठन	मैदान	संकलित	
8.	बालदिवस की जानकारी	वार्तालाप	बालदिवस	संकलित	
9.	भाषा के प्रति रुचि	कहानी	चुक्की और जब्बार	संकलित	
10.	मनोरंजन	कविता	खुशियों की दुनिया	संकलित	
11.	पर्यावरण	निबंध	उद्यान	संकलित	
12.	मनोरंजन	चित्रकथा	चूज़ा	संकलित	
13.	एकता, देश प्रेम	कविता	हिंद देश के निवासी	विनयचंद्र	
14.	भाषा के प्रति रुचि	वार्तालाप	छुट्टी मनायें	संकलित	
15.	मनोरंजन	कहानी	बच्चे चले क्रिकेट खेलने	संकलित	

(इ) पाठ्यांश विवरण

विषय सूची

क्र.सं.	भाव	विधा	पाठ का नाम	लेखक/कवि	
1.	प्रकृति	कविता	मन करता है	सुरेंद्र विक्रम	इनके अतिरिक्त बाल स्वभावयुक्त ''पढ़ो-आनंद लो'' के पठन हेतु अतिरिक्त पाठ दिये गये हैं।
2.	पर्यावरण	कहानी	सच्चा दोस्त	—	
3.	भाषा	वार्तालाप	हिंदी दिवस	—	
4.	राष्ट्रीयता	कविता	अपना प्यारा भारत देश	—	
5.	रोचकता	कहानी	आसमान गिरा	—	
6.	पत्र	पत्र लेखन	छुट्टी पत्र	—	
7.	शांति/प्रेम	कविता	चारमीनार	—	
8.	संस्कृति	वार्तालाप	हमारे त्यौहार	—	
9.	संस्कृति	निबंध	गुसाडी	—	
10.	नीति	कविता	कबीर के दोहे	कबीर	
11.	सामाजिकता	कहानी	साहसी सुनीता	—	
12.	जीवन कौशल	कहानी	आत्मविश्वास	—	

(इ) पाठ्यांश विवरण

विषय सूची

क्र.सं.	भाव	विधा	पाठ का नाम	लेखक/कवि	
1.	सामाजिकता	गीत	हम होंगे कामयाब	गिरिजा कुमार माथुर	इनके अतिरिक्त बाल स्वभावयुक्त "पढ़ो-आनंद लो" के पठन हेतु अतिरिक्त पाठ दिये गये हैं।
2.	नैतिक	कहानी	राजा बदल गया	-	
3.	संस्कृति	संवाद	प्यारा गाँव	-	
4.	प्रकृति	कविता	कौन?	बालस्वरूप राही	
5.	वैज्ञानिक	कहानी	धरती की आँखें	-	
6.	ऐतिहासिक	पत्र	दिल्ली से पत्र	-	
7.	संस्कृति	कविता	त्यौहारों का देश	-	
8.	नैतिक	कहानी	चावल के दाने	-	
9.	ऐतिहासिक	आत्मकथा	मैं सिनेमा हूँ	-	
10.	नैतिक	दोहे	अनमोल रत्न	तुलसी व रहीम	
11.	प्रेरणा	जीवनी	हार के आगे जीत है		
12.	जागरुकता	डायरी	बढ़ते क़दम	-	

(ई) अधिगम वातावरण - अभ्यसन प्रक्रियाएँ

- प्राथमिकोन्नत स्तर के आरंभ में सभी बच्चे पढ़ या लिख सकते हैं या नहीं निर्णय होना चाहिए।
- प्रारंभ के दिनों में अर्थात् 6 सप्ताह में पढ़, लिख सकें ऐसे अभ्यास होने चाहिए।
- बच्चों के पढ़ने लायक कहानी की पुस्तकें, दूविभाषा में लिखी गयी कहानी की पुस्तकें कक्षा-कक्ष में होनी चाहिए।
- समय विभाजन इस प्रकार हो कि सप्ताह में तीन दिन पदूय पाठ व तीन दिन गदूय पाठ पढ़ा सकें।
- बच्चे कविताओं को कंठस्थ करने के साथ-साथ रागयुक्त व भाव पूर्ण ढंग से गा सकें, ऐसे अभ्यास होने चाहिए।
- कक्षा-कक्ष में सामूहिक कार्य व व्यक्तिगत कार्य करवाने चाहिए जिससे बच्चे पाठ्यांशों को पढ़कर उसका अर्थग्रहण कर सकें।
- इस स्तर में बच्चों की मौन वाचन दूवारा भावों को ग्रहण करने की आदत बदलनी चाहिए। इसीलिए बच्चों को चाहिए कि पाठ्यपुस्तक के साथ-साथ अन्य पठन सामग्री भी पढ़ें।
- किसी भी पाठ को बच्चे पहले व्यक्तिगत रूप से पढ़ें। कठिन अंशों, शब्दों को पहचानें। उनके बारे में समूह में चर्चा करें। शब्दकोश में ढूँढ़कर अर्थ ग्रहण करें।
- पाठ्यांशों में सामासिक शब्द, जोड़ी वाले शब्द पहचानकर उन्हें अलग करना, मिलाना, चर्चा दूवारा बीच में आने वाले बदलावों को जानना।
- कक्षा-कक्ष में पाठों से संबंधित चर्चा करना। विचार व्यक्त करना। बच्चों दूवारा उस पर प्रतिक्रिया करवाना। सीखने की प्रक्रिया में भाग लेना।
- पाठ्यांशों के नीचे दिये गये अभ्यास स्वयं करना, उनके बारे में चर्चा करना।
- बच्चों दूवारा लिखे गये अंशों पर चर्चा करना।
- सीखने की प्रक्रिया में मुख्य रूप से नीचे दी गयी क्रियाएँ/अभ्यास करवाने चाहिए।
  - पात्र अभिनय
  - नाटकीकरण
  - मुख अभिनय
  - चित्रों दूवारा प्रदर्शन
  - चर्चाएँ
  - वाद-विवाद

- पत्रिकाओं के अंश पढ़ना, चर्चा करना आदि।

- बच्चे प्रतिदिन उनके द्वारा पढ़ें, सुनें, देखें अंशों के बारे में, पाठशाला में अपने अनुभवों के बारे में, अपने विचार अपनी डायरी में लिखें।
- बच्चों द्वारा अपनी उम्र के अनुरूप उपयुक्त कक्षा में प्रवेश लेने पर उन्हें सहायक सामग्री और विशेष प्रशिक्षण दिया जाय।
- बच्चे अपनी लिखित पुस्तिकाओं से स्वरचना लिखें, पाठ्य पुस्तक के अभ्यास स्वयं करें।
- कक्षा-कक्ष में विविध भाषा के बच्चों को समझाने के लिए उनकी भाषा में समझाएँ, उस भाषा को जानने वाले बच्चों की सहायता से समझाने का प्रयत्न करें।
- कक्षा-कक्ष में विशिष्ट बालकों के लिए उपकरण, आदि प्रचुर मात्रा में होने चाहिए।
- कक्षा-कक्ष में विविध भाषा के बच्चों को समझाने के लिए उनकी भाषा में समझाएँ, उस भाषा को जानने वाले बच्चों की सहायता से समझाने का प्रयत्न करें।
- कक्षा-कक्ष में विशिष्ट बालकों के लिए उपकरण, आदि प्रचुर मात्रा में होने चाहिए।

(उ) अध्यापक सन्नद्धता-दायित्व

- वार्षिक, मासिक योजना तैयार करना।
- 6, 7, 8 कक्षाओं की पुस्तकें पूरी तरह से पढ़ें। पाठ्यांश पूरी तरह से समझें।
- नियमित समय में पाठ्यक्रम पूरा करें।
- भाषा का अध्ययन, भाषा के बारे में पता करना आरंभ होता है। इसीलिए वाक्य निर्माण, रचना शैली के बारे में जानकारी प्राप्त करें।
- पद्य भाग के पाठ राग व भाव से पढ़ सकना। बच्चों से अभ्यास करवाना।
- बच्चों को स्वयं की शैली में गाने के लिए प्रोत्साहित करना।
- गद्य भाग के विभिन्न पाठों को स्वयं समझाने के बजाय बच्चों से पढ़वाना चाहिए। चर्चा कराना, उसका सारांश कहलवाना। एक विधा से दूसरी विधा में बदलवाना आदि कार्य करवाने चाहिए।
- स्वयं प्रश्न पत्र तैयार कर परीक्षा लें। उत्तर-पुस्तिका जाँच कर विश्लेषण करें।
- कक्षा-कक्ष में बहुभाषिकता का वातावरण होता है, इसीलिए बच्चों को उनकी अपनी-अपनी भाषाओं में बात कराते हुए हिन्दी से तुलना करना।

कथन का सार पहचानना।

- भाषा अध्ययन में विचार प्रकट करना, व्यक्त करना मुख्य है इसीलिए पद्य भाग, गद्य भाग दोनों पर बच्चों से विचार प्रकट कराना आवश्यक है।
- प्राथमिकोन्नत स्तर के प्रारंभ में पढ़ना, लिखना न जानने वाले बच्चे होते हैं। इस प्रकार के बच्चों को पढ़ना, लिखना सिखाने की योजना तैयार कर उसे अमल में लाना चाहिए।
- पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त पुस्तकालय-पुस्तकें, मैगज़ीन, पत्रिकाएँ आदि कक्षा-कक्ष में प्रचूर मात्रा में रखनी चाहिए। बच्चों से पढ़वाना चाहिए।
- बच्चों को गृहकार्य के रूप में देख कर लिखने के अभ्यास देने के बदले, बच्चों द्वारा किसी अंश पर स्वयं लिखने वाले अभ्यास देने चाहिए।
- बच्चों द्वारा लिखी गयी नोटबुक को यांत्रिक रूप से न देखकर, उनके द्वारा लिखे गये आधार पर नोटबुक में रिमार्क लिखना चाहिए।
- कक्षा-कक्ष में बच्चों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति के लिए दीवार-पत्रिका लगानी चाहिए। बच्चों द्वारा लिखी गयी कविताएँ, कहानियाँ, गीत, चुटकुले आदि दीवार पत्रिका पर प्रदर्शित करना।
- कम से कम सप्ताह में एक बार व्यावहारिक रूप से बच्चों केद्वारा लिखवा कर उस पर चर्चा करवायें। तत्पश्चात् बच्चों द्वारा लिखवाकर संकलन रूप में पुस्तक तैयार कर कक्षा-कक्ष में प्रदर्शित करें।
- पाठ से संबंधित संदर्भों को एकत्रित करना, लिखने से संबंधित परियोजना कार्य को मास में एक बार कक्षा-कक्ष में प्रदर्शित करें।

(ऊ) आकलन

- सतत समग्र मूल्यांकन का निर्वाहण करना चाहिए।
- इसमें छात्रों द्वारा किये गये दत्त कार्यों को, परियोजनाओं को और उनके द्वारा लिखित सामाग्री को ध्यान में रखकर उनका आकलन करना चाहिए।
- इसमें छात्रों के मौखिक भाषा क्षमताओं का आकलन करना चाहिए।
- इसमें छात्रों के लिखित व सृजनात्मक दक्षताओं का आकलन करना चाहिए।

(ऋ) भाषा संसाधन - सहायक ग्रंथ, सामग्री

- विभिन्न भाषाओं की पाठ्य-पुस्तकें।
- मैगज़ीन
- बाल-साहित्य
- बच्चों से संबंधित साप्ताहिक, मासिक पत्रिका
- त्यौहार, दर्शनीय स्थल, महान् व्यक्तियों के जीवन चरित्र से संबंधित पुस्तकें।
- आधुनिक सांकेतिक सामग्री - टी.वी., डी.वी.डी., सी.डी, टेपरिकार्डर, रेडियो आदि।

कई अध्ययनों से पता चला है कि द्विभाषी क्षमता संज्ञानात्मक वृद्धि, सामाजिक सहिष्णुता, विस्तृत चिंतन और बौद्धिक उपलब्धियों के स्तर को बढ़ा देती है। सामाजिक और राष्ट्रीय स्तर पर बहुभाषिकता एक ऐसा संसाधन है जिसकी तुलना किसी भी अन्य राष्ट्रीय संसाधन से की जा सकती है।

- भाषा शिक्षण बहुभाषिक होना चाहिए, केवल कई भाषाओं के शिक्षण के ही अर्थ में नहीं, बल्कि रणनीति तैयार करने के लिहाज से भी ताकि बहुभाषिक कक्षा को एक संसाधन के तौर पर प्रयोग में लाया जाए।
- बच्चों की घरेलू भाषा(एँ), जैसा कि 3.1 में पारिभाषित किया गया है, स्कूल में शिक्षण का माध्यम होना चाहिए।
- अगर स्कूल में उच्चतर स्तर पर बच्चों की घरेलू भाषा(ओं) में शिक्षण की व्यवस्था न हो, प्राथमिक स्तर की स्कूली शिक्षा अवश्य घरेलू भाषा(ओं) के माध्यम से ही दी जाए। यह आवश्यक है कि हम बच्चे की घरेलू भाषाओं को सम्मान दें। हमारे संविधान की धारा 350-क के मुताबिक, 'प्रत्येक राज्य और राज्य के भीतर प्रत्येक स्थानीय प्राधिकारी के प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा की पर्याप्त सुविधाओं की व्यवस्था करने का प्रयास करेगा।'
- बच्चे प्रारंभ से ही बहुभाषिक शिक्षा प्राप्त कर सकेंगे। त्रिभाषा फॉर्मूला को उसके मूलभाव के साथ लागू किए जाने की ज़रूरत है, ताकि वह बहुभाषी देश में बहुभाषी संवाद के माहौल को बढ़ावा दे।
- गैर-हिंदी भाषी राज्यों में, बच्चे हिंदी सीखते हैं। हिंदी प्रदेशों के मामले में, बच्चे वह भाषा सीखें जो उस इलाके में नहीं बोली जाती है। इन भाषाओं के अलावा आधुनिक भारतीय भाषा के रूप में संस्कृत का अध्ययन भी शुरू किया जा सकता है।
- बाद के स्तरों पर शास्त्रीय और विदेशी भाषाओं से परिचय करवाया जा सकता है।

संवैधानिक प्रावधान और त्रिभाषा सूत्र

भूमिका

इस अध्याय में हम भाषा के संबंध में भारतीय संविधान के प्रावधानों और त्रिभाषा सूत्र पर बात करेंगे। हमारे विचार से त्रिभाषा सूत्र को कार्यान्वित करते समय राज्य के भीतर और राज्यों के बीच लचीलेपन को तरज़ीह देनी चाहिए।

संवैधानिक प्रावधान

भारतीय संविधान के सत्रहवें भाग में धारा 343 से 351 तक तथा 8 वीं अनुसूची में भाषाओं के मुद्दों को सम्मिलित किया गया है। धारा 343 (1) के अनुसार, ''भारत की राजभाषा देवनागरी लिपि में हिंदी होगी।'' साथ ही हिंदी के विकास के लिए कुछ दिशा-निर्देश भी दिए गए हैं: ''हिंदी भाषा का इस तरह विकास और प्रोत्साहन दिया जाए ताकि यह भारत की सामाजिक संस्कृति के सभी तत्वों को अभिव्यक्ति प्रदान कर सकने वाला माध्यम बन सकें।'' (धारा 351)

यहाँ गौरतलब है कि हिंदी हमारी राजभाषा है, संविधान की धारा 343(2) के अनुसार सभी कार्यालयी कार्यों के संपादन हेतु अंग्रेज़ी को पंद्रह वर्षों तक प्रयोग करने की बात की गई हैं। लेकिन 1965 तक आते-आते हिंदी व आर्य-वर्चस्व के खतरे को भाँपते हुए दक्षिण भारत में व्यापक स्तर पर दंगे फ़साद हुए। इससे पता चला कि अंग्रेज़ी ही रहेगी। साथ ही संविधान प्रत्येक नागरिक को अपनी भाषा में राज्य को संबोधित करने का अधिकार प्रदान करता है। धारा 350 ए (सातवें संशोधन अधिनियम, 1956) में, प्राथमिक स्तर की शिक्षा के लिए भाषिक अल्पसंख्यक समुदाय के बच्चों को उनकी मातृभाषा में पठन-पाठन की बात की गई है। हम यहाँ इस बात की ओर भी ध्यान देंगे कि 8 वीं अनुसूची का शीर्षक 'भाषाएँ' है। इसके खुलेपन का सबूत है कि पिछले पचास वर्षों में इसमें शामिल भाषाओं की संख्या चौदह से बाईस हो गई। ऐसा प्रतीत होता है कोई भी भाषा जो देश में कहीं भी प्रयुक्त हो रही है वैधानिक रूप से 8वीं अनुसूची का भाग हो सकती है।

हिंदी हमारी राजभाषा है, संविधान प्रत्येक नागरिक को अपनी भाषा में राज्य को संबोधित करने का अधिकार प्रदान करता है, भाषिक अल्पसंख्यक समुदाय के बच्चों को उनकी मातृभाषा में पठन-पाठन की बात की गई है।

भाषाओं की बहुलता और कई महत्वपूर्ण कार्यों में अंग्रेज़ी की बढ़ती जा रही उपयोगिता ने साबित कर दिया है कि बहुभाषी समाज में भागीदारी सुनिश्चित कराने वाली और जनतांत्रिक व्यवस्था के बने रहने के लिए भाषा के मामले में कोई सीधा-सरल समाधान प्रस्तुत नहीं किया जा सकता। औपनिवेशिक शासन की अवधि के दौरान प्रयुक्त अंग्रेज़ी ने इतना लंबा सफर तय कर लिया है कि इससे अभी औपनिवेशिकता की गंध अब खत्म हो गई है और इसलिए इसके प्रति प्रतिक्रियावादी रुख भी तेज़ी से लुप्त होते गए हैं। अब रोज़गार के अवसर प्रदान कराने एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर संपर्क भाषा के रूप में बढ़ रहे इसके प्रयोग ने इसकी महत्ता को और बढ़ा दिया है। दूसरी तरफ़, देश के शैक्षाणिक और सत्ता संरचना मे ंअनेक अल्पसंख्यक व आदिवासी भाषाएँ अपनी प्रबल दावेदारी के साथ शामिल होने के लिए उभरकर सामने आ रही हैं। साथ ही राष्ट्रीय स्तर पर संपर्क भाषा के रूप में हिंदी भी लगातार फैल रही है।

VII पाठ्यक्रम योजना - चतुर्थ चरण (कक्षा 9 और 10)

अ) अपेक्षित दक्षताएँ

(i) प्रथम भाषा - अपेक्षित दक्षताएँ

(ii) द्विवितीय भाषा - अपेक्षित दक्षताएँ

आ) पाठ्यपुस्तकें

इ) पाठ्यांश विवरण

ई) अधिगम वातावरण - अभ्यसन प्रक्रियाएँ

उ) अध्यापक सन्नद्धता - दायित्व

ऊ) आकलन

ऋ) भाषा संसाधन - सहायक ग्रंथ, सामग्री

तकनीकी का उपयोग

तकनीकी का विवेकपूर्ण उपयोग शिक्षा कार्यक्रमों की पहुँच को बढ़ा सकता है। व्यवस्था के प्रबंधन में सहायता कर सकता है और शिक्षा संबंधी विशिष्ट आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकता है। उदाहरण के लिए, मास-मीडिया के उपयोग से शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रम को मदद पहुँचाई जा सकती है, कक्षा शिक्षा में सुधार किया जा सकता है और प्रचार के लिए भी इसका इस्तेमाल किया जा सकता है। दूरस्थ शिक्षा, स्व-शिक्षा, और शिक्षा के दोहरे तरीकों को भी तकनीक का लाभ मिल सकता है, अगर इन प्रक्रियाओं को सूचना संप्रेषण तकनीक के माध्यम से संभव बनाया जाए। इंटरनेट के बढ़ते उपयोग ने सूचना का प्रवाह तो तेज़ किया ही है, वाद-विवाद और संवाद को भी बढ़ावा दिया है जो पहले इतनी मात्रा में उपलब्ध नहीं था। विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों की शिक्षा को ध्यान में रखते हुए भी तकनीकी नवोन्मोषों की ज़रूरत है। तकनीकी को शिक्षा कार्यक्रमों के वृहद् उद्‌देश्यों एवं प्रक्रियाओं का हिस्सा बनाए जाने की ज़रूरत है न कि बाहर से जोड़े जाने वाली कोई चीज़ बनाए रखने की। इस संदर्भ में, जब तकनीकी के उपयोगों में शिक्षक और विद्‌यार्थी को महज़ उपभोक्ता और तकनीकी ऑपरेटर बना दिया है। इस वृत्ति को पुनरीक्षित एवं हतोत्साहत किया जाना चाहिए। परस्पर संवाद और आत्मीयता, गुणवत्ता वाली शिक्षा की कुंजी है और किसी पाठ्‌यचर्या सुधार में इस सिद्‌धांत के साथ समझौता न किया जाए।

VII पाठ्यक्रम योजना - चतुर्थ चरण (कक्षा 9 और 10)

(अ) अपेक्षित दक्षताएँ - प्रथम भाषा

दक्षता	कक्षा - नवीं	कक्षा - दसवीं
अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया	♦ भारतीयों की विशेषता, भारत में बहनेवाली मुख्य नदियाँ, क्रम देना, भाव बताना, पक्षियों के नाम बताना, संगीत की जानकारी एवं मनोरंजन का साधन, किसने-किससे कहा, अनुच्छेद के आधार पर प्रश्नों के उत्तर देना, संयुक्त राष्ट्र संघ के बारे में जानना, अपने विचार बताना, अनुच्छेद के आधार पर प्रश्न बनाना, नदियों से लाभ, ॠतुओं पर पर्वतों का नियंत्रण, जोड़ी बनाकर भाव बताना, पद्यांश के आधार पर प्रश्नों के उत्तर देना, खेल मनोरंजन का साधन-अपने विचार बताना, मनपसंद खेल के बारे में वर्णन करना, पाठ पढ़कर उत्तर देना, पत्र कैसे भेजें जाते हैं?, संदर्भानुसार शुभकामनाएँ देना, जीवन में खुश रहने का महत्व, पंक्तियों का भाव स्पष्ट करना, पद्यांश का भाव बताना, त्यौहार-सद्भावना का विकास, बच्चों की खुशियाँ आदि का महत्व, महिनों के नाम जानना, प्रमुख हिंदी कवियों के नाम बताना, भाव से संबंधित दोहा लिखना, अंतरिक्ष के बारे में जानकारी प्राप्त करना, रिक्त स्थान भरना, उपभोक्ता के महत्व को जानना, ग्राहकों की भलाई में सरकार का योगदान आदि।	♦ वर्षा, बादल, वाक्य उचित क्रम में लिखना, भाव की पंक्तियाँ लिखना, पद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर देना, बाल स्वभाव से जुड़े प्रश्न, हाँ या नहीं में उत्तर देना, गीत के बारे में पसंद-नापसंद बताना, मुख्य शब्द पहचानना, पद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर देना, भाव से संबंधित कविता की पंक्तियाँ चुनकर लिखना, पद्यांश पढ़कर प्रश्न के उत्तर लिखना, हिंदी से संबंधित प्रश्न के उत्तर देना, पाठ पढ़कर प्रश्न के उत्तर देना, पाठ के आधार पर उचित क्रम देना, संविधान में महिलाओं के स्थान संबंधित अनुच्छेद का उत्तर देना, आचार्य विनोबा भावे के बारे में अनुच्छेद का उत्तर देना, ध्वनि साम्य शब्द, भाव स्पष्ट करना, आदि प्रश्नों के उत्तर देना, पंक्तियों की व्याख्या करना, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय भारत सरकार के विज्ञापन के प्रश्नों के उत्तर देना, अब्दुल कलाम, टेसी थॉमस से संबंधित प्रश्नों के उत्तर देना, भाषा की सांकेतिकता से संबंधित प्रश्नों के उत्तर देना आदि।

(अ) अपेक्षित दक्षताएँ - प्रथम भाषा

दक्षता	कक्षा - नवीं	कक्षा - दसवीं
अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता	♦ पाठ के विषय से संबंधित क्यों? कैसे? कब? क्या? आदि प्रश्नों के उत्तर लिख सकते हैं, कविता पाठ का सार अपने शब्दों में लिखना, पाठ के आधार पर कौनसी भावना, प्रश्न विचार अच्छा लगा उसके बारे में लिख सकते हैं, भिन्न-भिन्न भावनाओं के अंतर्गत कविता, अपने विचार लिख सकते हैं, उचित अनुचित में अंतर पहचान सकते हैं, विधा बदलकर लिख सकते हैं, किसी के योगदान के बारे में लिख सकते हैं, त्यौहार या पर्व के समय शुभकामनाएँ लिख सकते हैं, विविध संदर्भो के अंतर्गत नारे लिख सकते हैं। उपभोक्ता के महत्व को जानना, ग्राहकों की भलाई में सरकार का योगदान आदि।	♦ प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में देना, प्रकृति सौंदर्य पर एक छोटी सी कविता लिखना, सावन संबंधित कविता का वर्णन करना, बड़े-बुज़ुर्गों के प्रति श्रद्धा-आदर और स्नेह भावनाओं का महत्व अपने शब्दों में बताना, धरती को स्वर्ग बनाने संबंधी विचारों पर सहयोग व्यक्त करने के बारे में लिखना, विश्व शांति की राह में समर्पित किसी महान व्यक्ति का साक्षात्कार लेना, सत्य, अहिंसा, त्याग आदि भावनाओं का हमारे जीवन में क्या महत्व है, की प्रशंसा के बारे में अपने विचार व्यक्त करना, अनुचित तरीके से धन अर्जित करने वाले व्यक्ति के बारे में विचार बताना, मज़दूरों के अधिकारों का वर्णन अपने शब्दों में लिखना, कहानी अपने शब्दों में लिखना, लोकगीत संबंधी प्रश्नों के उत्तर देना, हिंदी संबंधित प्रश्नों के उत्तर देना, हिंदी को राष्ट्रीय एकता के बारे में बताना, हिंदी भाषा पर निबंध लिखना, मनोरंजन की दुनिया में हिंदी के महत्व पर प्रकाश डालना, तुलना करने की क्षमता का विकास आदि।

(अ) अपेक्षित दक्षताएँ - प्रथम भाषा

दक्षता	कक्षा - नवीं	कक्षा - दसवीं
अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता		♦ भक्ति भावना से संबंधित छोटी सी कविता का सृजन करना, भक्ति के द्‌वारा मानवीय मूल्यों का विकास करना, एकांकी के आधार पर देशभक्तिपरक घटनाओं की मिसाल देना, एकांकी को कहानी के रूप में लिखना, साहस, वीरता, आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता के महत्व पर दो-दो वाक्य लिखना, यात्रा के अनुभवों के बारे में लिखना, रहीम द्‌वारा जल के महत्व के बारे में बताना, दोहों का भाव बताना, उसी के आधार पर सूक्तियाँ लिखना, शीर्षक का समर्थन करना, जल स्रोतों के रख-रखाव के बारे में बताना, जल संरक्षण के बारे में अपने सुझाव देना, आदर्श छात्र के गुण, साक्षात्कार को उचित शीर्षक देते हुए निबंध के रूप में लिखना आदि।
भाषा की बात	♦ मुहावरो ंका भाव जानते हैं, वाक्य रचना, वाक्य भेद समझ सकते हैं, कारक-विभक्तियों की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं, अव्ययों की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं, अर्थ जानकर वाक्य प्रयोग कर सकते हैं, वचन, समास, पर्यायवाची शब्द, संधि-प्रकार, वाच्य, तत्सम शब्द, काल, प्रत्यय उपसर्ग आदि की जानकारी प्राप्त करके उनका प्रयोग कर सकते हैं।	♦ पर्यायवाची, तत्सम, तद्‌भव, पुनरुक्ति शब्द, अंतर स्पष्ट करना, पद परिचय, समास, अलंकार समझाना, उपसर्ग, प्रत्यय, भाववाचक संज्ञा, उदाहरण के आधार पर वाक्य बदलना, मुहावरों का प्रयोग करना, संधि-विच्छेद, काल, संयुक्त क्रियाएँ, लिंग, वचन, कारक, छंद आदि के बारे में समझाना, अर्थ के आधार पर वाक्य पहचानना आदि।

(अ) अपेक्षित दक्षताएँ - दृ्वितीय भाषा

दक्षता	कक्षा - नवीं	कक्षा - दसवीं
अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया	♦ नीतिपरक दोहों का महत्व, पाठ आधारित प्रश्नोत्तर, भाव स्पष्ट करना, नैतिक मूल्य, अनुच्छेद पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखना, दोहे पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखना, कथनों की व्याख्या, कृषि का महत्व, बलिदान का महत्व, कविता पढ़कर प्रश्नों के उत्तर देना, पर्यावरण प्रदूषण की जानकारी, पशु-पक्षियों का महत्व, विज्ञापनों का महत्व, यात्रावर्णन, बच्चों की अशिक्षा का देश के भविष्य पर प्रभाव, बचपन आदि।	♦ पद्यांशों के आधार पर प्रश्नों के उत्तर देना, देशभक्ति, सामाजिक विकास व सुधार, पंक्तियों की व्याख्या, पाठ आधारित प्रश्न, अपठित गद्यांश पढ़कर उत्तर देना, ऋतुओं का महत्व, पंक्तियाँ उचित क्रम में लिखना, संदर्भ सहित व्याख्या करना, समाचार पढ़कर मुख्य बिंदु लिखना, कृत्रिम रसायनों के प्रयोग से होने वाले हानिकारक परिणाम, कला का परिचय, बाल अधिकार, पर्यावरण संरक्षण, स्त्री साधिकारिता, पंक्तियों का भाव स्पष्ट करना आदि।
अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता	♦ पाठ आधारित प्रश्नोत्तर, सूक्तियों का निर्माण कर दीवार पत्रिका बनाना, उपदेशों का महत्व, नैतिक मूल्यों का महत्व, वार्तालाप, दोहों को गीत प्रणाली में गाना, डायरी में लिखना, सामाजिकता, नैतिकता को बचाये रखना, कहानी को संवाद रूप में लिखना, भारतीय संस्कृति की कुछ विशेषता, प्राकृतिक संदर्भ का वर्णन करते हुए छोटी कविता का सृजन, स्त्री शिक्षा का महत्व, आत्मकथा, पशु-पक्षियों के प्रति प्रेम, नारे, रेडियो समाचार तैयार करना,	♦ बरसते बादल कविता का प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन करना प्रकृति सौंदर्य पर छोटी सी कविता लिखना, ईदगाह कहानी का सारांश अपने शब्दों में लिखना, घटना या संवाद के रूप में घटना वृत्तांत लिखना, विश्व शांति की राह में समर्पित किसी महान व्यक्ति का साक्षात्कार लेना, हिंदी संबंधित प्रश्नों के उत्तर देना, हिंदी को राष्ट्रीय एकता के बारे में बताना, प्रश्न के उत्तर पाँच-छह पंक्तियों में देना, प्राकृतिक सुंदरता का वर्णन, तुकांत शब्दों की तालिका, चित्र का वर्णन करते हुए कविता लिखना, प्रकृति की प्रशंसा करना, बातचीत को संवाद रूप में लिखना, देशभक्ति की भावना का विकास, समाज में स्त्री शिक्षा का महत्व, भाषण लेख, ऋतुओं का वर्णन, अलंकारों का परिचय, कविता को संवाद रूप में लिखना, नैतिक गुणों का महत्व, मानव संस्कृति की विशेषता, निबंध लेखन, नैतिक, सामाजिक व मानवीय मूल्यों का संरक्षण कहानी लेखन, लेख

(अ) अपेक्षित दक्षताएँ - द्‌वितीय भाषा

दक्षता	कक्षा - नवीं	कक्षा - दसवीं
अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता	साहसी कार्यों पर अनुच्छेद लिखना, कविता लिखना, लेख तैयार करना, प्रकृति संरक्षण, जीव-जंतुओं के प्रेम, सेवा का महत्व, विज्ञापन तैयार करना, विज्ञापनों का महत्व, हस्तकला का संरक्षण, यात्रा-वृत्तांत, किसी साहसिक कार्य का वर्णन, अधिकारों के प्रति जागरूकता, संस्मरण, जागरूकता का महत्व आदि।	लिखना, समाज के विकास में महिलाओं का योगदान, चित्र देखकर प्रयोग दायक प्रसंग लिखना, कर्मठ व्यक्ति के बारे में समाचार एकत्र करना, विशिष्ट योग्यता वाले व्यक्तियों की प्रशंसा, समावेशी शिक्षा का महत्व, साक्षात्कार को निबंध के रूप में लिखना आदि।
भाषा की बात	♦ तत्सम रूप, मुहावरे, लिंग, खान-पान की जानकारी, भाषा का शुद्‌ध रूप, निपात, वाक्य भेद, वर्तनी, संधि, वाक्य प्रयोग, क्रिया के भेद, युग्म शब्द, क्रिया विशेषण, पर्याय शब्द, प्रश्नवाचक वाक्य, उपसर्ग, प्रत्यय आदि।	♦ वाक्य प्रयोग, विलोम, तद्‌भव, पर्यायवाची, प्रत्यय, संधि विच्छेद, उपसर्ग, विशेषण, मुहावरे, उत्पत्ति की दृष्टि से शब्द, कारक, समास, निपात, तालिका बनाना, निजवाचक सर्वनाम, शब्दार्थ, युग्म शब्द, भिन्नार्थी शब्द, अर्थ की दृष्टि से वाक्य, वचन, लिंग, शब्दकोश क्रम में लिखना, अलंकार, कहावतें, वाच्य, विभक्ति का लोप, तुकबंदी शब्द, दोहा, चौपाई, छंद, प्रश्नवाचक शब्द, शब्द-संक्षेप, विराम चिह्न, समुच्चरित शब्द, मिश्र वाक्य, अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद, पदबंध, पद परिचय, काल आदि।

(आ) पाठ्यपुस्तकें

- इस स्तर पर पुस्तकों के पाठ्यांशों को पद्य, गद्य भाग में विभाजित नहीं करना चाहिए।
- प्रमुख कवि, रचयिता, प्राचीन, आधुनिक साहित्य को पाठ्यांश में सम्मिलित करना चाहिए।
- लिए गये पाठ्यांश बच्चों के जीवन के निकट स्तर के अनुसार हो।
- पाठ्यांश कम से कम 3 से 8 पृष्ठ तक हो सकते हैं। 20% चित्र होने चाहिए।
- पाठों की संख्या का भार न हो। केवल दस से पंद्रह के औसत में पाठ होने चाहिए।
- अभ्यास पुस्तिका में पाठों के पश्चात् अभ्यास होने के बावजूद, पाठ से पहले बच्चों द्वारा पाठ पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करने वाले चित्र, प्रश्न होने चाहिए। भाषा की बात के अंतर्गत छंद व अलंकार का संक्षिप्त परिचय मात्र दिया जाय।
- अभ्यास कार्य मुख्य रूप से भाषा कौशल प्राप्त करने के लिए व सृजनात्मकता विकसित करने वाले होने चाहिए।
- अभ्यास कार्य स्व अध्ययन, अन्य पठन सामग्री पढ़ने के लिए प्रेरित करने वाले होने चाहिए।
- पाठ के पहले/नीचे अर्थ लिखने के बजाय संदर्भानुसार अर्थग्रहण करने वाले अभ्यास होने चाहिए।
- विस्तार पूर्वक पढ़ने के लिए पुस्तक में ही 'द्रुतपाठ व पठन हेतु पाठ' होने चाहिए।
- पाठ्यपुस्तक में मानवता, आत्मगौरव, स्व-परिश्रम, सहपाठी को समान भाव से देखना, गौरव प्रदान करना, देश भक्ति, शिशु संरक्षण, बौद्धिक कौशल आदि गुण विकसित करने वाले पाठ्यांश होने चाहिए।

पाठ्यांश बच्चों में निम्न अंशों में संवेदनशीलता बढ़ाने वाले होने चाहिए।

- पर्यावरण संरक्षण
- प्राकृतिक संपदा की रक्षा करना
- बढ़ती जनसंख्या
- प्राकृतिक आपदाओं का सामना करने में समर्थ होना
- स्त्री, पुरुष में समानता
- सावधानी बरतना
- इस स्तर में अन्य भाषाओं की अनुवादित कहानियाँ, साहित्य विधाएँ आदि पाठ्यांश में सम्मिलित करना।

(इ) पाठ्यांश विवरण

विषय सूची

कक्षा - नौ (प्रथम भाषा)

क्र.सं.	भाव	विधा	पाठ का नाम	कवि/लेखक
1.	प्रेम	कविता	कबीर के दोहे	कबीर
2.	बालस्वभाव	कहानी	वह आवाज़	विष्णु प्रभाकर
3.	नीति	कविता	वृंद	वृंद
4.	हास्य	कहानी	तुम कब जाओगे अतिथि	शरद जोशी
5.	समानता	कविता	ललद्यद	ललद्यद
6.	जीव प्रेम	कहानी	दो बैलों की कथा	प्रेमचन्द
7.	राष्ट्रीयता	कविता	कैदी और कोकिला	माखनलाल चतुर्वेदी
8.	देश प्रेम	रिपोर्ताज़	नाना साहब की पुत्री	चपलादेवी
9.	ग्राम सौंदर्य	कविता	ग्रामश्री	सुमित्रानंदन पंत
10.	जीवन कौशल	संस्मरण	साँवले सपनों की याद	जाबिर हुसैन
11.	जीव प्रेम	निबंध	एक कुत्ता और एक मैना	ह.प्र. द्विवेदी
12.	सामाजिक	निबंध	उपभोक्तावाद की संस्कृति	श्यामचरण दूबे
13.	श्रमिक सौंदर्य	कविता	खुशबू रचते हैं हाथ	अरुण कमल
14.	प्रकृति	यात्रा वृत्तांत	ल्हासा की ओर	राहुल सांकृत्यायन
15.	बालश्रम	कविता	बच्चे काम पर जा रहे हैं	राजेश जोशी
16.	धार्मिक	संस्मरण	मेरे बचपन के दिन	महादेवी वर्मा

उपवाचक - 4

(इ) पाठ्यांश विवरण

कक्षा - दस (प्रथम भाषा)

क्र.सं.	भाव	विधा	पाठ का नाम	लेखक/कवि	व्याकरणांश
1.	प्रकृति	कविता	सुंदर भारत	श्रीधर पाठक	पर्याय, विलोम, तद्भव, प्रत्यय, संधि, उपसर्ग, संख्यावाचक विशेषण, मुहावरे
2.	देशभक्ति	कहानी	नेताजी का चश्मा	स्वयंप्रकाश	पर्याय, विलोम, विदेशी शब्द, संधि, समास, निपात, मुहावरे, निजवाचक सर्वनाम
3.	जीवन मूल्य	आत्मकथा	एक कहानी यह भी	मन्नू भंडारी	पर्याय, शब्दार्थ, मुहावरे, युग्म, संधि, समास, तद्भव, भिन्नार्थी, विशेषण, अर्थ की दृष्टि से वाक्य
(उपवाचक)	विज्ञान	एकांकी	मंगल, मानव और मशीन	विनोद रस्तोगी	——
4.	पर्यावरण	कविता	कवित्त	पद्माकर	पर्याय, वचन, लिंग, प्रत्यय, समास, अनुप्रास अलंकार, यमक अलंकार

(इ) पाठ्यांश विवरण

क्र.सं.	भाव	विधा	पाठ का नाम	लेखक/कवि	व्याकरणांश
5.	हास्य	कहानी	गोभी का फूल	केशवचंद्र वर्मा	पर्याय, पुनरुक्ति शब्द, मुहावरे, कहावत, समास, वाच्य, वचन
6.	जीवन कौशल	कविता	राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद	तुलसीदास	पर्याय, विलोम, वचन, समास, दोहा छंद, चौपाई छंद
7.	कला	निबंध	कला का स्वभाव	अज्ञेय	पर्याय, विलोम, प्रत्यय, वचन, संधि, समास, प्रश्न वाचक, शब्द संक्षेप, विराम चिह्न
(उपवाचक)	मानव मूल्य	कहानी	बड़े भाई सहाब	प्रेमचंद	———
8.	एकता	कविता	अन्वेषण	रामनरेश त्रिपाठी	पर्याय, विलोम, संधि, समास, वचन, उपसर्ग
9.	सामाजिकता	संपादकीय	बच्चों से न छीने उनका हक़	——	विलोम, लिंग, शब्द संक्षेप
10.	पर्यावरण	नाटक	बाल अदालत	——	पर्याय, प्रत्यय, वचन, संधि, मुहावरे, अनुवाद, शब्द संक्षेप, प्रश्नवाचक पदबंध
(उपवाचक)	मानव स्वभाव	अनूदित कहानी	गुड़ियों का त्यौहार	विजय राघव रेड्डी	———

(इ) पाठ्यांश विवरण

क्र.सं.	भाव	विधा	पाठ का नाम	लेखक/कवि	व्याकरणांश
11.	स्त्री सशक्तीकरण	कविता	कन्यादान	ऋतुराज	अर्थ, पर्याय, लिंग, प्रत्यय, समास, पद परिचय, विशेषण बनाना
(उपवाचक)	मनोवैज्ञानिकता	कहानी	साये	हिमांशु जोशी	———
12.	प्रेरणा	कविता	बाट की पहचान	हरिवंशराय बच्चन	पर्याय, शब्दार्थ, विलोम, उपसर्ग, विशेषण, काल, नकारात्मक वाक्य
13.	सामाजिकता	साक्षात्कार	सफलता की चुनौतियाँ	—	पर्याय, वचन, विलोम, लिंग, संधि, समास, कर्मवाच्य, अनुवाद
(उपवाचक)	प्रहसन	कहानी	गजनंदनलाल पहाड़ चढ़े	विष्णु प्रभाकर	———

शांति गतिविधियों के लिए सुझाव

- स्कूल में विशेष क्लबों और रीडिंग रूम की स्थापना की जाए जो शांति संबंधी समाचारों पर और ऐसी घटनाओं पर केंद्रित हो जो सामाजिक न्याय और समानता के विरुद्ध हों।
- ऐसी फिल्मों की सूची तैयार की जाए जो न्याय और शांति के मूल्यों को बढ़ावा देती हों। उन्हें समय-समय पर स्कूल में दिखाया जाए।
- शिक्षा में शांति के प्रयास में मीडिया को सहयोगी बनाया जाए। प्रमुख पत्रकारों को बच्चों को संबोधित करने के लिए बुलाया जाए। बच्चों के विचार कम से कम महीने में एक बार छपें।
- स्कूल में धार्मिक और सांस्कृतिक विविधता के उत्सवों का आयोजन किया जाए।
- ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन किया जाए जिससे महिलाओं के प्रति सम्मान और उत्तरदायित्व की भावना का विकास हो।

(इ) पाठ्यांश विवरण

विषय सूची

कक्षा – नौ (द्वितीय भाषा)

क्र.सं.	भाव	विधा	पाठ का नाम	लेखक/कवि	व्याकरणांश
1.	संस्कृति	गीत	जिस देश में गंगा बहती है	शैलेंद्र कुमार	मुहावरे,वाक्य के भेद (सरल, संयुक्त वाक्य)
2.	सामाजिक	कहानी	गानेवाली चिड़िया	—	मुहावरे, कारक
3.	पर्यावरण	भाषण-लेख	बदलें अपनी सोच	—	पर्यायवाची शब्द, समुच्चय बोधक
4.	नौतिक	कविता	प्रकृति सीख	सोहनलाल द्विवेदी	विपरीतार्थक शब्द, प्रत्यय
5.	नैतिक	निबंध	फुटबॉल	—	वाक्य के भेद, शब्द पहेली
6.	ऐतिहासिक	पत्र	बेटी के नाम पत्र	—	वचन, उचित शब्द चयन
7.	जीवन कौशल	कविता	मेरा जीवन	सुभद्रा कुमारी चौहान	समास, समास के भेद
8.	ऐतिहासिक	कहानी	यक्ष प्रश्न	-	संधि, संधि के प्रकार
9.	संस्कृति	निबंध	रमज़ान	-	वाच्य
10.	नैतिक	दोहे	अमर वाणी	कबीर व वृंद	
11.	वैज्ञानिक	साक्षात्कार	सुनीता विलियम्स	-	काल
12.	जागरुकता	संवाद	जागो ग्राहक जागो	-	

उपवाचक – 4

कंप्यूटर विज्ञान

आधुनिक समाज को गढ़ने में कंप्यूटर और कंप्यूटिंग टैक्नोलॉजी का जो जबर्दस्त प्रभाव है, उससे इस प्रकार की शिक्षित जनता की ज़रूरत पैदा हो गई है जो समाज और मनुष्य जात की बेहतरी के लिए ऐसी प्रौद्योगिकी का प्रभावी इस्तेमाल कर सके। इसलिए इस बात को समझा जा रहा है कि ज्ञान के इन क्षेत्रों को स्कूली पाठ्यचर्या में जगह मिलनी चाहिए।

(इ) पाठ्यांश विवरण

कक्षा- दस (द्वितीय भाषा)

पाठ्यक्रम

क्र.सं.	भाव	विधा	पाठ का नाम	लेखक/कवि	व्याकरणांश
1.	पर्यावरण	कविता	बरसते बादल	सुमित्रानंदन पंत	पर्याय, तत्सम, तद्भव, पुनरुक्ति, वचन, समास, शब्द संक्षेप, केवल अनुप्रास अलंकार का परिचय
2.	आदर भाव	कहानी	ईदगाह	प्रेमचंद	पर्याय, विलोम, वचन, उपसर्ग, प्रत्यय, मुहावरे
(पठन हेतु)	बौद्धिकता	नाटक	यह रास्ता कहाँ जाता है?	बाबू रामसिंह	——
3.	शांति/प्रेम	कविता	हम भारतवासी	आर.पी.'निशंक'	पर्याय, विलोम, वचन, संधि, समास
(उपवाचक)	शांति,मानव,मूल्य	निबंध	शांति की राह में	संकलित	
4.	श्रम महत्व	कविता	कण-कण का अधिकारी	दिनकर	पर्याय, विलोम, पुनरुक्ति, पद परिचय, लिंग
5.	संस्कृति	निबंध	लोकगीत	भगवतशरण उपाध्याय	पर्याय, वचन, विलोम, प्रत्यय
(पठन हेतु)	बाल स्वभाव	कविता	उलझन	सुरेंद्र विक्रम, दामोदर अग्रवाल	——
6.	भाषा महत्व	पत्र	अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी	संकलित	विलोम, वचन, शब्द संक्षेप, अनेक शब्दों में लिखना
(उपवाचक)	मानव मूल्य	कहानी	दो कलाकार	मन्नू भंडारी	——

पाठ्यचर्या

पूर्व प्राथमिक स्तर पर सारा अधिगम खेल के ज़रिए होता है, उपदेशात्मक संप्रेषण के ज़रिए नहीं।

(इ) पाठ्यांश विवरण

क्र.सं.	भाव	विधा	पाठ का नाम	लेखक/कवि	व्याकरणांश
7.	भक्ति पद	कविता (पद)	भक्ति पद	रैदास व मीरा	वर्तनी, वचन, केवल चौपाई छंद का संक्षिप्त परिचय
8.	ऐतिहासिकता	एकांकी	स्वराज्य की नींव	विष्णु प्रभाकर	पर्याय, विलोम, कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य, उपसर्ग
(पठन हेतु)		कविता	माँ मुझे आने दे!	मृदुल जोशी	——
9.	पर्यटन	यात्रा-वृत्तांत	दक्षिणी गंगा गोदावरी	काका कालेलकर	संधि, समास, अकर्मक और सकर्मक क्रियाएँ
(उपवाचक)	बाल स्वभाव	कहानी	अपने स्कूल को एक उपहार	ऋतु भूषण	——
10.	मानव मूल्य	कविता	नीति दोहे	रहीम व बिहारी	बेमेल शब्द पहचानना, केवल यमक और दोहा छंद का संक्षिप्त परिचय
11.	सामाजिक	कहानी	जल ही जीवन है	श्री प्रसाद	विदेशज शब्द, अर्थ के आधार पर वाक्य
(पठन हेतु)	सामाजिकता	पी.पी.टी.निबंध	क्या आपको पता है?	जेफ ब्रेनमन	——
12.	विज्ञान	साक्षात्कार	धरती के सवाल अंतरिक्ष के जवाब	संकलित	पर्याय, विलोम, संधि, समास
(उपवाचक)	मानव मूल्य	अनूदित कहानी	अनोखा उपाय	डॉ. रावूरि भरद्वाज	——

(ई) अधिगम वातावरण - अभ्यसन प्रक्रियाएँ

- माध्यमिक स्तर के आरंभ में सभी बच्चे पढ़ या लिख सकते हैं या नहीं निर्णय होना चाहिए।
- प्रारंभ के दिनों में अर्थात् 6 सप्ताह में पढ़, लिख सकें ऐसे अभ्यास होने चाहिए।
- बच्चों के पढ़ने लायक कहानी की पुस्तकें, दूविभाषा में लिखी गयी कहानी की पुस्तकें कक्षा-कक्ष में होनी चाहिए।
- समय विभाजन इस प्रकार हो कि सप्ताह में तीन दिन पद्य पाठ व तीन दिन गद्य पाठ पढ़ा सकें।
- बच्चे कविताओं को कंठस्थ करने के साथ-साथ रागयुक्त व भाव पूर्ण ढंग से गा सकें, ऐसे अभ्यास होने चाहिए।
- कक्षा-कक्ष में सामूहिक कार्य व व्यक्तिगत कार्य करवाने चाहिए जिससे बच्चे पाठ्यांशों को पढ़कर उसका अर्थ ग्रहण कर सकें।
- इस स्तर में बच्चों की मौनवाचन द्वारा भावों को ग्रहण करने की आदत बदलनी चाहिए। इसीलिए बच्चों को चाहिए कि पाठ्यपुस्तक के साथ-साथ अन्य पठन सामग्री भी पढ़ें।
- किसी भी पाठ को बच्चे पहले व्यक्तिगत रूप से पढ़ें। कठिन अंशों, शब्दों की पहचाने। उनके बारे में समूह में चर्चा करें। शब्दकोश में ढूँढ़कर अर्थ ग्रहण करें।
- पाठ्यांशों में सामासिक शब्द, जोड़ी वाले शब्द पहचानकर उन्हें अलग करना, मिलाना, चर्चा द्वारा बीच में आने वाले बदलावों को जानना।
- कक्षा-कक्ष में पाठों के संबंधित चर्चा करना। विचार व्यक्त करना। बच्चों द्वारा उस पर प्रतिक्रिया करवाना। सीखने की प्रक्रिया में भाग लेना।
- पाठ्यांशों के नीचे दिये गये अभ्यास स्वयं करना, उनके बारे में चर्चा करना।
- बच्चों द्वारा लिखे गये अंशों पर चर्चा करना।
- सीखने की प्रक्रिया में मुख्य रूप से नीचे दी गयी क्रियाएँ/अभ्यास करवाने चाहिए।

  - पात्र अभिनय
  - नाटकीकरण

- मुख अभिनय
- चित्रों द्वारा प्रदर्शन
- चर्चाएँ
- वाद-विवाद
- पत्रिकाओं के अंश पढ़ना, चर्चा करना आदि।

♦ बच्चे प्रतिदिन उनके द्‌वारा पढ़े सुने, देखे अंशों के बारे में, पाठशाला में अपने अनुभवों के बारे में, अपने विचार अपनी डायरी में लिखें।

♦ बच्चों द्‌वारा अपनी उम्र के अनुरूप उपयुक्त कक्षा में प्रवेश लेने पर उन्हें सहायक सामग्री और विशेष प्रशिक्षण दिया जाय।

♦ बच्चे अपनी लिखित पुस्तिकाओं से स्वरचना लिखें, पाठ्‌य पुस्तक के अभ्यास स्वयं करें।

♦ कक्षा-कक्ष में विधि भाषा के बच्चों को समझाने के लिए उनकी भाषा में समझाएँ, उस भाषा को जानने वाले बच्चों की सहायता से समझाने का प्रयत्न करें।

♦ कक्षा-कक्ष में विशिष्ट बालकों के लिए उपकरण, आदि प्रचुर मात्रा में होने चाहिए।

♦ कक्षा-कक्ष में विविध भाषा के बच्चों को समझाने के लिए उनकी भाषा में समझाएँ, उस भाषा को जानने वाले बच्चों की सहायता से समझाने का प्रयत्न करें।

♦ कक्षा-कक्ष में विशिष्ट बालकों के लिए उपकरण, आदि प्रचुर मात्रा में होने चाहिए।

(उ) अध्यापक सन्नद्‌धता-दायित्व

♦ वार्षिक, मासिक योजना तैयार करना।

♦ 9, 10 कक्षाओं की पुस्तकें पूरी तरह से पढ़ें। पाठ्‌यांश पूरी तरह से समझें।

- नियमित समय में पाठ्यक्रम पूरा करें।
- इस स्तर में भाषा का अध्ययन, भाषा के बारे में पता जानना आरंभ होता है। इसीलिए वाक्य निर्माण, रचना शैली के बारे में जानकारी प्राप्त करें।
- पद्य भाग के पाठ राग व भाव से पढ़ सकना। बच्चों से अभ्यास करवाना।
- बच्चों को स्वयं की शैली में गाने के लिए प्रोत्साहित करना।
- गद्य भाग के विभिन्न पाठों को स्वयं समझाने के बजाय बच्चों से पढ़वाना चाहिए। चर्चा कराना, उसका सारांश कहलवाना। एक विधा से दूसरी विधा में बदलवाना आदि कार्य करवाने चाहिए।
- स्वयं प्रश्न पत्र तैयार कर परीक्षा लें। उत्तर-पुस्तिका जाँच कर विश्लेषण करें।
- कक्षा-कक्ष में बहुभाषिकता का वातावरण होता है, इसीलिए बच्चों को उनकी अपनी-अपनी भाषाओं में बात कराते हुए हिन्दी से तुलना करना। कथन का सार पहचानना।
- भाषा अध्ययन में विचार प्रकट करना, व्यक्त करना मुख्य है इसीलिए पद्य भाग, गद्य भाग दोनों पर बच्चों से विचार प्रकट कराना आवश्यक है।
- माध्यमिक स्तर के प्रारंभ में पढ़ना, लिखना न जानने वाले बच्चे होते हैं। इस प्रकार के बच्चों को पढ़ना, लिखना सिखाने की योजना तैयार कर उसे अमल में लाना चाहिए।
- पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त पुस्तकालय-पुस्तकें, मैगज़ीन, पत्रिकाएँ आदि कक्षा-कक्ष में प्रचूर मात्रा में रखनी चाहिए। बच्चों से पढ़वाना चाहिए।
- बच्चों को गृहकार्य के रूप में देखकर लिखने के अभ्यास देने के बदले, बच्चों द्वारा किसी अंश पर स्वयं लिखने वाले अभ्यास देने चाहिए।
- बच्चों द्वारा लिखी गयी नोटबुक को यांत्रिक रूप से न देखकर, उनके द्वारा लिखे गये आधार पर नोटबुक में टिप्पणियाँ लिखनी चाहिए।
- कक्षा-कक्ष में बच्चों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति के लिए दीवार-पत्रिका लगानी चाहिए। बच्चों द्वारा लिखी गयी कविताएँ, कहानियाँ, गीत, चुटकुले आदि दीवार पत्रिका पर प्रदर्शित करना।
- कम से कम सप्ताह में एक बार व्यावहारिक रूप से बच्चों के द्वारा लिखवाकर उस पर चर्चा करवायें। तत्पश्चात् बच्चों द्वारा लिखवाकर संकलन

रूप में पुस्तक तैयार कर कक्षा-कक्ष में प्रदर्शित करें।

- पाठ से संबंधित संदर्भों को एकत्रित करना, लिखने से संबंधित परियोजना कार्य को मास में एक बार कक्षा-कक्ष में प्रदर्शित करें।

(ऊ) आकलन

- सतत समग्र मूल्यांकन का निर्वाहण करना चाहिए।
- इसमें छात्रों दूवारा किये गये दत्त कार्यों को, परियोजनाओं को और उनके दूवारा लिखित सामाग्री को ध्यान में रखकर उनका आकलन करना चाहिए।
- इसमें छात्रों के मौखिक भाषा क्षमताओं का आकलन करना चाहिए।
- इसमें छात्रों के लिखित व सृजनात्मक दक्षताओं का आकलन करना चाहिए।

- बच्चों के आकलन के लिए हम अब तक केवल परीक्षाओं पर निर्भर हैं। परीक्षाएँ भी बच्चों को आकलन करने के बदले बच्चों को दोषी बताने, हीनभाव उत्पन्न करने दबाव, असमंजसता बढ़ा रही हैं। एक तरह से परीक्षाएँ ही शिक्षा व्यवस्था को शासित कर रही हैं। इस संदर्भ में ए.पी.एस.सी.एफ-2011 इस तरह से प्रस्तावित किया है-
  - मूल्यांकन व परीक्षाएँ बच्चों के केवल आकलन तक सीमित न होकर बच्चों के सीखने में सहायक होनी चाहिए (अर्थात् सीखने के लिए मूल्यांकन)
  - शिक्षा का अधिकार अधिनियम-2009 के अनुसार मूल्यांकन को सतत् समग्र मूल्यांकन (सी.सी.ई) द्वारा किया जाना चाहिए।
  - बच्चों के आकलन के लिए केवल परीक्षाओं तक सीमित न रहकर परियोजना कार्य, प्रदत्त कार्य, पोर्ट फोलियों (छात्र अभिलेख), संगोष्ठी, प्रदर्शन, अनेक्डाट

पठन शुरू करने का कारगर उपागम

- कक्षा में छपी हुई सामग्री की बहुतायत हो, संकेतों, चार्ट, कार्य संबंधी सूचना आदि उसमें लगे हों ताकि विभिन्न अक्षरों की ध्वनियाँ सीखने के साथ वे लिखित संकेतों की पहचान भी कर सकें।
- कल्पनाशील निवेशों की ज़रूरत है, जिसे एक योग्य पाठक हाव-भाव से पढ़े, आदि।
- विद्यार्थियों द्वारा बताए गए अनुभवों का लेखन और उनके द्वारा उस लिखित पाठ का वाचन।
- अतिरिक्त सामग्री का पठन : कहानियाँ, कविता आदि।
- प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को इसका अवसर दिया जाना चाहिए कि वे अपने पाठ स्वयं तैयार करें और स्वयं द्वारा चुने हुए पाठों का कक्षा में योगदान दें।

(शिक्षक अभिलेख), पर्यवेक्षण आदि के भी प्रयोग करें। इन अंशों को वार्षिक परीक्षाओं में समुचित भार निर्धारित करें।

- ♦ इसके लिए मूल्यांकन को शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में समावेशित किया जाये।
- ♦ प्रश्नों के स्वभाव बदलना, रटंत स्वभाव को प्रेरित करने वाले प्रश्नों, पाठ्यपुस्तकों में निहित सूचनाओं तक सीमित प्रश्नों के आधार पर बच्चे स्वयं सोचकर लिखने के लिए, अपने अनुभवों को व्यक्त करने के लिए विविध प्रकार के समाधान देने वाले प्रश्न, दैनिक जीवन से जोड़ने के अनुकूल सोचने वाले प्रश्न होने चाहिए। बच्चे अर्जित ज्ञान को किस हद तक उपयोग कर सकते हैं, इसका आकलन करने आवश्यक कौशलों मूल्यों, रुझानों को बढ़ाने के लिए ए.पी.एस.सी.एफ-2011 दिशा-निर्देश देता है। इसके लिए किये गये आधार पत्रों द्वारा विभिन्न विषयों और अंशों में प्रस्ताव दिये गये हैं। इनको लागू करने के लिए संस्थागत संशोधन करना, इसके लिए सभी वर्ग के लोग शिक्षाविद्, अध्यापक समितियाँ, अध्यापक स्वैच्छिक संस्थाएँ आदि से सदा सूचनाएँ स्वीकार कर आवश्यक संशोधन करते हैं। इसके द्वारा राज्य शिक्षा क्षेत्र में विकसित होकर अग्र स्थान प्राप्त करें ऐसा प्रयास करेंगे।
- ♦ बच्चे स्वयं स्वमूल्यांकन कर सकें। माता-पिता, अपने बच्चों के विकास का परीक्षण कर सकें। इसके लिए खुले मूल्यांकन पद्धति/पारदर्शित मूल्यांकन पद्धति हो।
- ♦ बोर्ड की परीक्षाओं में भी पाठशाला में संचालित सतत् समग्र मूल्यांकन के अंशों को भी समुचित भार प्रदान करें।
- ♦ बोर्ड की परीक्षाओं की उत्तर पुस्तिकाएँ माँगने पर माता-पिता को देना, पुनर्मूल्यांकन करना।
- ♦ सहगामी अंशों, रुझान, मूल्य, कार्य, स्वास्थ्य, खेल आदि का भी मूल्यांकन करना।

व्यवस्थागत संशोधन

- ए.पी.एस.सी.एफ-2011 लागू करने के लिए उपर्युक्त अंशों में बदलाव के साथ नीचे दिये गये व्यवस्थागत संशोधनों को प्रतिपादित किया गया।
  - ♦ प्रशासन और पाठशाला संचालन विकेंद्रीकरण के लिए पंचायतीराज संस्थाओं को भागीदार बनाना।
  - ♦ पाठशाला परिसर में प्रधान अध्यापक के अधीन कार्य करने, ई.सी.ई केंद्रों की स्थापना करना, बच्चों के संरक्षण और स्वास्थ्य संबंधी जिम्मेदारियों को आई.सी.डी.एस विभाग, शिक्षा संबंधी दायित्वों को शिक्षा विभाग स्वीकार करें।

- शिक्षा का अधिकार अधिनियम के निर्देशानुसार सभी पाठशालाओं में मौलिक सुविधाएँ व अध्यापकों की नियुक्ति करना।
- उसी तरह बच्चों के माता-पिता से पाठशाला प्रबंधन समिति का गठन कर पाठशाला संचालन में उन्हें भागीदारी देना।
- योजना, संचालन, निरीक्षण, पैसों का उपयोग आदि सभी अंशों में विकेंद्रीकरण की पद्धति को अमल करना।
- शिक्षा के साथ, अध्यापक सहायता व सहकारिता को प्रबल बनाना।

(ऋ) भाषा संसाधन - सहायक ग्रंथ, सामग्री

- विभिन्न भाषाओं की पाठ्य-पुस्तकें।
- मैगज़ीन
- बाल-साहित्य
- बच्चों के संबंधित साप्ताहिक, मासिक पत्रिका
- त्यौहार, दर्शनीय स्थल, महान् व्यक्तियों के जीवन चरित्र से संबंधित पुस्तकें।
- आधुनिक सांकेतिक सामग्री - टी.वी., डी.वी.डी., सी.डी, टेपरिकार्डर, रेडियो आदि।

❖ ❖ ❖

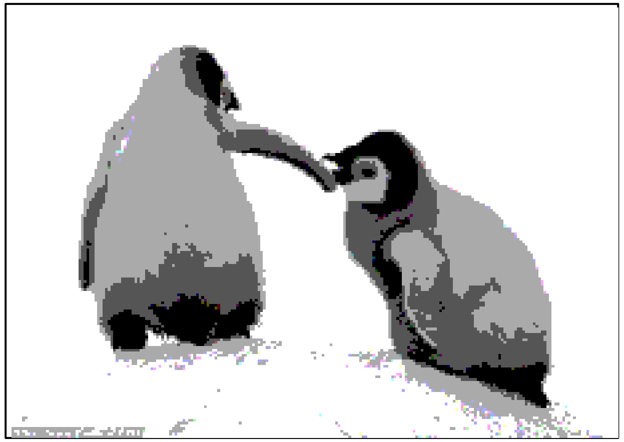

पाठ्य पुस्तकों की बहुलता

पाठ्यचर्या में सार्थक ढंग से बच्चों और उनके विविध सांस्कृतिक संदर्भों को, भाषाओं समेत, शामिल किया जाए, यह ज़रूरी है कि पाठ्यपुस्तक लेखन को विकेंद्रीकृत कर दिया जाए। इसका ध्यान रखने की ज़रूरत है कि विभिन्न स्तरों पर कितनी क्षमता है और इस प्रयास को संभव बना पाने की व्यवस्था है या नहीं। पाठ्यपुस्तक लिखने में काफी सामर्थ्य की आवश्यकता होती है जिसमें अकादमिक और शोध निवेश, बच्चों के विकास की समझ भी आती है। राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् जिसे वर्तमान में पाठ्यपुस्तक लेखन का जिम्मा सौंपा गया है, इस उद्देश्य के लिए मुख्य संस्था का काम जारी रख सकती है। परंतु प्रक्रिया तय करना, चयन और लेखन आदि के काम किसी एक विषय विशेषज्ञ को सौंपने के बजाए सामूहिक रूप से एक दल को बाँटने चाहिए। इस तरह के साझे उपक्रम के पीछे कई कारण हैं, यथा परिप्रेक्ष्य निर्माण, बच्चे कैसे पढ़ते हैं? इस अवधारणा का स्पष्टीकरण, शोध, निवेश और विषय ज्ञान पर विचार, बच्चों से बातचीत कैसे की जाए इस प्रक्रिया की समझ, पाठ्यपुस्तकों के निर्माण में सहपाठियों के साथ विचार-विमर्श एवं फीडबैक के लिए ढाँचागत स्थान उपलब्ध करवाना इत्यादि। विश्वविद्यालयों से अकादमिक और शोध सहायता, गैर-सरकारी संगठन और पेशेवर लोगों के समृद्ध अनुभव, इस अभ्यास के महत्त्वपूर्ण निवेश होते हैं।

बोलते चित्र

कक्षा में बच्चों को किसी घर का एक चित्र दिखाना जिसमें परिवार के विभिन्न सदस्य विभिन्न कार्यों का संपादन कर रहे हैं। अंतर यह है कि पिता खाना पका रहा है और माँ बिजली का बल्ब ठीक कर रही है, लड़की स्कूल से साइकिल पर घर लौट रही है और लड़का गाय दुह रहा है, दूसरी बहन आम के पेड़ पर चढ़ रही है और दूसरा लड़का घर में झाड़ू लगा रहा है। दादाजी बटन टाँक रहे हैं और दादी माँ हिसाब-किताब देख रही हैं। बच्चे से उस चित्र के बारे में बोलने को कहा जाए। कितने प्रकार के 'कार्य' वे समझ पाते हैं?

क्या उन्हें ऐसा लगता है कि इनमें से कोई काम किसी को नहीं करना चाहिए। क्यों?

उनसे काम की गरिमा, समानता और जेंडर पर बहस करवाएँ।

इसके महत्त्व की चर्चा करें कि हर व्यक्ति को स्वावलंबी और संपूर्ण होना चाहिए।

ठीक ऐसी चर्चा अन्य मुद्दों को लेकर भी की जा सकती है। जैसे अच्छा और बुरा काम, जातिगत पहचान और कार्य की मूल्य-आधारित प्रकृति के बारे में भी बोलते चित्रों के माध्यम से बताया जा सकता है।

VIII अनुबंध

अ) बालक - भाषा

आ) बालक मौखिक भाषा अधिगम की तरह लिखित भाषआ अधिगम कर सकते हैं क्या?

इ) भाषा शिक्षण - विभिन्न दृष्टिकोण

ई) बालक कैसी पुस्तकें पढ़ना पसंद करते हैं? कैसी कहानियाँ पसंद करते हैं?

उ) बालक-पुस्तकों की दुनिया

ऊ) भाषा अधिगम में गद्‌य व पद्‌य का स्थान

ऋ) भाषा अधिगम में विविध विधाएँ

ए) भाषा अधिगम में कहानियों का स्थान? कहानियों के द्‌वारा भाषा विकास

ऐ) अहिंदी प्रांत में द्‌वितीय भाषा-हिंदी, अधिगम व आयाम

ओ) भाषा संप्रेषण व तकनिकी (Technology)

औ) उपसंहार

अ) बच्चे - भाषा

- प्रोफेसर रमाकांत अग्निहोत्री, दिल्ली विश्वविद्यालय

हमको पता है कि मानव सभ्यता को नया मोड़ देने वाली भाषा है। भाषा ने मानवीय सिद्धांतों को बहरी जगत में नहीं फैलाया बल्कि मानव के अंतर्मन में भी क्रांति उत्पन्न कर दी। वारन से लेकर मानवावतार लेने तक मानव में जो अनेक परिवर्तन आये उसका एक कारण भाषा ही है, ऐसा आधुनिक शास्त्रवेताओं का अभिप्राय है। अर्थात् तब तक बाहरी शक्तिओं के परिणाम क्रमों पर विचार करने पर, जन्म होते ही भाषा ने अंतर्गत शक्ति (भाषा) को निर्देश दिये।

वर्तमान में भाषा सर्वव्यापकता, सार्वजनिकता, लिपिहीन भाषाएँ हैं लेकिन ध्वनि हीन या बातचीत-हीन भाषाएँ नहीं हैं। भाषा की अत्यंत प्राथमिक इकाई भी इस अद्भुत स्थिति में है कि वह जातीय आवश्यकताओं को आसानी से पूर्ण कर सकती है। इसी प्रकार आवश्यकताओं को बढ़ाकर भाषा स्वयं अद्भुत रूप से विकसित हो जाती है। जब का तब परिस्थितियों के अनुरूप दृढ़ हो जाती है। यह भाषा द्वारा मानव को हँसते-खेलते आकाश और पाताल को मुट्ठी में करने का युग है।

भाषा निर्माण :

हम सब बात करें। हम आसानी से बात करेंगे। क्योंकि बातचीत करना बहुत सरल है, किंतु गहराई में जाने से हम देखते हैं कि भाषा कितनी जटिल हैं।

इसीप्रकार भाषा संबंधी प्रारंभिक नियमों का सभी भाषाओं में समान रूप से पालन किया जाता है।

सभी भाषाओं में स्वर-व्यंजन की पद्धति होती है। व्यंजन को स्वर के बिना उच्चारित नहीं किया जा सकता है। यदि कभी उच्चारण किया भी जाता है तो दो तीन व्यंजनों को मिलाकर भी एक साथ उच्चारण नहीं किया जा सकता है। तीव व्यंजनों को संयुक्त रूप से मिलाकर किसी भी भाषा के जल्दी से दस शब्द बताइए। वे क्या हैं, देखेंगे - शास्त्र, स्त्री, स्त्रोत आदि। स,त,र ध्वनियों को छोड़कर अन्य ध्वनियों (व्यंजनों) से बने संयुक्ताक्षर कहीं भी दिखायी नहीं देंगे। फिर चार ध्वनियों से बने संयुक्ताक्षर तो बिल्कुल असंभव है।

हमारे वाक् यंत्र अधिक व्यंजनों के मेल को स्वीकार नहीं करते हैं। इसीलिए हम 'इस्कूल' कहते हैं। ''पूर्ण' को 'पूरन' कहते हैं।

हर भाषा में बातचीत के साथ अर्थ का संबंध नहीं होता है। बोझ ढोने वाले को 'गधा' क्यों कहा जाये? घर के पास पाये जाने वाले जंतुओं को सुअर क्यों नहीं कहा जाता है? इनके उत्तर कहाँ से प्राप्त हो सकते हैं? इसका अर्थ यह है कि बातचीत केवल संकेतक है, अमूर्त है।

एक प्रकार से देखा जाये तो भाषा अत्यंत जटिल है। पूर्णरूप से संकेतों से भीरी है। छोटे परिवर्तन से पूर्ण रूप से नष्ट हो जाती है।

राधा पुस्तक देख रही है।

राधा पुस्तक दिखा रही है।

एक मात्रा से, अर्थ में विशाल अंतर

राम पाठशाला जा रहा है। सीता पाठशाला जा रही है।

यहाँ कर्त्ता के लिंग के आधार पर क्रिया में परिवर्तन हो रहा है। इस प्रकार भाषा में छोटा सा अंतर, विशाल परिवर्तन लाता है।

वाक्यों में ऐसा ही होता है। इनमें एक क्रमबद्धता होती है। हम उसी क्रम में बातचीत करते हैं। हम यह कह सकते हैं कि - 'जा रहा है पाठशाला राम'। किंतु यह अस्वाभाविक दिखायी पड़ता है।

शब्द थोड़े हैं किंतु वाक्य लाखों हैं। हम जितने चाहे उतने वाक्य बना सकते हैं। वास्तविकता में एक बार बनाये हुए वाक्य को हम फिर से नहीं बनाते हैं।

सब कुछ संदर्भों *(contextual)* पर आधारित होता है। वास्तविकता में भाषा की उत्पत्ति, विकास और विनियोग सब कुछ संदर्भों पर आधारित होता है। तीन वर्ष का बच्चा भाषा के क्षेत्र में एक वयस्क भाषाविद् *(Linguistic adult)* से कम नहीं होता है।

जब का तब हम नये वाक्यों का निर्माण कर सकते हैं। प्रत्येक भाषा में विविधता और सृजनात्मकता का होना साधारण बात है। गणना के आधार पर बातचीत करने वाले बात करते हैं किंतु उसे स्वीकार करने वालों का प्रतिशत नहीं के बराबर होता है। दादाजी की भाषा, पिताजी की भाषा, उसकी भाषा एक जैसी नहीं होती है। वास्तव में हम बात करते समय एक बार जो बोलते हैं। दूसरी बार उसी बात को अलग तरह से बोलते हैं।

भाषाविद् भाषा को कितना भी बाँधने का प्रयत्न करें, वह स्वयं ही अपने आपको परिवर्तित करती रहीत है। वाक्यों से अधिक शब्द, शब्दों से अधिक ध्वनियों में अधिकांशतः बदलाव आता रहता है। ये परिवर्तन संदर्भों के आधार पर होते हैं। सब कुछ संदर्भों (contextual) पर ही आधारित होता है। वास्तविकता में भाषा की उत्पत्ति, विकास और विनियोग सब कुछ संदर्भों पर ही आधारित होता है।

भाषा का भावों के साथ अति घनिष्ठ संबंध होता है। 'सियार' बोलते ही भय की अनुभूति होती है। 'आईसक्रीम' बोलते ही मुँह में पानी भर आता है।

एक भाषा अनेक संदर्भों में अनेक अर्थ प्रदान कर सकती है। 'फूलों का हार' बोलते समय और मैं हार गया' बोलते समय 'हार' सुनने में एक ही लगता है किंतु इनके अर्थ एक नहीं है।

इससे पता चलता है कि भाषा अत्यंत जटिल है, गहन है। यदि कोई व्यक्ति परिपक्व होने के बाद परायी भाषा को सीखता है तो उसे इस 'जटिलता' के बारे में पता चलता है। इतनी विभिन्नता' को देखकर सिर चकराने लगता है।

बच्चे भाषा कैसे सीखते हैं ?

इतनी जटिल भाषा को बच्चे आसानी से कैसे सीखते हैं? एक नहीं बल्कि दो, तीन भाषाएँ, एक ही समय में, एक साथ कैसे सीख रहे हैं? इसका अर्थ यह है कि बात करने वाली लड़की भाषा के आधार पर बड़ों से कम नहीं हैं।

हर लड़की बातचीत करने वाली उम्र में भाषा सीखती है? यह एक सार्वभौमिक सिद्धांत है। क्रम में थोड़ा अंतर हो सकता है, धाराप्रवाह में बोलते समय कुछ इधर-उधर हो सकता है। किंतु तीन वर्ष की उम्र तक सभी मातृभाषा में धाराप्रवाह में बात कर सकते हैं। यह कैसे संभव है?

विचित्र बात यह है कि पूरे विश्व में बच्चों के सीखने का क्रम एक ही है। पहले वे छोटे-छोटे सरल वाक्य बोलते हैं। यदि बच्चा 'पिताजी' बोलता है तो इसका अर्थ है, यह भी एक वाक्य है, इसका अर्थ, 'पिताजी आये' 'पिताजी जा रहे हैं?' 'पिताजी दिखायी नहीं दे रहे हैं'- जैसे कुछ भी हो सकता है। इसके पश्चात् दो शब्दों से बने वाक्य बोलता है। सरल वाक्यों के बाद, विपरीतार्थक वाक्य बोलता है। उसके बाद प्रश्नार्थक वाक्य भी सीखता है।

हर बालक को स्वर-व्यंजन, स्वर-व्यंजन (CVCV) के सूत्र का ज्ञान हैं। इनको मिलाकर वह खिचड़ी कभी नहीं बनाता है। एक वाक्य का संदर्भानुसार अर्थ ग्रहण करना बच्चे को आता है। हँसते हुए मैं नहीं आऊँगी'' कहने पर, उसमें 'मैं आऊँगी' की ध्वनि है - इस बात का पता बिटिया को लग जाता है। बाद में हमारे द्वारा किये गये छोटे-छोटे परिवर्तनों और प्रश्नों से वाक्य बदलते रहते हैं। उन्हें बच्चे उसी प्रकार सीखते हैं।

'सीता पुस्तक पढ़ रहा है' - हमारे ऐसा कहने पर, कोई भी तीन साल की बच्ची इसमें कुछ गलत हैं, ऐसा अंदाज़ा लगाकर हमारा मज़ाक उड़ाती है। किंतु गलती क्या है? वह स्पष्ट रूप से नहीं बता सकती है। भिन्नार्थक बातों का अर्थ बच्चे संदर्भानुसार ग्रहण कर रहे हैं। बच्चे वाक्यों में शब्दों के क्रम को, कर्त्ता के आधार पर क्रिया में होने वाले परिवर्तनों को, कर्ता-कर्म की विभक्तियों को ही नहीं सीख रहे हैं बल्कि आवश्यकतानुसार वाक्यों के विभिन्न विन्यास करने की क्षमता को सहज रूप से ग्रहण कर रहे हैं।

अपने सीमित शब्द भंडार में से हज़ारों नये नये वाक्यों की स्वरचना करना, बड़े आश्चर्य की बात है। ये सब बड़े लोग कर सकते हैं।

और भी विचित्र बात यह है कि - बच्चे दो-तीन भाषाओं के नियमों को भी जान रहे हैं। इतनी जटिलता से निर्मित विषयों को भी बच्चे आसानी से ग्रहण कर रहे हैं? इतने अच्छे ढंग से वे इसका उपयोग किस प्रकार कर रहे होंगे?

भावाविदों और मनोवैज्ञानिकों ने इसका विश्लेषण इस प्रकार किया :

- रूचिकर वातावरण में बच्चे भाषा सीख रहे हैं। अवसरानुकूल वातावरण रूचिकर और सहज होता है।

- भाषा अर्जन के क्रम में हमें इनपुट (आगत) करना आवश्यक, होता है। इसका आऊटपुट (निर्गत) नहीं होता। तात्पर्य यह है कि आगत (इनपुट) के समान निर्गत (आउटपुट) नहीं होता। दिनभर बच्चे को कई बातें सुनायी देती रहती है। उनमें से वे कुछ बातें ही ग्रहण करते हैं। ग्रहण की गयी सारी बातों को सही-सही बताना, अधिगम के क्रम के अंतर्गत नहीं आता है।

एक वर्ष तक बच्चे सुनते ही रहते हैं। जवाब देने, उपयोग करने का काम नहीं होता है। कोई भी बच्चे पर दबाव नहीं डाल सकता है। यह हर क्रिया को बिना आवश्यकता के स्वीकार करने के समान है। क्योंकि यह एक मौन महायुग है।

- हर बात बच्चे संदर्भानुसार ही सीखते हैं। वे जिसमें भाग लेते हैं, उसी से उनका संबंध नहीं होता है। अमूर्त और निर्विकार अंशों का इसमें कोई स्थान नहीं होता है।
- इस प्रकार सीखते समय उनके लिए एक क्रमिकता नहीं होती है। पहले अक्षर, फिर शब्द, उसके बाद वाक्य-ऐसा कोई क्रम नहीं होता है। पहले 'अ', बाद में 'क्ष' ऐसा क्रम हरगिज़ नहीं होगा।
- पहले आसान, बाद में जटिल जैसी बात भी नहीं होती है। दीर्घस्वर पहले आ सकते हैं। ह्रस्व स्वर बाद में आ सकते हैं। बच्चों को सिखायी जाने वाली भाषा का एक निर्धारित क्रम नहीं होता है। इसके लिए कोई योजना प्रणाली भी नहीं होती है।
- भाषा अर्जन के क्रम में क्या बात की जा रही है, यह महत्वपूर्ण नहीं है। कुछ भी बात की जा सकती है। किसी प्रकार का दबाव नहीं होता है।
- अपनी स्व-व्यवस्था द्वारा बच्चे सीखते हैं। इसकी रूपरेखा का निर्माण कोई भी नहीं कर सकता है। एक बच्ची यदि 'चाय' एक शब्द सीखती हैं तो उसका प्रयोग अनेक प्रकार से करती है। जैसे : वह दूध पी रही है, माँ चाय पी रही है, पिताजी कॉफी पी रहे हैं, इन वाक्यों में वह दूध और कॉफी के स्थान पर भी 'चाय' का ही प्रयोग करती है। अपने द्वारा पहले सीखे गये नाम को वह सभी के लिए प्रयोग करती है। बाद में अलग-अलग नामों द्वारा एक स्वक्रम का निर्माण करती है।
- प्रत्येक नियम को वह स्वयं ही जान लेती है। उसे व्याकरण कोई भी नहीं सिखता है।
- सभी भाषाओं के बच्चे सबसे पहले प, ब, म ध्वनियाँ सीखना पसंद करते हैं। अम्मा, 'मामा', 'बाबा', 'पापा', जैसे शब्द उन्हें पसंद आते हैं।

भाषा की इस जटिलता का कारण क्या है? सीखना इतना आसान है, इसका कारण क्या है। भाषा-नियमों की सार्वत्रिकता का कारण क्या है? अधिगम क्रम की सार्वजनिकता का कारण क्या है? सब कुछ आश्चर्य जनक है, न। हाँ, बड़ों के लिए, हमारे लिए आश्चर्य जनक ही है। बच्चों के लिए यह अत्यंत सहज है।

हम जैसे बड़े लोगों (व्यस्कों को) को अधिगम क्रम के रहस्य को जानना है।

(आ) बच्चे भाषा सीखते समय, लिखना सीख सकते हैं क्या?

- प्रो. रमाकांत अग्निहोत्री, दिल्ली विश्वविद्यालय

भाषा, लिपि, क्या इन दोनों का स्वभाव एक ही है? दोनों का विकास क्रम एक ही है क्या? यदि ऐसा है तो भाषा सीखते समय ही क्या बच्चे सभी अक्षरों को सीख सकते हैं? दोनों के अधिगम का क्रम एक ही है क्या? ये प्रश्न कुछ गहरे है? बच्चे भाषा कैसे सीखते हैं? संदर्भ, अनुमान, अवसर और स्वेच्छा के आधार पर बच्चे भाषा सीख रहे हैं। बहुत लोग इसी प्रक्रिया को सहज अधिगम मानते हैं। फिर क्या लिपि (अक्षरों) के लिए भी यही लागू होता है? ऐसा इतना ही है कहने के लिए भी इनमें से कई लोग हिल जाते हैं।

वास्तव में हम बात करना नहीं सीखते हैं। बच्चे अपने आप सीख लेते हैं। लेकिन कुछ भी सीखाये बिना लिखना सीखने वाले क्या कोई है? लेकिन बातचीत करना, लिखना दोनों एक ही श्रेणी में बंधे नहीं होते हैं, करके कोई भी आसानी से जवाब दे सकता है। कुछ गहराई से कह सकने पर बातचीत करना एक अति आवश्यक ज़रूरत है। लड़की को भूख लगने पर वह रोने के द्वारा उसे व्यक्त करती है, भूख शांत होने पर उसे अन्य रूप में व्यक्त करती है। यदि हम इसे भाषा का प्राथमिक रूप मानेंगे तो उत्पादित संबंधी समस्या उत्पन्न होगी। इस प्रकार देखने से पता चलता है कि भाषा एक सहज प्रवृत्ति है। इसकी अभिव्यक्ति की अनेक सहज व्यवस्थाएँ हैं। इसका एक भाग हमारे वाक् यंत्र हैं। फिर लिपि का प्रकृति क्या है? लिपि का निर्माण हमने हमारी आवश्यकताओं के आधार पर किया है। लिखने के लिए प्रयोग किये जाने वाले साधन मुँह के समान, जीभ के समान सहज नहीं है। उनकी सृष्टि हमने की है। मनुष्य को इसका ज्ञान नहीं है। ऐसा होने पर भाषा सीखने वाले बच्चे लिपि कैसे सीख सकेंगे? लिपि को सीखाना आवश्चक है, एक क्रम में सीखाना अत्यावश्यक है, जैसी चर्चाएँ सामने आ रही हैं।

अक्षरों की प्रकृतिः

इसे मालूम करने के लिए हमें लिपि की प्रकृति को जानना आवश्यक है। इसके लक्षणों पर हमें ध्यान देना होगा।

पहले-हमारे द्वारा दिये गये नाम का उस वस्तु से कोई संबंध नहीं है, हमारे द्वारा लिखे जाने वाले अक्षरों का बोली जाने वाली ध्वनियों के साथ कोई संबंध नहीं है। गधे को गधा क्यों कहा जाये, यदि हम नहीं बता सकते हैं तो, कण्ठध्वनि को 'क' क्यों लिखा जाय, यह भी हम नहीं बता सकते हैं। गधे के समान ही 'क' भी हमारे द्वारा दिया गया एक संकेत है, जो अमूर्त है।

इसीलिए एक लिपि में किसी भी भाषा को लिखा जा सकता है, सभी भाषाओं को सभी लिपियों में लिखा जा सकता है। KUTTA (हिंदी), DOG (अंग्रेज़ी) KUKKA (तेलुगु)

इस प्रकार लिपि केवल संकेत मात्र होने के कारण, कोई भी लिपि समग्र और संपूर्ण नहीं है। एक ध्वनि को अनेक रूपों में लिखना संभव है। एक अक्षर को कई तरीकों से बोला जा सकता है। ऋषि को 'रिषी', आओ को 'आवो' लिखने पर पढ़ने में कोई बाधा उत्पन्न नहीं होती है। हम दे वस्तुओं को एक ही नाम दें रहे हैं और दो ध्वनियों के लिए एक अक्षर लिख रहे हैं। एक ध्वनि को एक बार एक तरह से, दूसरी बार दूसरी तरह से बोलने पर, एक अक्षर को एक बार एक ध्वनि के लिए, दूसरी बार-दूसरी ध्वनि के लिए हम उपयोग करते हैं।

यदि हमारे द्वारा बोले जाने वाली, सभी ध्वनियों के लिए पर्याप्त बातें नहीं है तो लिखी जाने वाली सभी ध्वनियों के लिए भी पर्याप्त अक्षर नहीं है। खेल, खोल, खोद- इन तीनों में बोली गयी ध्वनियाँ क्या है? लिखी जाने वाली ध्वनियाँ क्या है? नहीं तो लिखी जाने वाली क्या है? बोली जाने वाली क्या है?

लिपि परिवर्तनशील है :

एक और अंश पर ध्यान देंगे। भाषा प्रतिदिन बदलती हैं। हम इसके परिणाम क्रम को रिकार्ड भी कर सकते हैं।

गङ्गा - गंगा, द्वारा - द्वारा जैसे परिवर्तन हमारी आँखों के सामने होते देख रहे हैं। संदर्भ, व्यक्ति और गति के आधार पर भी भाषा में होने वाले परिवर्तन हम देख रहे हैं। इनमें से क्या सही है? (लाक्षणिक हैं) क्या सही नहीं है? ऐसा प्रश्न करने पर जिसकी भाषा उसके लिए सही है, कहने के अलावा और कोई दूसरा उत्तर नहीं होता। बच्चे के लिए 'घोला' सही है, तो पंडित के लिए 'घोड़ा' सही है। यह कहने के अतिरिक्त और कोई जवाब नहीं होता है। पाठशाला का मुख नहीं देखने वाले बच्चे के लिए 'इस्कूल' सही है। किसी न किसी भाषा को हम (अर्थात् समाज में स्थायित्व) लाक्षणिक मानते हैं। भाषा के इन लक्षणों से अनभिज्ञ रहने वालों की भाषा को गँवार या शुद्ध हिंदी में 'पिछड़ी' भाषा कहकर मज़ाक उड़ाया जाता है।

क्या लिपि भी इसी तरह परिवर्तित हो रही है? परिवर्तित हो रही है किंतु भाषा के समान तेज़ी से परिवर्तित नहीं हो रही है। इसका कारण यह है कि भाषा के समान अवसर, प्रचुरता, संदर्भ विविधता शायद लिखने में नहीं है। किंतु इसमें परिवर्तन होता है, यह अक्षरक्षः सत्य है। अमेरिकन लोग Doubt में 'b' क्यों है, इसका कारण जानना चाहते हैं। ङ, ञ को हमारे बच्चों ने एक ही नाम दे दिया है। श,ष,स तीनों को जल्दबाजी में एक ही समझ लेती है तथा स(श), स(ष) लिखती जाती है।

'आ' को छोड़कर (अि) (अु) इत्यादि लगाने पर अक्षर नहीं बनते हैं। इलेक्ट्रानिक युग के और विकसित होने पर कौनसा अक्षर (नष्ट होने वाले अक्षरों के नाम क्या थे?) क्या बन जायेगा, कौन कह सकता है? वैश्वीकरण के प्रभाव से सभी भाषाओं के लिए एक लिपि संबंधी कानून नहीं आयेगा, इसकी हामी कौन भर सकता है?

हम कह सकते हैं कि भाषा और लिपि के मध्य एक अटूट संबंध है। वर्षों से लिपि के उदगम के साथ हमारी भाषा को जोड़कर देखने की आदत से हमें ऐसा लगता है। यह केवल एक आत्मानुभूति का विषय है। आधुनिकक लिपिकेताओं का मानना है कि भाषा और लिपि के बीच ऐसा कोई संबंध नहीं है।

लिपि-नैसर्गिक (सहज) अधिगम

भाषा और लिपि के मध्य घनिष्ठता को जानने के बाद अब हम लिपि के बारे में जानेंगे। भाषा के समान लिपि सहजता से सीखी नहीं जा सकती है? तब लिपि को सहज कैसे बनाया जाय, यह एक विचारात्मक प्रश्न है। बच्चे आवश्यकता हो या न हो, कुछ न कुछ बड़बड़ाते रहते हैं, कुछ बोलते रहते हैं। हम बरसों से इस क्रिया को देख रहे हैं। यही नहीं हम बच्चों को फ़र्श पर, दीवारों पर कुछ-न-कुछ लिखते हुए देख सकते हैं। दीवारों या फर्श पर कुछ लिखते समय वह जो कुछ जो सोच रहा है, क्या यह उस मूर्त भावना को मूर्त्त रूप से ज़ोड़ने की एक क्रिया है? क्या यह लिपि का आरंभिक रूप है? हमें ऐसे भी अनेक तथ्य मिले हैं जिसके आधार पर हम कह क्या यह लिपि का आरंभिक रूप है? हमें ऐसे भी अनेक तथ्य मिले हैं जिसके आधार पर हम कह सकते हैं

कि आदि मानव को भी जब बात करना नहीं आता था तब वह अपने भावों को चित्रों द्वारा और संकेतों द्वारा प्रकट करता था। इसीलिए भाषा के समान लिपि भी समाज की एक आवस्यकता है। कुछ लोग मानते हैं कि यह एक सहज क्रिया है।

ऐसे ही हमें भाषा सीखने के क्रम और लिपि सीखने के क्रम के मध्य की समानता पर ध्यान देना चाहिए। स्वीकार करना चाहिए। वास्तव में, भाषा और अक्षर सीखने में ही नहीं बल्कि आचरण में भी एक क्रम होता है। एक व्याकरण होता है। हर अमूर्त अंश को सीखने की भी एक क्रमबद्ध व्यवस्था होती है। इन क्रमों की मूल प्रवृत्ति और लक्षण एक जैसे होते हैं। अपने अनुभवों के आधार पर हम कह सकते हैं कि जब बच्चे लिखना सीखते हैं या भाषा सीखते हैं तो उसमें भी बहुत हद तक क्रमबद्धता हीती है।

यदि हम यह स्वीकारते हैं कि बच्चे भाषा संदर्भ के अनुसार सीखते हैं तो हमें यह भी स्वीकार करना होगा कि बच्चे लिपि को भी संदर्भों के अनुसार सीख सकते हैं। हमारा इस तरह का अधिगम ही सहज अधिगम कहलाता है। अ,आ,इ लिखते समय क्या संदर्भ होता है।

बच्चे जिस प्रकार ‘स्व-प्रयास’ से भाषा सीखते हैं, उसी प्रकार उन्हें लिखना भी सीखना चाहिए। (जिस प्रकार वे स्वयं कोई चित्र उतार सकते हैं वैसे ही अक्षर भी लिखना चाहिए।)

बच्चे भाषा को टुकड़ों-टुकड़ों में नहीं बल्कि समग्र रूप में सीखते हैं। इसीलिए हमें अ,आ,इ,ई जैसे टुकड़े-टुक़ड़े करके लिखना सीखाने के बदले शब्द और वाक्य (संदर्भानुसार) के द्वारा लिपि सीखाना चाहिए। यह एक सहज शिक्षण कहलायेगा।

हमारे द्वारा ग्राह्य हर बात को सीखाने से, व्याकरण सीखाने से बच्चों को भाषा नही आती है। यह केवल हमारा भ्रम है कि अभ्यास द्वारा बच्चे लिखना सीखते हैं। बातचीत करते-करते यदि भाषा आ सकती है तो पढ़ते-पढ़ते लिखना भी आ सकता है।

जिस प्रकार बातचीत में गलतियाँ करके ही हम सही बात करना सीखते हैं वैसे ही लिखने में गलतियाँ करके ही वे सही लिखना सीखते हैं। बातचीत करते समय जब बच्चे ‘घोड़े’ को ‘घोला’ बोलते हैं तो परेशान नहीं होते हैं। उसी प्रकार लिखते समय यदि बच्चा ‘माँ’ को ‘मा’ लिखता है तो हमें विचलित नहीं होना चाहिए।

इनपुट(आगत) और आउटपुट (निर्गत) का तरीका (सूत्र) भाषा और लिपि दोनों के लिए होता है। यदि बच्चा एक शब्द को अच्छी तरह पढ़ सकता है तो उसे फिर उसी शब्द का श्रुतलेख देना अर्थ हीन होता है। छठें पाठ के शिक्षण के समय यदि बच्चा तीसरे पाठ के शब्द अच्छी तरह लिख सकता है तो यह बहुत है। वातावरण अनुकूल हो तो बच्चे दो भाषाओं में बातचीत करने के साथ-साथ दो लिपियाँ भी सीख सकते हैं। जिस भाषा का वातावरण अधिक होता है, उस भाषा पर भी पकड़ अधिक होती है, इसीप्रकार जिस लिपि का वातावरण अधिक होता है उसी में अच्छी प्रकार लिखा जा सकता है।

चाहे हम कितना भी कह लें किंतु निष्कर्ष यही है कि भाषा और लिपि के लिए प्रयुक्त सूत्र एक ही है। वह यह है कि - बच्चे जो कुछ भी सीखते हैं, उसका एक क्रम होता है, एक व्यवस्था होती है। वह क्रम और व्यवस्था बहुत हद तक एक ही होती है। बस हमें इसे समझने और स्वीकार करने की ज़रूरत है।

इ) भाषा शिक्षण में विभिन्न दृष्टिकोण

- 'पढ़ाई विज्ञान', ज़िला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम

भाषा को विकसित करने वाले मानव के मस्तिष्क के विकास में भी भाषा सहायक सिद्‌ध हो रही है। छोटे-छोटे संकेतों, ध्वनियों से उत्पन्न होने वाली भाषा अब विस्तृत और जटिल बनकर अद्‌वितीय रूप से हमें सहयोग दे रही है।

वास्तव में भाषा का निर्माण इतना आसान नहीं है। हर भाषा की अपनी एक निर्माण पद्‌धति होती है। इसी प्रकार हर भाषा के कुछ समान नियम भी होते हैं। एक छोटे से नियम का उल्लंघन करने से, छोटी सी गलती होने पर बोला गया सारा विषय तार-तार हो जाता है। उदाः- भिन्नार्थ का उदाहरण

ऐसे बहुत से उदाहरण हम दैनिक जीवन में देखते हैं।

वचन, लिंग, काल के परिवर्तन होने पर क्रिया में होने वाले परिवर्तनों की हमें आदत हो गयी किंतु मातृभाषा में यह क्रिया सहज होती है किंतु अन्य भाषा में इसके प्रचार के समय परेशानी होती है। संस्कृत भाषा में 'दारा' (पत्नियाँ) बहुवचन पुल्लिंग में होता है। हिंदी में नपुंसक लिंग नहीं होता। स्त्रीलिंग और पुल्लिंग दो ही लिंग होते हैं। हिंदी में 'ने' प्रत्यय होने पर क्रिया 'कर्ता' के अनुसार 'कर्म' के अनुसार बदलती है। अंग्रेज़ी में कर्मणी (passive voice) को अधिक प्रधानता दी जाती है। इस तरह यदि बताते जायें तो बहुत कुछ बताया जा सकता है। इतनी जटिल और इतनी अद्‌भुत भाषा को इतनी आसानी से कैसे सीखते हैं? हर कोई धाराप्रवाह से बात कर सकता है और अपने अभिप्राय व्यक्त कर सकता है। थोड़े बहुत अंतर के साथ सुनकर सब समझ सकते हैं और बात कर सकते हैं। इस को अर्जित करने के क्रम में भी कोई बड़ा क्रम नहीं है। हर कोई समान उम्र में समान पांडित्य अर्जित कर रहे हैं। हमारे बच्चों का शब्द भंडार भी एक ही अनुपात में होता है। यह कैसे साध्य है?

हम में से किसी ने व्याकरण सीख कर भाषा नहीं सीखी है। जबरदस्ती हमें किसी ने व्याकरण सिखाया भी है तो हमें नहीं आया है। इससे भी अधिक एक क्रम के अनुसार यदि किसी ने सिखाने का प्रयत्न किया भी तो हमने नहीं सीखा है।

पढ़ना लिखना कौशल पर आने पर ऐसा नहीं हो पा रहा है। बहुत सारे लोग इसमें पिछड़ रहे हैं। यह साध्य नहीं है समझकर बहुत लोग छोड़ रहे हैं इसे बहुत सारे लोग एक भार समझ रहे हैं या इसे एक समुद्र समझ रहे हैं जिसे पार करना असंभव है? इसके कारण क्या हो सकते हैं। ये कौशल (पढ़ना,लिखना) सुनना, बोलना से ज्यादा जटिल है क्या? मनुष्य क्या इतना कमज़ोर है कि वह इन कौशलों को आत्मसात नहीं कर सकता है। एक बार में दो-तीन भाषाओं में बातचीत करने वाले बच्चे मातृभाषा में क्यों पढ़ नहीं सक रहे हैं? वर्षों की मेहनत के पश्चात् अनुकूल परिणाम क्यों नहीं मिल पा रहे हैं

बच्चे, स्वाभाविक वातावरण में भाग लेने से आसानी से सीख रहे हैं, सभी इस बात को स्वीकार कर रहे हैं। भयहीन और तनावमुक्त वातावरण में, हर गलती को सुधारने जैसी स्थिति के न होने से, मूल्यांकन की पद्‌धति न होने पर, वे सीख रहे हैं।

यही नहीं बच्चे भाषा का अपनी आवश्यकताओं के अनुसार उपयोग कर रहे हैं। विस्तृत जानकारी के उपलब्ध होने पर भी, उसी में से अपनी मनपसंद और स्वयं के लिए उपयोगी तत्वों को संग्रह करने की स्वतंत्रता उन्हें दी गई है। बच्चे अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाले तथ्यों का ही विकास करते हैं। इस क्रम में बच्चे सीखते हैं।

इस पर भाषाविद्ों ने अनेक तर्क-वितर्क किये हैं। इसका परिणाम यह हुआ कि हमें कहीं जाने की ज़रूरत नही पड़ी है। किंतु कक्षाकक्षा में भाषा सिखाने की पद्धति की समीक्षा करना आवश्यक है।

साधारणतः हमने जो कुछ सीखा है, या जो कुछ हम सिखा रहे हैं, वह है अक्षरों का क्रमवार लिखाने की पद्धति। हर भाषा के लिए एक वर्णमाला है। उसमें वर्णों का एक क्रम होता है। क्रमानुसार इन अक्षरों की पहचान करवाकर और उन्हें लिखना सिखाकर हम भाषा सिखाने की शुरूआत करते हैं। अंग्रेज़ी में वर्णमाला छोटी है। तमिल भाषा की वर्णमाला बहुत सरल है। प्रत्येक ध्वनि के एक अक्षर को कई ध्वनियों के साथ मिलाकर पढ़ना उनकी एक पद्धति है। संस्कृत और तेलुगु और हिंदी में ऐसा नहीं है। वर्णमाला बहुत बड़ी है। इसके साथ बारहखड़ी, द्वित्वाक्षर, संयुक्ताक्षर सभी को मिलाने पर इसका आकार और बढ़ जाता है। इनको पढ़कर, लिखना सिखाने से ही हम समझ रहे हैं, कि हमने भाषा सिखा दी है। केवल हमारी भाषा में या हमारे देश में ही नहीं बल्कि संपूर्ण विश्व में लिपि के प्रादुर्भाव होने के समय से पद्धति कुछ बदलावों से प्रचलित है। इसका समर्थन और विरोध करने वाले अनेक लोग (वाद) है। सुनना-बोलना जिस प्रकार सीखा है उसी तरह पढ़ना, लिखना नहीं सीखा जा सकता है क्या? इस संदर्भ में बहुत सोच-विचार किया गया।

अवसरानुकूल बात करने वाले प्रश्न करते हैं कि - ''किसी को यदि सही अक्षर नहीं आता है तो यह पढ़ना कैसे सीख सकता है? एक घर के निर्माण जिस तरह ईंटों को पंक्तिबद्ध करना आवश्यक होता है, उसी प्रकार पहले अक्षरों को सिखाने से ही लिखना आता है। फिर इन अक्षरों को मिलाने से शब्द बन जाता है। यह एक साधारण समाधान है। हर भाषा के लिए एक लिपि होती है। वह लिपि केवल उसी भाषा की होती है। भाषा का मूल और सौंदर्य (लय) लिपि में निहित होता है। इसीकारण भाषा को लिपि से अलग नहीं किया जा सकता है।

उदाहरणस्वरूप :- हिंदी में स्वर, ह्रस्व-दीर्घ, एक पद्धति में है। उन्हें उसी क्रम में सिखाना चाहिए। इन्हें क्रमानुसार सिखाने से ही ध्वनि की पहचान और उसकी साम्यताओं और विभिन्नताओं की पहचान हो जाती है। श,ष,स एकक्रम में होने से ही हम उनके मध्य के अंतर को समझ सकते हैं। अ, आ, इ, ई, उ, ऊ में एक क्रमबद्धता और लयबद्धता होती है। स्वरों को न सिखाकर केवल अक्षरों को सिखाना, वैज्ञानिक ढंग से सही नहीं है। बहुत लोगों का यह मानना है।

जितनी आसानी से हम सुनना-बोलना सीखते हैं, उतनी आसानी से हम पढ़ना-लिखना नहीं सीखा सकते हैं। बातचीत में भाषा जितनी विद्यमान रहती है, उतनी लिपि में नहीं रहती है।

अर्थात् वातावरण को संदर्भो से जोड़ने का जो अवसर सुनने-बोलने के कौशल में होता है, वह पढ़ने लिखने के कौशल में नहीं होता है। आवश्यकता के आधार पर देखा जाय तो पहले दो कौशलों को, दूसरे कौशलों से अधिक प्रमुखता प्राप्त है। इसीलिए दोनों को ही एक ही प्रकार से सिखाना असंभव है। एक और बात यह भी है कि मानव शरीर में ही स्वर यंत्र होता है। अत्यंत स्वाभाविक रूप से जैसे दूसरे अवयव काम करते हैं उतनी स्वाभाविकता से यह स्पंदित ध्वनियों को उत्पन्न नहीं कर सकता है। बातचीत करना एक प्रकार का स्पंदन है किंतु पढ़ना, लिखना में ऐसा नहीं है। इनके लिए बाहर के वातावरण पर निर्भर होना पड़ता है। यह अवसरानुकूल और स्पंदन पर आधारित न होकर, अर्जित किये जाने वाला कौशल है। इसीलिए इसका समाधान यह है कि हमें पहले दो कौशलों को सीखकर, उसके बाद दूसरे दो कौशलों को सीखना चाहिए।

इस पर दूसरे भाषाविद्ों का मानना है कि - यह अधिक रूप से भाषा विज्ञान, भाषा शिक्षण के मापदंडों और मनोविज्ञान पर आधारित है। निष्कर्ष के रूप में हम इसे आधुनिक वाद कह सकते हैं।

भाषा के लिए लिपि हमने तैयार की है। वर्णमाला, अक्षरों का क्रम, हमने ही बनाया है। इसीलिए, एक विशेष भाषा का उसीका एक विशेष क्रम होता है। यदि कभी हमें समान क्रम दिखायी (उदाः- द्रविड़ और आर्य भाषाएँ अलग होने पर भी अक्षरों का मूलक्रम एक जैसा ही है।) भी देता है तो इसका तात्पर्य यह है कि एक भाषा के उत्पत्ति क्रम को अन्य भाषा के लोगों ने अपना लिया है। बहुत समय तक एक ही क्रम में पढ़ने की आदत होने से हमें यह भ्रम हो रहा है कि यही उस भाषा का सहज और उसका अपना क्रम हैं। लय के संदर्भ में भी ऐसा ही है। संस्कृत भाषा में, वर्णमाला के अक्षरों को उनके उत्पत्ति स्थान के आधार पर रखा गया है। (अ-कण्ठ्य, आ-तालव्य)। कई सुदूर भाषाओं में वर्णमाला के पहले एक या दो अक्षर एक ही ध्वनि वाले हो सकते हैं। यह कुछ-कुछ रुचि, ध्वनि प्रधानता और सुलभता (उदाः- अंग्रज़ी का और 'ए' और हिंदी का 'अ' सबसे पहले आते हैं) पर आधारित विषय है। इसके अतिरिक्त इसमें और कोई वैज्ञानिकता नहीं है। इसीलिए इसी क्रम में भाषा सीखने से उन्हें भाषा सीखने में कठिनाई नहीं होगी। ऐसा उनका अभिप्राय है। यही नहीं, आज नहीं तो कल सभी भाषाओं के लिए एक लिपि (अंतर्राष्ट्रीय लिपि) बनेगी जिसमें कम अक्षर होंगे और यही लिपि प्रामाणिक भी मानी जायेगी, ऐसा उनका विश्वास है। हमारे अनेक प्रयासों के बाद कई अक्षर लुप्त हो रहे हैं। कुछ नये आकर जुड़ रहे हैं। जिस भाषा का जितना अधिक विकास हो रहा है, उसमें अक्षर और भी कम होते जा रहे हैं। ऐसा उनका मानना है कि ये सब लिपि और भाषा के अटूट संबंधों के विपरीतार्थक अंश है।

इन सबसे मुख्य एक बात और है। वह यह है कि हम भाषा को टुकड़ों-टुकड़ों में नहीं सीख रहे हैं। पूर्ण रूप से सीख रहे हैं। बच्चों के द्‌वारा की जाने वाली छोटी-छोटी ध्वनियाँ भी वाक्य होती हैं। इसी प्रकार उनको आने या न आने वाले छोटे-छोटे शब्द भी वाक्य ही हैं। 'माँ' कहने से 'माँ आयी', 'माँ ने कहा,' 'माँ मुझे चाहिए' - आदि अर्थ निकलते हैं। हम पहले छोटी-छोटी ध्वनियाँ, फिर शब्द, फिर वाक्य जैसे भाषा नियमों को नहीं सीख रहे हैं। एक प्रकार की ध्वनियों को पहले, दूसरी प्रकार की ध्वनियों को बाद में नहीं सीख रहे हैं।

केवल याद रखकर अर्थात् स्मरण शक्ति पर निर्भर होकर हम भाषा नहीं सीख रहे हैं। अनेक संदर्भों में भाग लेकर, हमारी आवश्यकता के अनुसार, उपयोग करते हुए कोई भी बात हम सीख सकते हैं। जिसका हम उपयोग नहीं करते हैं, उसे या तो छोड़ देते हैं या भूल जाते हैं। ऐसा न करके अक्षर सिखाने की पद्‌धति में अलग से अक्षरों को सिखा रहे हैं।

अर्थात् भाषा को टुकड़े-टुकड़े कर, एक क्रम में रखकर सिखा रहे हैं। लेकिन अक्षरों का कोई अर्थ नहीं होता। उनका स्वयं का (अपना) कोई उपयोग नहीं होता है। यह रटकर याद रखने के अलावा कुछ नहीं है। यह एक कृत्रिम और जटिल पद्‌धति है। कितना भी अक्षर सिखा लें, शब्द बनाना नहीं आता। अब तक सीखे गये अक्षरों का कोई उपयोग नहीं होता। फिर ये कैसे याद रखे जा सकते हैं? क्यों याद रखे जाने चाहिए? यह मानव अधिगम की पद्‌धति के विरुद्‌ध है। इस प्रकार कई लोग इस पद्‌धति का विरोध कर भाषा अधिगम में एक व्यापक वैज्ञानिक दृष्टिकोण को प्रस्तुत कर रहे हैं।

पहले हम एक भी अक्षर छोड़े बिना, सभी अक्षर सीखते थे। इसके पश्चात् बारहखड़ी, फिर संयुक्ताक्षर, द्‌वित्वाक्षर सीखने के पश्चात् ही शब्द लिखते थे। वास्तव में अ से क तक सीखे बिना, कोई भी 'आक' और 'एक' जैसे शब्द सीख सकते हैं। ऐसे भी हम नहीं करते थे।

क्रमशः पारंपरिक अक्षर पद्‌धति में भी परिवर्तन हो रहे हैं। काम में नहीं आने वाले 'ङ' 'ञ' जैसे अक्षर ओझल होते जा रहे हैं। लेकिन पहले से आखिर तक सभी महाप्राण अक्षरों को (ख, घ, छ, झ, ठ, ढ, थ, ध, फ, भ) हम सिखा रहे हैं। कुछ अक्षरों को सिखाकर, फिर उनसे बनने वाले शब्दों को सिखाकर, उन अक्षरों को जोड़ते हैं। कुछ लोग शब्दों के द्‌वारा भाषा सिखा रहे हैं। यह इस उद्‌देश्य से किया जा रहा है क्योंकि अर्थहीन और स्व-अनुपयोगी अक्षरों को सिखाने से, उन्हें याद रखना असंभव है।

इस पद्‌धति में अक्षरों को एक क्रम में नहीं सिखाया जाता। अत्यधिक प्रचलित, उपयोगी शब्दों को सिखाकर, उसमें निहित अक्षरों का भी परिचय

कराया जाता है। इससे बच्चों में पहले से ही पर्याप्त शब्द भंडार होता है। सीखे गये सभी शब्द उपयोग में आते हैं। केवल ऊपरी तौर पर याद रखने की आवश्यकता नहीं है।

कुछ शब्दों को सीखने के पश्चात छोटे-छोटे वाक्यों को भी सिखाया जा सकता है। तब सीखे गये शब्द और अधिक उपयोग में आते हैं। प्रत्येक शब्द अर्थपूर्ण दिखायी देता है।

अक्षर पद्धति पर एक और महत्वपूर्ण प्रश्न है। इस पद्धति में पहले लिखना और फिर पढ़ना सिखाया जाता है। यह भाषा अधिगम क्रम के विरुद्ध है। पहले पढ़ना, फिर लिखना सिखाना ही वैज्ञानिक पद्धति। पहले पढ़ने के लिए, पहचान होनी चाहिए। उपयोग करने से ही याद रखना संभव होता है। यही नहीं जो पढ़ सकता है वही लिख सकता है। हम कितना भी क्यों न लिखवायें बताइए कि हिंदी अक्षरों को कितने लोग इसकी पहचान कर सकते हैं। इसका उपयोग न करना ही - इसका कारण है। हमारे मस्तिष्क में कितने ही आवश्यक विषयों को याद रखने की अद्भुत शक्ति है।

इसका कोई और विकल्प भी नहीं है। वास्तव में कोई भी विद्वान पढ़े गये विषय का 10 वाँ भाग भी लिखने में उपयोग नहीं करता है। महाकवियों के संबंध में भी ऐसा ही कहा जा सकता है। प्राचीन काल में शिक्षण के समय पट्टी कलम (slate-chalk) भी नहीं थे। इस शिक्षण में लेखन का कोई स्थान नहीं था, केवल पढ़ना ही सिखाया जाता था। इसका अर्थ यह नहीं है कि हमें लिखना नहीं सिखाना चाहिए। पढ़ने के लिए लिखना सिखाना आवश्यक नहीं है, यह केवल बोलने की बात है।

फिर शब्द पद्धति में क्या है? अधिक उपयोगी और सरल शब्दों को सिखाकर, फिर उनके अक्षरों को सिखाकर, फिर उसे एक क्रम में रखना ही भाषा सिखाना है, न! सिखाये गये शब्दों को उपयोग में लाने के अलावा, अर्थपूर्ण ढंग से सीखने के अलावा, सुनना-बोलना ही पूर्ण रूप से भाषा सीखना नहीं है। यह सहज प्रक्रिया नहीं है। यदि कहा जाय तो यह अक्षरों को पहले सिखाये जाने वाली पद्धति से मिलती-जुलती ही है। इस पर चर्चा नहीं हुई है।

इस बात पर अधिक जोर दिया जा रहा है कि - भाषा प्रपंचों (अक्षर, शब्द, वार्तालाप, गीत, कहानियाँ) को बच्चों द्वारा संदर्भानुसार, क्षमतानुसार, पर्याप्त रूप से उपयोग करवा कर पूर्ण रूप से भाषा सिखायी जा सकती है।

इसमें कोई क्रम नहीं होता है। किसी तरह का निर्देश भी नहीं होता है। बातचीत करना सीखने के समान ही बच्चे पूर्ण रूप से भाषा सीख लेते हैं। यही साध्य है कहने वालों से, यही वैज्ञानिक है, कहने वालों की संख्या कम नहीं है।

लिपि के ज्ञान के हज़ारों वर्षों बाद, इसे सिखाने के बारे में इतने तर्क-वितर्क होना हमारे लिए आश्चर्य की बात हो सकती है। जैसे-जैसे विज्ञान प्रगति करता है, शोध कार्यों के द्वारा नये अविष्कार होते हैं जिससे इस प्रकार के कुछ तर्क प्रस्तुत होते रहते हैं। व्यावहारिक रूप से जो साध्य हैं, वे ही स्थायी होते हैं। शेष कितने ही आधुनिक, कितने ही प्राचीन क्यों न हो अदृश्य हो जाते हैं।

बालक के सहज स्वभाव और शिक्षण क्रम में संबंध के बिना केवल यांत्रिक रूप से सिखाना केवल भाषा के लिए ही नहीं बल्कि किसी भी विषय के लिए न्यायसंगत नहीं है। यह सभी पर लागू होने वाला सामान्य नियम है। इसे ध्यान में रखने पर हमारे द्वारा उपयोग में लाये जाने वाली पद्धति की कमियों का आसानी से पता लग सकता है।

''चदुवु-विज्ञानम्', जिला प्राथमिक विद्या कार्यक्रम

ई) बच्चों को कौन सी पुस्तकें पढ़नी चाहिए? कौनसी कथाएँ पढ़नी चाहिए?)

- कोड़वगंटी कुटुंबराव संवेदन, अक्तूबर, *1968*

हमारे देश में बाल साहित्य अभी-अभी उपलब्ध हो रहा है। बंगाली और हिंदी भाषा में द्‌वितीय विश्व युद्‌ध के पहले से ही बाल पत्रिकाएँ थीं। तेलुगु में बाल पत्रिकाएँ स्वतंत्रता प्राप्ति के दिनों में दिखायी दी।

मेरे बचपन का बाल-साहित्य कुछ अलग नहीं था। जैसे ही मैंने पढ़ना - लिखना सीखा मुझे 'नीति दोहे' कण्ठस्थ करने के लिए कहा गया। उस समय पॉकेट साइज पुस्तकें या कथाएँ नहीं थीं। मैंने भगवत् गीता से लेकर, रामचरितमानस, प्रहलाद चरित्र जैसी कथाएँ पढ़ी है। उसमें के बहुत से पद्‌य मुझे अभी भी याद है।

50 वर्ष पहले यही बाल साहित्य था। वास्तव में देखा जाय तो इस साहित्य की रचना बच्चों के लिए नहीं की गयी थी। बड़ों द्‌वारा पढ़े जाने वाले साहित्य में से बच्चों को काम आने वाले साहित्य को लेकर काम चलाया जाता था। आज हमें बाल साहित्य पर पाश्चात्य लोगों के अभिप्रायों को मानने का कोई लाभ नहीं है।

लगभग 20 वर्षों से मेरा संबंध बाल साहित्य से होने के कारण यह कैसा होना चाहिए? कैसा नहीं होना चाहिए? जैसे विचार उठ रहे हैं। कुछ समय पश्चात् इसमें काल दोष हो सकता है। किंतु वर्तमान में ये विचार उचित हैं। यह मानकर मैं उन्हें यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ। पशु-पक्षियों से संबंधित कथाओं, देवताओं, राक्षसों, मंत्रियों, परियों से संबंधित कथाओं, समाज से संबंधित लोक कथाओं का बाल साहित्य में प्रमुख स्थान होता है।

वास्तविकता :

उपर्युक्त उल्लेखित कथाओं का वास्तविकता से संबंध नहीं है। ओलिवर गोल्डस्मिथ का कहना है कि ''छोटी मछलियों से बात करवाना ही बहुत कठिन है।'' किंतु बाल-साहित्य में ऐसी वास्तविकता की आवश्यकता होती है। बच्चों को उनके द्‌वारा सुनी गयी या पढ़ी गयी कथाओं की घटनाओं और प्रसंगों को स्वयं से जोड़ने की आवश्यकता नहीं है। उन्हें उनसे अपने आपको अलग रखकर आनंद लेना चाहिए। ''एक राजा था, उस छह बेटे थे। छह के छह बेटे एक दिन शिकार के लिये गये और छह मछलियाँ पकड़कर लाये। उन मछलियों को धूप में सुखाया. .... कौन सा राजा? छह लोग जाकर छह मछलियाँ ही क्यों लाये? छह मछलियों को सुखाने से क्या होगा? इस प्रकार के संदेहों को उस समय की कथाओं में स्थान नहीं था।

कुछ नीति कथाओं को कुछ लोग आधुनिक रूप देने की कोशिश कर रहे हैं। यह गलत हैं। माँस का टुकड़ा चोंच में पकड़कर रखने वाले कौए से लोमड़ी कहती है - ''कौएँ मामा, कौएँ मामा। एक गाना गाओं ना।'' यह सुनकर कौआ आधुनिक तरीके से माँस के टुकड़े को पैर के नीचे रखकर, गाना गाता है और लोमड़ी को 'मूर्ख' बनाता है। यह नीति कथा नहीं है, जर्नलिज़्म है।

बाल-कथाएँ, बच्चों के वर्तमान जीवन से संबंधित होनी चाहिए, उसमें वास्तविकता होनी चाहिए। यह सोचकर कुछ लोग रचनाएँ लिख रहे हैं। मान लीजिए कि सीता के जन्मदिन का उत्सव है। दादी उसे स्नान करवा रही है। उसे पिताजी द्वारा लाये गये नये कपड़े पहनाये जा रहे हैं। बड़े भाई के द्वारा लाया गया नया रिबन उसके बोलों में बाँधा गया है। माँ पूरी, जलेबी, बादाम का हलवा, मैसूर पाक बना कर खिला रही है।

इस प्रकार कहानी चलती रहती है। ये बच्चों की कहानी नहीं है। बड़े लोग कुछ मास के बच्चों से (उनको समझ में आ रहा है, उनकी ही भाषा में बात कर रहे हैं, समझकर) बेटा? यह चाहिए क्या? पूछते हैं? उपर्युक्त कहानी भी इसी प्रसंग के समान होती है। इस तरह की कहानियाँ यदि बच्चे अधिकता में से पढ़ते हैं तो उन्हें अपने परिसर से विरक्ति होने लगती है। सिनेमा में दिखाये जाने वाले प्रेम को, वास्तव जीवन में देखकर, बड़े होकर ये बच्चे दमन किए गए हैं कहकर समझते हैं। क्योंकि इन कथाओं में जीवन की वास्तविकता को sterilize करके प्रस्तुत किया जाता है जो वास्तव में भ्रम उत्पन्न करने वाली होती है। मछलियाँ या बगुले द्वारा बातचीत की जाने वाली कथाओं में ये सब नहीं होता है।

मूल भाव :

बाल साहित्य को चाहिए कि वह बच्चों के मस्तिष्क में कुछ मौलिक भावों की उत्पत्ति पर बल दे। उदाहरण स्वरूप : मित्रता, त्याग, बलिदान, कर्मठता, न्यायप्रियता आदि। अन्याय पर विजय प्राप्ति से संबंधित कहानियाँ कितनी भी कृत्रिम या अवास्तविक क्यों न हो, वे बच्चों के मस्तिष्क पर बहुत बड़ा प्रभाव डालती है। निराशा, स्वार्थपरकता, अहंकार, क्रूरता, अधर्म, अन्याय, कृतघ्नता आदि विषयों से संबंधित कहानियेंाकी शिक्षा देने से उनके मन को तृप्ति मिलती है।

कुछ-कुछ सद्गुणों का अलग-अलग समय में दुर्लभता से विकसित किये जाने के कारण उसका स्वरूप परिवर्तित हो रहा है। दयाभाव अच्छा होता है। निस्सहाय लोगों पर दया दिखाने से कोई नुकसान नहीं होता किंतु यदि यही दया यदि दुर्गुणी पर दिखायी जायी तो हम मुसीबत में फंस जाते हैं। हड्डियों के ढाँचे से शेर को पुनर्जीवित करना युवकों (ब्राह्मण युवक) की दया नहीं थी बल्कि मुसीबत को बुलाना था। ऐसी मुसीबतों का हल लोमड़ी युक्ति से करती है, इसीलिए युक्ति (सूझ-बूझ) कथाओं का बाल-साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान होता है।

स्थूल रूप से देखने पर हमें लगता है कि बच्चों की क्षमता का विकास करने वाला अच्छा साहित्य पर्याप्त रूप से प्राप्त नही है। सत्याग्रही को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। ऐसे पात्रों से युक्त कहानियों को पढ़ने से बच्चों में भी उत्तम चरित्र का निर्माण होता है। भारत जैसे विशाल देश के लिए यह आवश्यक है कि यहाँ के बच्चों का ध्यान संपत्ति पर नहीं बल्कि 'चरित्र निर्माण' पर हो। विभिन्न वृत्तियों से संबंधित लोककथाएँ जैसे : मनुष्यों द्वारा राक्षसों पर विजय प्राप्त करना, सेवकों द्वारा धनवानों का मानभंग किया जाना, अति साधारण मनुष्य में विलक्षण प्रतिभाओं का होना, यहि सारे विश्व में प्रचलित हैं। अपने संप्रदाय से हटकर दूसरे संप्रदाय की कहानियों को पढ़ना भी बच्चों के लिए लाभकारी होता है। छोटे बच्चों को चोर और राक्षस का डर नहीं होता, इसीलिए कुछ नहीं होता है किंतु ऐसे विषयों से संबंधित कहानियों में कमी करनी चाहिए। किसी धर्म-विशेष या व्यक्ति विशेष (देवता) के प्रचार से संबंधित कहानियाँ भी बच्चों को नहीं सुनाना चाहिए। इसका अर्थ यह नहीं है कि कथाओं में भगवान या भक्त नहीं होने चाहिए। भगवान पर विश्वास करने से ही सब सुख प्राप्त होता हैं, ये विचार बिल्कुल गलत है और बच्चों को सिखाना और भी ज्यादा गलत है। बच्चों में मानवता और सद्गुणों का विकास करना अधिक महत्वपूर्ण है।

रचना-विधानः-

इसके पात्र बहुत अच्छे, बहुत बुरे, बहुत बुद्धिमान, बहुत मूर्ख, बहुत सुंदर या कुरूप होने चाहिए। बहुत हद तक उत्तम चरित्र वाले और बुद्धिमान पात्र बाल-साहित्य के लिए आवश्यक होते हैं। बच्चों के लिए लिखना एक महान् कला है।

बाल-गीत, अन्य रचनाएँ :-

वास्तव में देखा जाय तो बड़ों से अधिक बच्चे गीतों का आनंद लेते हैं। बच्चों को बालगीत कितने उपलब्ध हो रहे हैं यह मुझे पता नहीं है। किंतु ये बच्चों के लिए बहुत आवश्यक होते हैं।

बच्चें के लिए 'विज्ञान' की भी आवश्यकता होती है। उन्हें इस ''स्पुतनिक-हाइड्रोजन'' के युग में, अनेक वैज्ञानिक विषयों के बारे में जानने की आवश्यकता है। अंतरिक्ष पर, धरती पर और समुद्र में अनेक अनुसंधान हो रहे हैं। इनके बारे में जानकारी होनी चाहिए। यही नहीं बच्चों को बचपन से ही स्वास्थ्य से संबंधित अंशों के बारे में जानकारी होनी चाहिए।

बाल-ग्रंथ :-

बाल-ग्रंथ दिखने में सुंदर और आकर्षक होने चाहिए। अक्षरों का आकार बड़ा होना चाहिए। चित्र विचारोत्तेजक और आकर्षक होने चाहिए। उनमें बाल-वातावरण का प्रतिबिंब होना चाहिए। वे आसानी से उपलब्ध होनी चाहिए।

इस समस्या (पुस्तकों का उपलब्ध न होना) के समाधान के निम्न उपाय हो सकते हैं -

1) सरकार को चाहिए कि वह बाल-पुस्तकों पर सब्सिडी दें।
2) प्रकाशकों द्वारा ये पुस्तकें हज़ारों की संरूपा में प्रकाशित की जायें।
3) जन्मदिन पर या अन्य त्यौहारों पर बड़ों द्वारा बच्चों को पुस्तकें उपहार स्वरूप दी जानी चाहिए।
4) आंध्र प्रदेश, बाल-ग्रंथों के प्रकाशन में बहुत पीछे है। इसका प्रमुख कारण हैं - अच्छे मुद्राणालयों, प्रकाशन केंद्रों, बच्चों के स्तर के अनुसार चित्र उतारने वाले चित्रकारों का अभाव।
5) अधिकतर प्रकाशक पुस्तकों की बिक्री के लिए रामायण और महाभारत की कथाओं और उनके चित्रों पर ही ज़ोर देते है। बच्चों को रामायण और महाभारत की आवश्यकता तो है पर इसके साथ ही यदि लिखने वाले हो और चित्र उतारने वाले हों तो और भी अच्छे बाल-साहित्य की ज़रूरत है।

ऊ) भाषा - अधिगम में कहानियों का क्या स्थान है?

प्रो. कृष्ण कुमार, दिल्ली विश्वविद्यालय

हमारी पाठशालाओं में यदि कहानियों के लिए एक-दो कालांश निर्धारित किये जायें तो कितना अच्छा होगा। इस प्रकार का अवसर प्राप्त होने पर बच्चे पाठशाला से दूर नहीं भागेंगे। इस तरह का वक्तव्य देने पर कई लोग मुझे आश्चर्य से देख सकते हैं और मुझसे पूछ सकते हैं कि - ''कहानियाँ सुनाने के मात्र से ही क्या 'ड्राप आऊट' (Dropouts) की संख्या में कमी आ सकती है?'' इतनी बड़ी समस्या का इतना छोटा समाधान बताने पर वे मेरा उपहास उड़ा सकते हैं या मुझसे सूहानुभूति प्रकट कर सकते हैं।

इससे भी अधिक घोर समस्या यह है कि हमारी अध्यापक शिक्षण संस्थाओं में कहानियों को बिल्कुल भी महत्व नहीं दिया जाता है। ''कहानियों के महत्व' पर पूरे पाठ्यक्रम में या तो एक पाठ रखा जाता है या कभी-कभी उसकी उपेक्षा भी कर दी जाती है।

हमारे अध्यापकों को कम से कम तीस कहानियाँ सुनानी आनी चाहिए। यदि हमारे अध्यापकों को प्राचीन कहानियों पर पकड़ होगी तो कितना अच्छा होगा। 'पकड़' से तात्पर्य है - शुद्ध और स्पष्ट उच्चारण के साथ कहानी कहने की क्षमता।

सहस्त्राब्दियों से कहानियाँ सुनाना हमारे समाज की परंपरा है। कई शताब्दियों से हज़ारों से हज़ारों पौराणिक कहानियाँ एक कान से दूसरे कान तक, एक हृदय से दूसरे हृदय तक पहुँचती आयी हैं। हज़ारों की संख्या तक न पहुँचकर यदि हमारे बच्चों को कम से कम तीस कहानियाँ सुनायी जायेंगी तो वे अनेक मूल्यों को सीख सकेंगे। अन्य विषयों की जानकारी होगी। इससे पढ़े जाने वाले विषयों के साथ-साथ अन्य पाठ्य अंशों की महत्ता के बारे में भी बच्चों को पता चलता है।

कहानियाँ कहाँ मिलती है?

पौराणिक कहानियों का क्या अर्थ है? उनका क्या महत्व है? वर्तमान समय में यदि अध्यापकों को कहानियाँ सुनाने के लिए कहा जाता है तो वे बाल-

पत्रिकाओं पर निर्भर रहते हैं। कॉमिक्स, वास्तविक कहानियाँ या बड़े-बड़े चुटकुले बच्चों को सुनाने के लिए वे झिझक रहे हैं। मुझे संदेह है कि क्या छह वर्ष का बच्चा प्राचीन कहानियों से प्रभावित हो सकता है।

हमारी सांप्रदायिक कहानियों के कुछ प्रमुख लक्षण होते हैं। ये लक्षण वर्तमान पत्रिकाओं में प्रकाशित कहानियों में दिखायी नहीं पड़ते हैं। अच्छी कहानियों के लक्षण क्या होते हैं? इसके बारे में बाद में सोचेंगे। इससे पहले ये देखेंगे कि अच्छी कहानियाँ कहाँ मिल सकती है?

पंचतंत्र की कहानियाँ, जातक कथाएँ, महाभारत, विक्रमादित्य की कहानियाँ और विभिन्न, बोस्टन, बीरबल, तेनालीराम, लोककथाएँ, जितनी चाहे उतनी मिल सकती हैं। केवल हमारे देश में ही ऐसी अच्छी कहानियाँ सारे विश्व में मिल सकती हैं। इतना शोध हमारे लिए कहाँ संभव है? ऐसा आप कह सकते हैं। किंतु गहराई में जाने पर हम इसके विशेष लक्षणों को जान सकते हैं। आइए, हम इस कथा का विश्लेषण करेंगे।

अब खरगोश का, सिंह का भोजन बनने का दिन आ गया था। खरगोश के गुफा तक पहुँचने तक सिंह भूख से तड़प रहा था। वह कुछ सोचने - समझने की स्थिति में नहीं था। खरगोश ने अब अपना झूठ-पुराण शुरू किया। क्या सिंह से बातचीत करने का यह संदर्भ सही था? कहानी सुनने वाले कह सकते हैं कि यह संदर्भ सही नहीं था। खरगोश को यह पता था कि भूख से क्रोध तीव्र होता है, इसीलिए उसने सिंह से देर से आने का कारण बताते हुए कहा कि - किस प्रकार वह रास्ते में दूसरे सिंह से अपनी जान बचाकर आया है। उसने बिल्कुल सही निशाना लगाया था। शक्तिशाली को अहंकार अधिक होता है। कितनी भी बार हारने पर वे सुधरते नहीं है। इसीलिए सिंह ने भूख को ताक पर रख दिया और शत्रु का हाल चाल जानने के लिए खरगोश के साथ चल पड़ा। वे दोनों कुएँ के पास पहुँच गये।

फिर से यह खरगोश के लिए संकट का समय था। (यहाँ कहानी में एक और मोड़ आता है।) यहाँ भी खरगोश चतुराई से सिंह की अल्प बुद्धि और अधिक क्रोध पर निर्भर था। सिंह कुएँ में अपने प्रतिबिंब को अपना शत्रु समझकर कुएँ में कूद पड़ता है और मर जाता है।

इतने वर्षों से, इतनी प्रसिद्धि प्राप्त इस कहानी का आइए हम गहराई से विश्लेषण करें। इस कहानी की विषय-वस्तु सामान्य नहीं है। पैशाचिक प्रवृत्ति वाले, दुर्जन व्यक्ति से अपनी जान बचाने के लिए खरगोश जैसे छोटे प्राणी को क्या करना चाहिए? यह एक बड़ा प्रश्न है? साधारणतः हम बच्चों को ऐसे विषयों से दूर रखना चाहते हैं। लेकिन विचित्र बात यह है कि बच्चे इन बड़े विषयों को पसंद करते हैं? क्यों पसंद करते हैं? इसका विश्लेषण बाद में करेंगे। यहाँ पर एक और अंश पर ध्यान देने की आवश्यकता है। यहाँ संदर्भ यह है कि - किस प्रकार कई छोटे-छोटे प्राणी भी बलवान शत्रु पर विजय प्राप्त करते हैं। इसमें से इसी एक प्राणी (खरगोश) ने संकट से उबरने के लिए अपना कदम आगे बढ़ाया। इसमें किसी प्रकार की नीति नहीं है। ऐसा झूठ बोलने पर हम एक खरगोश की तुलना दूसरे खरगोश से करते हैं। लेकिन यहाँ इस छोटे से प्राणी (खरगोश) ने असाधारण व्यक्ति धैर्य और आत्म विश्वास का परिचय दिया है। अंत तक उसने कोशिश की और उसने अपनी जान बचा ली। उसने शक्तिशाली सिंह के सामने साधारण प्राणी के समान डर-डर कर बात की और अपने काम में सफल हुआ।

इस कहानी के आचरण संबंधी लक्षणों पर भी हमें ध्यान देना चाहिए। जब तक सभी जानवर सिंह की बात मानते हैं, उसका भोजन बनते हैं, तब तक सब ठीक ठाक चलता है, किंतु खरगोश की बारी आने पर कहानी में बदलाव आता है।

अब कहानी एक क्षण के लिए रुके बिना आगे बढ़ती जाती है। यदि खरगोश इस परिस्थिति से बाहर आने के लिए एक क्षण भी व्यर्थ करता था तो मुसीबत आ खड़ी होती थी। खरगोश ने जो कदम उठाया था वह बड़ा खतरनाक था। लेकिन खरगोश उसी पर दृढ़ था। यहाँ पर श्रोता (सुनने वाला) को पलक झपकने का भी समय नहीं था। वह खरगोश का पक्षपाती था। खरगोश का हर कार्य उसे उचित प्रतीत हो रहा था। हमारे श्रोता खरगोश की ओर से सोचना आरंभ करते हैं।

मैं समझता हूँ कि, बच्चे इस कहानी को इतना क्यों पसंद करते हैं? यह जानने के लिए इतना विश्लेषण काफी है। उसमें उन्हें केवल और केवल खरगोश का पात्र अच्छा लगता है। वे स्वयं को उसके स्थान पर रखकर देखते हैं। खरगोश को जिन प्रश्नों का सामना करना पड़ा था, वैसे अनेक प्रश्न उनके जीवन में उठते रहते हैं।

बच्चे छोटे और बलहीन होते हैं। अधिकांश संदर्भों में उन्हें जो पसंद नहीं होता है, उसे करना पड़ता है। बलवान और शक्तिशाली लोगों के कारण वे संकट में पड़ जाते हैं। खरगोश के सामने उपस्थित प्रश्नों और बच्चों के द्वारा किये जाने वाले प्रश्नों में बहुत समानता है। हमने इसे कभी नहीं पहचाना है। हम हमारे तरीके से उन्हें अपने वश में करके उनसे नित्य काम करवाते रहते हैं।

जिस प्रकार अचानक किसी बंधु की मृत्यु होने पर उनके मस्तिष्क पर पड़ने वाले प्रभाव और उसमें उत्पन्न हलचल से हम अनजान रहते हैं। उसी प्रकार शक्तिशाली बड़ों से उनका जो घर्षण होता है, उसे भी हम पहचान नहीं सकते हैं।

इसीलिए कहानी के आरंभ में ही बच्चे स्वयं को खरगोश के रूप में देखते हैं। कहानी के आगे बढ़ने पर खरगोश का आकर्षण बढ़ जाता है। खरगोश के द्वारा उठाया गया कदम सफल हो जाता है। इससे खरगोश ने स्वयं की ही नहीं सभी की समस्याओं का समाधान किया है। बच्चे इस तरह के समाधानों से प्रेम करते हैं। खरगोश के निर्णय में बच्चों को एक और बात भी पसंद आती है। वह है- एक उपाय द्वारा, स्वयं को बचाना। देर क्यों हुई? सिंह द्वारा यह प्रश्न करने पर, खरगोश के द्वारा दिया गया उत्तर बच्चों को क्यों पसंद आया होगा? क्योंकि कई बच्चे ऐसे ही उपायों द्वारा 'संकटों' से उबरते हैं। इस

उपाय से खरगोश ने स्वयं को ही नहीं बचाया बल्कि सिंह का भी अंत कर दिया। शत्रु को हानि पहुँचाये बिना खरगोश संकट से बाहर नहीं आ सकता था। इस प्रकार यह कहानी बुराई का विनाश करने वाले साहासिक कृत्य को नाटकीय तौर पर प्रस्तुत करती है। इससे क्या सीख मिलती है? स्वयं की रक्षा के लिए किये गये साहसिक कार्य से हटकर इसमें कोई नीति नहीं हैं। बच्चों के दृष्टिकोण से देखा जाय तो इस कहानी में प्रशंसा करने लायक कुछ भी नहीं है। बड़ों के दृष्टिकोण से देखने पर यह कहानी नीतिहीन प्रतीत होती है। खरगोश के द्वारा किये गये धोखे के अलावा कुछ भी नहीं है।

कहानियों के उद्देश्य क्या है?

इसका अर्थ यह है कि बच्चों को सुनायी जाने वाली कहानियों में नीति बिल्कुल नहीं होती है। किंतु 'सिंह-खरगोश' की कहानी में प्रत्यक्ष नीति न होने पर भी अप्रत्यक्ष रूप से नीति विद्यमान है। बच्चों को भावातिरेक करने वाले अंश इसमें एक भी नहीं है। किसी समस्या के उपस्थित होने पर उसका सामना किस प्रकार सूझबूझ और धैर्य से करना चाहिए, यह हमें बताती है। सही नहीं इससे हमें यह भी पता चलता है कि - सझ-बूझ से असंभव कार्य को भी संभव बनाया जा सकता है।

किंतु सांप्रदायिक अर्थ में हम इस तरह की अप्रत्यक्ष नीति को कथा-नीति के रूप में नहीं मानते हैं। नीति स्पष्ट होनी चाहिए।

इस चर्चा का निष्कर्ष क्या है? हमारी सांप्रदायिक कहानियों के मुख्य उद्देश्य बच्चों के नैतिक मूल्यों का विकास नहीं है। बच्चों को हम जो कहानियाँ सुनाते हैं, उनसे वास्तविक रूप में जो लाभ होते हैं, अब हम उन्हें देखेंगे।

उत्तम श्रवण शक्ति :

'अच्छा श्रोता' से क्या तात्पर्य है? अंत तक सुनने वाला अच्छा श्रोता होता है। किंतु कुछ लोग अंत तक नहीं सुनते हैं। बीच-बीच में विघ्न डालने वाले भी बहुत लोग होते हैं। आजकल सुनने वालों की संख्या बहुत कम हो गयी है। बड़े-बड़े प्रबंधन पाठ्यक्रमों में 'सुनने' को एक अच्छे कौशल के तौर पर देखा जा रहा है। कहानियाँ सुनने से, छोटी उम्र से ही 'सुनने' की क्षमता का विकास बड़े होने पर यही क्षमता हमारे लिए उपयोगी सिद्ध हो सकती है। आज हमारे देश में सुनने वालों की संख्या घटती जा रही है। छोटी उम्र में बच्चों को कहानियाँ न सुनाया जाना, मेरे अभिप्राय में इसका प्रमुख कारण है।

कल्पना करना, तर्क करना :

बच्चों को जो कहानियाँ पसंद आती हैं, वे उन्हें बार-बार सुनना चाहते हैं। अनजाने में ही ऐसी कथाओं पर उनकी सोच बढ़ती जाती है। दो-तीन बार पढ़ने के बाद कहानी में आगे क्या होगा, वे पहले ही बता देते हैं। आगे घटने वाले प्रसंग को पहले से बता सकना भी एक प्रकार की 'क्षमता' है। एक ही कहानी को बार-बार सुनने से ऐसी क्षमता का विकास होता है। उनके आत्मविश्वास में वृद्धि होती है। उनके सर्वांगीण विकास में यह सहायक होता है। पहली और दूसरी कक्षाओं के बच्चे जो 'पढ़ना' सिखाने की स्थिति में होते हैं, उनके लिए 'आगे क्या होगा'। बता सकने की क्षमता बहुत ही उपयोगी सिद्ध होती है।

गणित सीखते समय भी इस क्षमता का बड़ा महत्व होता है। गणित के सूत्रों को पहले से ही सोचकर, बता सकने पर समाधान निर्भर होता है। इसीलिए मेरे विचार में गणित के अधिगम और कहानी श्रवण की क्षमता के बीच गहरा संबंध होता है। कहानियों के भी कुछ नियम और तरीके होते हैं। इन्हें बच्चे

सुनकर ग्रहण करते हैं। ऐसा करने वाले कुछ बच्चे आगे क्या होगा - यह सोचकर या कल्पना करके बता सकते हैं। ऐसे बच्चे गणित के सूत्रों को अच्छी तरह सिखा सकते हैं।

दूसरी दुनिया :

बच्चे अपने आस-पास की दुनिया को कहानियों से जोड़ते हैं। स्वयं के द्वारा भाग लिये गये संदर्भों, जाने-पहचाने मनुष्यों और पात्रों को वे कहानियों में देखते हैं। आप सोच सकते हैं कि आपको इससे क्या करना है किंतु ये भी हमारे जीवन का एक हिस्सा है। यदि हमने इन पात्रों को कभी देखा भी नहीं है तो भी ये हमारी कल्पना में जगह बना लेते हैं। छोटी उम्र में ऐसा प्रायः होता है। जीवनभर यह क्रम चलता रहता है। बच्चों के आस-पास यदि कोई बुरा व्यक्ति नहीं होता है तो भी वे बुरे व्यक्ति के बारे में सोचते रहते हैं। इसी प्रकार वे असाधारण प्रतिभा वाले लोगों, विद्वानों, से मिलने के अवसर तलाशते रहते हैं। महापुरूषों पर गर्व करना और दुर्जनों से भयभीत होना उनकी स्वभावगत विशेषता होती है। हमारी सांस्कृतिक कहानियाँ बच्चों के इन गुणों के अनुकूल न होने के कारण ही, उनको आकर्षित करने में विफल रही है। बच्चे कहानियों में जो दूसरी दुनिया की कल्पना करते हैं, उसमें एक क्रमबद्धता होती है। उस क्रम में ही कुछ नैतिक मूल्य होते हैं। किंतु हम जिन सांस्कृतिक परंपराओं में विश्वास करते हैं वे उनके आधार पर नहीं होते हैं। 'सिंह-खरगोश' की कहानी में खरगोश को जीतने के लिए कुछ तरीके अपनाने पड़े थे, उसे झूठ बोलना पड़ा था। अपनी जान बचाने के लिए ये तरीके सही थे किंतु सांस्कृतिक अर्थ में इसे अनैतिक भी माना जा सकता है।

नवीन शब्द भंडार

कहानियाँ सुनाने से बच्चों के भाषा भंडार में भी वृद्धि होती है। बातचीत करना एक व्यक्तिगत कौशल है और इस बातचीत से विश्व को नाम देना भी व्यक्तिपरकता है। किंतु इसीका एक शब्द है - सामाजिक कौशल। क्योंकि हमारे अनुभवों को दूसरों से बाँटने का आधार भी बातचीत ही है। शब्दों के ये व्यक्तिगत और सामाजिक लक्षण ही, शब्दों के अर्थों को निर्धारित करते हैं। उदाहरण के तौर पर - बच्चे को 'भूख' क्या है, इसका पता उसे अनुभव से हैं। इससे वह समझ सकता है कि सिंह जब 'भूखा' था तो, उसकी दशा के बारे में वह समझ सकता है। इस प्रकार 'भूख' यह परिचित शब्द, उसे (श्रोता) सिंह की दशा समझने में हैं। उसे अपने स्वयं के शब्द भंडार का प्रयोग, दूसरों के लिए करने की योग्यता का विकास होता है। 'पढ़ना' सीखने वाले बच्चों के लिए यह बहुत सहायक होता है।

कहानियों के ये चार उपर्युक्त उद्देश्य (प्रयोजन) पढ़ने में भी उपयोगी होती है। पढ़ते समय वे भाषा-निर्माण के नियमों को समझ सकते हैं। पहले, सोचकर बोलने की आदत के विकसित होने से 'पढ़ने' के कौशल का भी विकास होता है। भाषा निर्माण के नियमों का परिचय होने पर कुछ वाक्यों के बाद, क्या आयेगा, ये भी बच्चे जान जाते हैं। इस प्रकार देखा जाय तो कहानियाँ सुनाकर, बच्चों के ज्ञान में अद्भुत रूप से वृद्धि की जा सकती है।

कहानी-कौशल

यदि हम कहानी सुनाना चाहते हैं तो कहानी पर हमारी पकड़ मज़बूत होनी चाहिए। उसमें बीच-बीच में रुकावट नहीं आनी चाहिए। हृदयग्राही कहानियों को हमें बहुत स्पष्टता से बोलना चाहिए। क्योंकि कहानी बोलने वाले और सुनने वाले के बीच में एक सजीव संबंध होता है। इसी प्रकार यदि कोई कहानी मन को छूने वाली होती है तो उस कहानी का स्केच (आरेख) हमारे मस्तिष्क में अंकित हो जाता है। उस समय हम श्रोता की मनोदशा के आधार पर कहानी में बदलाव कर सकते हैं। कभी-कभी कहानी को लंबी करनी पड़ती है तो कई छोटी करनी पड़ती है। जब खरगोश सिंह के सामने खड़ा होता है तब हम कहानी को रोक नहीं सकते हैं। उस समय कहानी तीव्र गति से चलती है। जब सिंह भूख से तड़पता हुआ सोच रहा था उस समय हम कहानी में धीमापन ला सकते हैं। इसी प्रकार जब खरगोश एक उपाय के साथ सहमा-सहमा जंगल से आता है उस समय भी कहानी पर हमारी 'पकड़' मज़बूत होती है।

कहानी में 'संवादों' को कैसे सुनाया जाय? ऐसे प्रश्न भी पूछे जाते हैं। इन्हें हम दो भिन्न-भिन्न आवाज़ों में सुना सकते हैं। हाव-भाव के प्रदर्शन द्वारा सुना सकते हैं। छोटे आकार की कठपुतलियों द्वारा भी 'संवादों' का प्रदर्शन प्रभावोत्पादक होता है। इस प्रकार अनेक सृजनात्मक विधियों का प्रयोग हम कर सकते हैं। ये विधियों बच्चों को उत्तेजित करने में सहायक होती हैं। एक कहानी को हर वर्ष अनेक बार बोलना पड़ सकता है। हमें इसके हिसाब से इसकी तैयारी करनी चाहिए। कथानक का अध्ययन भी एक कला है। यहाँ यह प्रश्न उठता है कि हमें इसकी तैयारी कैसे करनी चाहिए?

मेरा दृढ़ विश्वास है कि यदि कहानियाँ सुनाना किसी शिक्षक के जीवन का अविभाज्य अंग है तो उसका जीवन कभी निस्सार नहीं हो सकता। मेरा यह भी मानना है कि यदि इन सबका पालन करना है तो प्राथमिक पाठशाला के पाठ्यक्रम संबंधी दृष्टिकोण में बदलाव लाना आवश्यक है।

ऊ) बच्चे - पुस्तकों की दुनिया

- कीर्ति जयराम, दिल्ली

चार वर्ष के बच्चे में होने वाले बदलावों पर सावधानी पूर्वक ध्यान दीजिए। आप बच्चे का, घर के वातावरण से पाठशाला के वातावरण में जाने की क्रिया को बदलाव के रूप में लेते हैं। इन बदलावों या परिवर्तनों में कई अंश अंतर्निहित होते हैं। वे परिवर्तन ये हैं कि - इस उमर् के बच्चे अपने विचारों और रुझानों को मौखिक पद्धति से, अक्षर पद्धति में अभिव्यक्ति करना शुरू करते हैं। पाठशाला में आते ही अक्षर कहाँ से आ गये? अक्षर पद्धति में अभिव्यक्ति कहाँ से आयी? ऐसे प्रश्न आपके मस्तिष्क में उठ सकते हैं।

अक्षर की दुनिया में पहला कदम

इस मुद्दे पर बहुत सारे विश्लेषण हुए हैं। भाषाविदों और मनोवैज्ञानिकों ने अनेक शोध किये हैं। बातचीत से लिपि में बदलने वाले इस क्रम में हम बच्चों द्वारा तैयार की जाने वाली खेल वस्तुओं को, उनके द्वारा खींचे जाने वाली आड़ी-तिरछी रेखाओं को और अमूर्त संकेतों को ध्यानपूर्वक देख सकते हैं।

बच्चों की आकांक्षा बड़ों के समान व्यवहार करने की होती है। इसीलिए हम बच्चों पर पद्धतियों का प्रयोग करते हैं। नवीन समाचार व्यवस्था का निर्माण करते हैं। हमें याद रखना होगा कि अक्षरों की दुनिया में भी वे अनेक प्रश्न पूछ सकते हैं। बच्चे जो खेल खेलते हैं उनसे बड़े-बड़े तथ्य भी उजागर हो सकते हैं। मिट्टी में बच्चे तिनके से जो रेखाएँ खींचते हैं उनसे उनकी कल्पनाएँ साकार होती हैं। बड़ों को जो काम करने होते हैं, वे सब काम, बच्चे इस प्रकार करते हैं। थोड़ा ध्यान देने पर हमें पता चलता है कि हमारे द्वारा की जाने वाली चेष्टाओं को बच्चे नवीन रूप में प्रस्तुत करते हैं।

इन संकेतों को बच्चों ने कहाँ से सीखा है? अपने वातावारण से सीखा है। किंतु गाँव के बच्चों का वातावरण भिन्न होता है। शहरों के पढ़े-लिखे परिवारों के बच्चों का वातावरण भी भिन्न होता है। गाँव के बच्चों को चित्र, नमूने, दृश्य श्रव्य सामग्री आदि सहजता से उपलब्ध नहीं होती है। उन्हें पुस्तकें भी उपलब्ध नहीं होती है। धनिकों के बच्चों को मौखिक रूप से उपलब्ध कथाएँ, चुटकुले, हास्य-प्रसंग भी इन्हें प्राप्त नहीं होते हैं। टी.वी., माचिस की डिबिया पर लिखे अक्षर या वस्तुओं के पैकटों पर लिखे अक्षर ही इनकी 'अक्षर की दुनिया' होते हैं। इनके माता-पिता द्वारा कागज़-कलम लेकर काम करना इनकी कल्पना से परे का विषय होता है। इन्हें कैलेंडर या छायाचित्र भी प्राप्त नहीं होते हैं। पाठशाला में कदम रखने के बाद ही वे, ये सब देखते हैं। और इन्हें ये अवसर पाठशाला में रहने तक ही मिलता है।

हमारी व्यवस्था-हमारी पाठ्य-पुस्तकें

अब हम देखेंगे कि बच्चे पढ़ना-लिखना कैसे सीखते हैं? ध्वनियों के संकेत रूप को अक्षर कहते हैं। अक्षर के स्वरूप और ध्वनि के बीच कोई संबंध नहीं होता है। ध्वनियों के मेल से शब्द और शब्दों के मेल से वाक्य बनाये जाते हैं। यह एक जटिल प्रक्रिया है। वास्तव में देखा जाय तो 'सुनना-बोलना' भी इसी तरह की प्रक्रिया है। हज़ारों ध्वनियाँ होती हैं, हज़ारों शब्द होते हैं। वस्तुओं और शब्दों के बीच भी कोई संबंध नहीं होता है। फिर वाक्य निर्माण का क्या होगा? फिर भी बच्चे बोली गयी बात को समझ सकते हैं, बातचीत कर सकते हैं। यह प्रक्रिया कैसे चलती है?

भय और चिंतामुक्त वातावरण में बातचीत करने के अवसर प्रदान करने के कारण बच्चे सीखते हैं। लिखने के संबंध में भी यदि बात की जाय तो उसमें भी उन्हें विचारों को प्रकट करने की स्वतंत्रता होनी चाहिए। इसमें उनके अनुभव, कल्पनाएँ और कुछ भी हो सकते हैं। बातचीत का अवसर देने के कारण बच्चे अच्छे 'वक्ता' बन रहे हैं। लिपि में भी यही होता है। वास्तव में देखा जाय तो बच्चों की एक अलग ही दुनिया होती है। उस दुनिया के बारे में अभिव्यक्ति करने पर ही उनका भाषा पर अधिकार स्थापित होता है। भाषा के किसी भी कौशल का अर्जन इसी प्रकार किया जा सकता है।

अब पाठशाला के करीब आते हैं। हम अक्षरों से शुरुआत करते हैं। ये अक्षर केवल अमूर्त संकेत हैं, जिनका एक क्रम होता है। इस क्रम से बच्चों को वर्णमाला के ह्रस्व-दीर्घ, अल्पप्राण, महाप्राण या व्याकरण का ज्ञान देना आवश्यक नहीं है। हमें बच्चों को उनके विचारों को अभिव्यक्त करने का अवसर देना है। बात यहाँ खत्म नहीं होती है। हम बच्चों को अक्षरों को याद करवाते हैं ताकि वे कुछ समय के बाद शब्दों में इनका प्रयोग कर सकें। इन अक्षरों के प्रयोग में भी हम उन्हें शब्दों का बच्चों की आवश्यकताओं या ज़रूरतों से कोई संबंध नहीं होता है। इनकी स्वयं की दुनिया से भी कोई संबंध नहीं होता है।ये सब हमारे द्वारा बनाये गये चक्र या व्यूह के भीतर ही होता है।

अक्षरों या वर्णों को सिखाने की पद्धति जितनी विकृत है, उतनी ही विकृत हमारी पाठ्य-पुस्तकें हैं। पाठ्यपुस्तक में वाक्य निर्माण, ध्वनियों के क्रम से होता है। जो एक अर्थरहित, अपरिचित, कृत्रिम प्रक्रिया है। बच्चों को हर्षित देने वाला एक भी अंश उनमें नहीं होता है। बच्चे कहीं पर भी गलती न करें, यह देखने के लिए हम सदा उनकी गर्दन पर सवार रहते हैं, किंतु यदि कोई नया विषय सिखेगा तो गलती तो होगी ही। इसीलिए पुस्तकें साध्य बन रही है और रटंत विद्या हावी हो रही है। फलस्वरूप यहीं पर बच्चों की कल्पना (आलोचना) शक्ति खत्म हो जाती है। निजी पाठशालाओं और सरकारी पाठशालाओं में यही व्यवस्था प्रचलन में हैं।

पुस्तकें - बच्चे

बच्चे अक्षरों की दुनिया में किस तरह आगे बढ़ते हैं, यह अब तक आपने देखा है। और इसे आगे बढ़ने के लिए क्या हम पाठशाला में कुछ कर सकते हैं? हमने यह भी देखा है कि गरीब बच्चे अक्षरों की दुनिया से किस प्रकार दूर होते हैं। क्या इसका कोई समाधान हम पाठशाला में निकाल सकते हैं? अक्षरों की दुनिया में कदम रखने वाले बच्चों के लिए पुस्तकें किस प्रकार सहायक हो सकती हैं, यह हम देखेंगे।

1999 ई. के आंरभ में एस.सी.ई.आर.टी. दिल्ली में एक परियोजना आरंभ की गयी। इस परियोजना को बारह म्युनिसिपल विद्यालयों में अमल किया गया। ऐसा पता चलने पर कि अधिकांश बच्चे पाठशाला छोड़ रहे हैं, इस परियोजना को प्रारंभ किया गया। तीसरी कक्षा के कुछ बच्चों की पहचान की गयी और उन्हें सिखाया गया। इनके द्वारा पहली और दूसरी कक्षाओं के बच्चों को अक्षरों की दुनिया में कैसे प्रवेश कराया जाय, इसकी जानकारी प्राप्त करना ही इस परियोजना का उद्देश्य था।

इस परियोजना के प्रारंभ में ही पता चल गया कि १,२ कक्षा के बच्चों के लिए पाठ्यपुस्तकों के अलावा अन्य कोई पुस्तकें उपलब्ध नहीं थी। इसीलिए बच्चे पढ़ने और लिखने के लिए झिझकते हैं। यदि पाठ्यपुस्तक के वाक्यों में थोड़ा सा भी बदलाव किया जाता है तो वे उसे पढ़ नहीं पाते हैं। वे समझकर नहीं पढ़ रहे हैं। बल्कि केवल कह रहे हैं, यह मैंने जान लिया। इसी समय बच्चों की पढ़ने की तृष्णा अत्यधिक होती है, यह जानकर हमें आश्चर्य होता है।

सर्वप्रथम हम कहानी कहने से प्रारंभ करते हैं। बच्चों की दुनिया में कई अनगिनत कहानियों ने जन्म ले लिया है। इसके पश्चात कहानी को बीच में रोककर, इसके बाद क्या हुआ होगा? कहने के लिए कहते हैं, प्रत्येक का अलग-अलग जवाब था। बच्चे इस प्रकार बातचीत कर रहे थे मानो वे स्वयं कहानी कह रहे हैं। पुस्तकों को छोड़कर कहानी को जोर से पढ़कर सुनाया गया। बच्चे स्वयं की इच्छा से जहाँ चाहे वहाँ बैठकर कहानी सुनते थे। बड़े बच्चों ने छोटे बच्चों के लिए पुस्तकें जमा की। रविवार के समाचार-पत्र ले आये। बच्चे इनमें चित्रों को देखकर स्वयं से बातचीत करते थे। विचित्र बात यह है कि हम जिसे बहुत ही छोटा या बेकार समझते हैं वे भी बच्चों में अत्यधिक उत्साह का संचार करते हैं। पशु-पक्षी, कीड़े-मकोड़े, फूल-पत्ते भी वे बातचीत करते हैं। इस प्रकार बच्चे पुस्तकें पढ़ने के लिए आगे आते हैं। यह पढ़ना भी विचित्र होता है। मान लीजिए एक सिंह का चित्र है। तो वे कल्पना करते हैं कि मैं भी जंगल में गया और मैंने वहाँ एक बड़े सिंह को देखा। इस कल्पित अनुभव को वह सिंह के चित्र के साथ जोड़ता है। एक फूल को देखते ही वह कहता है कि मेरे गाँव में तो ऐसे बहुत सारे फूल उगते हैं। अर्थात बच्चे चित्रों, कहानियों से स्वयं के अनुभवों को जोड़ते हैं। पहले पाठशाला के शिक्षक इसका अर्थ समझ नहीं पाये। उनके दृष्टि में केवल स्लेट पर लिखना ही अक्षर सीखना है। वे इसे एक व्यर्थ काम समझते थे। लेकिन तत्पश्चात भाषा अधिगम में इन्होंने इसकी महत्ता को जाना तो उन्होंने भी अपनी तत्पश्चात भाषा अधिगम में इन्होंने इसकी महत्ता को जाना तो उन्होंने भी अपनी कक्षाओं में कहानियाँ सुनानी आरंभ कर दी।

अब हम इसका विस्तृत रूप देखेंगे। अक्षर व शब्दों से खेल खेलने से लेकर, अपने वाक्यों में कहना और पसंदीदा शब्दों को देखकर लिखने तक की क्रिया को हम जोड़ कर देखेंगे। बच्चों को अक्षर, शब्द व वाक्य का परिचय हो गया है। अक्षरों के रूप के साथ-साथ कुछ शब्दों को बाये से दायी ओर आगे बढाने से शब्द बनते हैं और शब्दों को बढ़ाने से वाक्य बनते हैं। बच्चे चित्र उतारकर कुछ लिखने का प्रयास करते हैं, किंतु उसमें वाक्यों का क्रम सही नहीं होता है। कुछ बच्चे शब्द लिखते हैं। चित्रों के नाम लिखते हैं और चित्र उतारकर, कौन क्या काम कर रहा है, वह भी लिखते हैं।

बच्चे जिज्ञासा से पुस्तकों को उलट-पुलट कर देखते हैं, उनमें निहित चित्रों की ओर आकर्षित होते हैं। इनमेंसे कई बच्चों को पढ़ना नहीं आता है, फिर भी वे अपना सिर पुस्तकों में रखकर ऐसा दर्शाते हैं, जैसे वे पढ़ रहे हों। वे पुस्तकों से बातें करते हैं, उसमें कुछ भी लिखते हैं। हर अंश को अपने जीवन के अनुभवों से जोड़ते हैं। ये कैसे संभव हुआ होगा? क्योंकि उन्हें 'स्वतंत्रता' दी गयी, इसीलिए यह संभव हुआ। हर काम में उनकी गलती ढूंढने की क्रिया को त्यागने से बच्चों में इस क्षमता का विकास हुआ।

एक कदम ऊपरः

इस उत्साह से मुझे और काम करने की प्रेरणा मिली। चार्टों को, चित्रों को दीवार पर लगाया गया। बच्चों के द्वारा लिखे गये अक्षरों को भी चार्ट के रूप में दीवार पर चिपकाया गया। उनके द्वारा उतारे गये चित्रों का भी प्रदर्शन कक्षा में करवाया गया। इन सबको इस तरह दीवार लगाया गया कि-बच्चे उन्हें आसानी से देख सकें। इससे हम में कुछ नया कहने का विचार उत्पन्न हुआ। दीवार पर कुछ 'संज्ञाएँ' लिखी। यह भी इस विचार का ही एक भाग है।ये 'संज्ञा' शब्द एक वाक्य में थे, जिनसे बच्चों को परीचित कराना था। जैसेः- अपने हाथ अपर उठाओ' आओ, खेल खेलें में संज्ञा शब्दों का ज्ञान प्राप्त करने लगे। उम्र में बड़े बच्चों के द्वारा इन 'संज्ञाओं' को लिखवाया गया। वे इन्हें लिखने के लिए एक-दूसरे से होड़ करते हैं। इसी प्रकार मनपसंद शीर्षकों को लिखवाया गया। पुस्तकों के नाम श्यामपट पर लिखकर उनकी पहचान करने को कहा गया। पहेलियाँ लिखवायी गयी। इस प्रकार बड़े बच्चे छोटे बच्चों के 'गुरुजी' बन गये।

एक कदम और ऊपर बढ़ाने के लिए अन्य विचारने जन्म लिया। बच्चों के अनुभवों को बोर्ड (रनिंग) पर लिखाया जाय। आरंभिक दशा में ये अनुभव छोटे-छोटे वाक्यों के रूप में हो सकते हैं। जैसे :- 'मैं' ने आज एक तोते को देखा'' ''कल हमारे घर एक कुत्ता आया'', ''मेरी पुस्तक फट गयी है,'' ''मुझे रोना आया' आदि। इन्हें लिखने में बच्चे बहुत सी गलतियाँ करते थे। गलतियाँ करने से कुछ नहीं होता है क्योंकि यहाँ हमारा उद्देश्य व्याकरण सीखाना नहीं था। हमने उन्हें जैसा चाहे वैसा लिखने की स्वतंत्रता दी थी। बच्चे इसी लिपि में लिखते थे, पढ़ते थे और चर्चा करते थे। जो पढ़ नहीं पाते थे, वे पढ़ सकने वाले के पास जाकर पढ़ते थे। धीरे-धीरे वे अक्षरों को पहचानने लगे थे।

एक और विचित्र बात थी - छोटे बच्चों के अनुभवों को बड़े बच्चों द्वारा लिखवाला जाना। ये अनुभव बड़े-बड़े वाक्य, या निरर्थक वाक्यों के रूप में हो सकते हैं। उन्हें वैसे ही लिखवाया गया और उन्हें पढ़कर सुनाने को कहागया। इन वाक्यों को चार्ट पर लिखकर दीवार पर लगाया गया। इस क्रिया के पश्चात् मैंने गौर किया कि छोटे बच्चे भी लिखने लगे। इतना सब कुछ लिखने के लिए छोटे बच्चों को इतनी भाषा नहीं आती है, इसीलिए चित्र उतारे गये। चित्रों के बारे में, चित्रों के नीचे बच्चों से या बड़े बच्चों से लिखवाया गया। यहाँ एक सावधानी रखनी है। जो कुछ भी लिखा जा रहा है, वह बच्चों की भाषा में होना चाहिए।

अपने अनुभवों को मैं शब्दों में बयान नहीं कर सकता हूँ। बच्चे कितना मज़ा ले रहे थे। वे बहुत उत्साहित थे। यदि हम ध्यान देंगे तो पता चलेगा कि यही पढ़ना-लिखना सीखने की आरंभिक दशा है। यह सुनना - बोलना सीखने की दशा के समान ही है।

थैले में, पुस्तकें :

कुछ समय तक मैंने और मेरे बच्चों ने मिलकर एक गाँव में एक पुस्तकालय की शुरूआत की। पुस्तकालय यानि क्या होगा? ऐसा सोचा गया। एक बस्ते में पुस्तकें ... बस। हम इन्हें हर शुक्रवार को पाठशाला ले जाते थे। बच्चों से प्रश्न पूछते थे। बच्चों से भिन्न-भिन्न तरीकों से इन कहानियों को समाप्त करवा कर फिर से बुलवाया जाता था। कुछ समय के लिए पुस्तकें घर के लिए देकर, आगले शुक्रवार को वापस ले ली जाती थी। पुस्तकों के साथ खेल, गीत, पहेलियाँ, वर्श, पहेलियाँ, स्व-कहानियाँ, चित्र उतारना, कहानियाँ लिखना गीत लिखना जैसी क्रियाएँ करवायी गयी। हमारा इस कार्य ने विशाल रूप ग्रहण कर लिया था। शुक्रवार के आते ही बच्चे नयी-नयी क्षमताओं का प्रदर्शन करते थे। धीरे-धीरे ये बात बड़े बच्चों तक और पाठशाला छोड़कर चली जानी वाली लड़कियों के कानों तक पहुँची। हमने उन्हें अपने पुस्तकालय का सदस्य बना लिया और उन्हें भी पुस्तकें दे दी। इन छोटे से गाँव में हमारे पुस्तकालय के १२० सदस्य बन गये। फटी हुई पुस्तकों को चिपकाना, और फटी हुई पुस्तकों को काटकर चार्ट बनाना जैसे बच्चे बड़ी खुशी से करते थे। इस अनुभव से हमें यह पता चला कि - बच्चों को उत्साहित करने वाली पुस्तकें हमारे पास नहीं हैं।

भोजन विराम में पुस्तकों का पठन :

मेरा एक और अनुभव सुनाता हूँ, सुनिए। मेरी पाठशाला में मैंने भोजन के विराम में इसीतरह के पुस्तकालय की शुरुआत की। मैंने पुस्तकें ले जाकर एक कमरे में रख दीं। बच्चों ने धीरे-धीरे इन पुस्तकों को देखकर प्रतिक्रिया प्रारंभ की। कुछ बच्चे दूर से ही इन पुस्तकों को देखते थे। कुछ इन पुस्तकों के चित्रों को उलट-पलट कर देखते थे। कुछ पुस्तकें लेकर पढ़ते थे। इसी क्रम में मेरा पुस्तकालय जानाधार बन गया। भोजन के समय में मैंकहाँ गायब हो जाता हूँ, इसका पता मेरे साथी अध्यापकों को नहीं था। किंतु कुछ समय पश्चात् उन्हें भी इसका पता चल गया। बाद में मैंने 'पुस्तक मित्रों' को तैयार कर लिया। मैंने उन्हें पुस्तकें घर पर पढ़ने के लिए देना आरंभ किया। यहाँ पर भी मुझे एक समस्या का सामना करना पड़ा। वह समस्या थी - पुस्तकों का अभाव । अच्छी बाल-पुस्तकों की बहुत कमी थी।

अंत में एक और बात मैं कहना चाहता हूँ। हमें ऐसी परिस्थिति का निर्माण करना चाहिए कि बच्चे पुस्तकों को अपना समझे। तभी वे पुस्तकों के पीछे भागेंगे। वे इस छोटे से पुस्तकालय को बी अनोखे ढंग से चालायेंगे। दूसरी बात यह है कि - हमें उन्हें ऐसी पुस्तकें पढ़ने के लिए देनी चाहिए, जिसमें उन्हें अपनी दुनिया दिखायी देती है। तीसरी बात - उन्हें अपने इच्छानुसार पुस्तकों के उपयोग की स्वतंत्रता दी जानी चाहिए। हमें याद रखना चाहए कि पुस्तकों को देखना भी एक प्रकार से पुस्तकें पढ़ना ही है। चौथी बात - पुस्तकों के द्‌वारा हमें भिन्न-भिन्न प्रकार की क्रियाएँ करवानी चाहिए। बच्चों की पसंद-नापसंदों को, अनुभवों को लिखवाना चाहिए। उनके द्‌वारा भाषा का विश्लेषण करवाना चाहिए। तभी वे अपने स्वप्नों को हमारे समक्ष साकार करेंगे। आरंभिक दशा में की गयी ये सभी क्रियाएँ, भाषा शिक्षण में (पढ़ना-लिखना में) एक मुख्य भूमिका निभाती हैं यदि हम ऐसा सोचते हैं, तो ही हम यह सब कर सकते हैं। केवल पाठ्यपुस्तकों को पढ़ाने से भाषा नहीं आती है, यदि हम ऐसा मानते हैं तभी हम हमारे लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं।

ऋ) कहानियों द्वारा भाषा कैसे सिखायी जा सकती है?

दादा-दादी की कहानियाँ, परियों की कहानियाँ, भूत-प्रेतों की कहानियाँ सुनने से सभी को अपना बचपन याद आने लगता है। शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में इन कहानियों का कितना महत्वपूर्ण स्थान है, इस बात से माता-पिता और शिक्षक भी अनजान है। यही हमारे शिक्षण की विफलता का प्रमुख कारण है।

कहानियाँ ही बच्चों की दुनिया है :

बच्चे यदि कोई एक कहानी सुन रहे हैं तो इसका अर्थ है कि उनमें अनेक क्षमताओं का विकास हो रहा है। संयम से, श्रद्धापूर्वक सुनने का कौशल उन्हें कहानियों से ही आता है। कहानी की समाप्ति तक वे पात्रों की चेष्टाओं और घटनाओं को अपने मन-मस्तिष्क में कैद करके रखते हैं। कहानी के विस्तार और निष्कर्ष के बारे में वे कल्पना करते हैं। कहानी में उनकी अपनी दुनिया होती है। उस दुनिया में वे प्रवेश करते हैं।

पढ़ना-लिखना की शुरुआत इसी दुनिया से होनी चाहिए। जो कहानी बच्चों के मालूम होती है, उसे सुनाते समय आप बच्चों की चेष्टाओं पर ध्यान दीजिए। हमारे द्वारा एक वाक्य पढ़े जाने पर आगे क्या होगा, उसके बारे में वे कल्पना करने लगते हैं। अर्थात् बच्चों को पढ़ना सिखाने का मुख्य बिंदु है - उनकी अर्थग्रह्चता। केवल अक्षरों या शब्दों को पढ़ाना अर्थरहित होता है। हमें बच्चों की क्षमता के अनुकूल विषयों को, अर्थपूर्ण ढंग से सिखाना चाहिए। ऐसए अच्छे और आसक्तिपूर्ण विषय कहानीके अलावा और क्या हो सकते हैं।

कहानी पढ़कर सुनाना :-

बच्चे एक कहानी सुनकर, साथी बच्चों के साथ चर्चा करके, स्वयं उस कहानी को पढ़कर, उसकी शुरुआत - 'हम कितने भी हो ...., इससे कर सकते हैं।

हमें सबसे पहले कहानी को पढ़कर सुनाना है। इसका अर्थ बच्चों को बिना गलतियों के शब्द या वाक्य लिखाना या सीखाना बिल्कुल नहीं है। यह एक जटिल प्रक्रिया है। इस व्यवस्था में बच्चे शब्दों या वाक्य-विन्यास को पहचानकर उन्हें ग्रहण करते हैं। कहानी सुनाते बातचीत करते समय बच्चे इन नियमों को क्रमबद्ध रूप में ही ग्रहण करती हैं। कहानी सुनाते समय हमें पहले यही समझना चाहिए कि - हम कहानी बच्चों के मनोरंजन के लिए सुना रहे हैं।

हमारे द्वारा सीखाये गये सभी अंशों पर प्रश्न पूछकर कितना समझ में आया यह देखने के लिए लिखाने का प्रयत्न करने से भाषा कभी-भी सिखायी नहीं जा सकती है। सूनना, देखना, पढ़ना, लिखना - इस क्रम के द्वारा बच्चे स्वयं ही भाषा के नियमों को सीखते हैं - हमें इस बात को स्वीकारना चाहिए। पहले हमें कहानी अच्छी तरह पढ़कर सुनानी चाहिए। बाद में आप देखेंगे कि अन्य प्रक्रियाएँ अपने आप संचालित होने लगती हैं।

कहानी से लिखने की ओर

एक और विषय यह है कि - बच्चे सुनी गयी कहानी को स्वयं ही चित्रित करने का प्रयत्न करते हैं। उस कहानी को वे चित्रों का रूप देना चाहते हैं। उनके ये चित्र अर्थहीन प्रतीत हो सकते हैं। किंतु फिर भी हमें उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए। बच्चे पहले पहल ही समझ में न आने वाले रहस्यों से पूर्ण चित्र उतारते हैं किंतु कुछ ध्यान देने पर हमें चित्रों के अर्थ समझ में आने लगते हैं। बच्चे इन चित्रों के नीचे कुछ लिखने के लिए उतावले रहते हैं। वे शब्द या वाक्य कुछ भी

हो सकते हैं। इनमें अनेक गलतियाँ भी हो सकती हैं। किंतु ये ही उनके लिए प्रधान विषय होते हैं। 'लिखना' सिखाने की प्रक्रिया में यह एक पहला प्रमुख कदम है। यहाँ मुख्य विषय बच्चों द्वारा बिना गलतियों के लिखना नहीं है। मुख्य बात इस पर ध्यान देने की है कि - बच्चे क्या कर रहे हैं? क्या लिख रहे हैं?

अभिनय में, कल्पना में ....

जिस प्रकार कहानी को पढ़वाया जाता है, लिखवाया जाता है उसी प्रकार उसका नाटकीकरण भी करवाया जाना चाहिए। बच्चों से समूहों में चर्चा करवायें। पूरी कहानी को या एक घटना को नाटक के रूप में तैयार करने के लिए कहें। पात्रों के बारे में वे ही निर्णय लेंगे। वे ही संवाद तैयार करेंगे और इसका अभिनय कैसे किया जाय उसका भी निर्धारण वे ही करेंगे।

कहानी में पात्र अलग-अलग प्रकार के होते हैं। हर एक पात्र की योजना होती है। उनकी योजना, उनके क्रियाकलापों या चेष्टाओं से उजागर होती है। बच्चों को इन पात्रों के विचार और क्रियाकलाप बहुत पसंद आते हैं। बच्चों को उनकी इच्छा से कहानी को आगे बढ़ाने उसको समाप्त करने जैसे कार्य करवायें जायें। बच्चों में पात्रों के चरित्र को उनके गुणों के आधार पर बदलने की क्षमता होती है। वे किसी भी पात्र को अच्छा, मूर्ख या विलक्षण बुद्धि वाला बन सकते हैं। इस प्रकार वे कहानी को 'आत्म सात' करते हैं। एक बार यदि कोई अंश बच्चों को आत्मसात् हो जाता है तो उससे अद्भुत प्रयोग हो सकता हैं।

व्याकरण में ....

आयु और मानसिक स्तर के आधार पर, एक कहानी के द्वारा बच्चों से अनेक अंश लिखना सकते हैं। संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, क्रिया-विशेषण को इनके नामों को बताये बिना भी सीखा सकते हैं। वाक्यों को, उनकी निर्माण पद्धति के आधार पर रेखांकित करवाया जा सकता है। एक ध्वनि से संबंधित शब्दों की पहचान करने के लिए कहा जा सकता है। हम व्याकरण के किसी अंश को, उसका नाम बताये बिना बच्चों को सीखा सकते हैं। इसीलिए बच्चे कहानी को बार-बार पढ़ते हैं। पढ़ने से भाषा संबंधी रहस्य ेक-एक करके उजागर होने लगते हैं। अक्षरों से, शब्दों से अनेक खेल तैयार हो जाते हैं। भाषा के सौंदर्य, चमत्कार और रहस्यों का आविष्कार होता है।

वास्तविक विषय-बच्चों द्वारा आत्मसात् करना है :-

बच्चों से कहानी फिर से लिखवाली जा सकती है। वे जैसे भी वाक्य लिखते हैं उन्हें लिखने दें। जो लोग अक्षर और शब्दों से या संदर्भहीन वाक्यों से भाषा सिखाना आरंभ करते हैं, वे बच्चों की क्षमता को बहुत कम आँकते हैं। वे समझते हैं कि बच्चों बड़े-बड़े वाक्य और कठिन शब्द नहीं सीख सकते हैं। किंतु इसमें बिल्कुल भी सच्चाई नहीं हैं।

यहाँ प्रधानता विषय की है। पढ़ना-लिखना जैसे विषयों को बच्चे विषय को समझ जाते हैं, तत्व उ ्हहें उसमें निहित व्याकरण का भी ज्ञान हो जाता है। बच्चों ने कितना सीखा है, यह जानने के लिए हमेशा प्रश्न करते रहने की बिल्कुल भी आवश्यकता नहीं होती है। हमें यह नहीं देखना है कि वे किसी भी प्रश्न का उत्तर कितनी सरीकता से देते हैं, बल्कि हमें तो उनकी विश्लेषण और निरीक्षण क्षमताओं की गति को देखना है। यदि हम इस बात को मानते हैं, तो यही बात हमारे लिए बहुत है।

वास्तव में हमें भाषा के बारे में ज्यादा नहीं सोचना चाहिए। भाषा सीखने के लिए हम जिन रहस्यों की पहचान करना चाहते हैं, उन्हीं में इसका रहस्य छिपा होता है।

उपसंहार एवं परिशिष्ट

एक समय की बात है। समाज की लगातार बढ़ती जटिलता का सामना करने के लिए जानवरों ने तय किया कि कुछ किया जाना चाहिए। उन्होंने आपस में बैठक की और अंततः एक स्कूल शुरू करने की बात पर सभी सहमत हुए।

पाठ्यचर्या में दौड़ना, पेड़ों पर चढ़ना, तैरना और उड़ना शामिल था। चूँकि ज्यादातर विशेषताएँ जानवरों में मौजूद होती हैं, इसलिए उन्होंने यह निर्णय लिया कि सभी विद्यार्थी सभी विषय में भाग लेंगे।

बतख तैरने में सबसे आगे थी। बल्कि अपने शिक्षक से भी आगे। वह उड़ने में भी अच्छी थी। लेकिन दौड़ने में बहुत खराब रही। चूँकि वह इस विषय में कमज़ोर थी इसलिए उसे अभ्यास के लिए छुट्टी के बाद रोका गया। यहाँ तक कि उसे कुछ दिनों के लिए तैरना भी छोड़ना पड़ा क्योंकि उसे दौड़ने के लिए अधिक समय चाहिए था। उसने दौड़ने का खूब अभ्यास किया और अंततः उसके जालीदार पैर बुरी तरह घायल हो गये। परिणामतः वह तैरने में भी औसत स्तर पर आ गयी। लेकिन औसत से स्कूल को कोई परहेज नहीं था, इसलिए सिवाय बतख के किसी को इस बात का दुःख नहीं था।

इसी तरह खरगोश ने दौड़ने में टॉप किया, लेकिन तैरने में औसत प्रदर्शन के लिए किये गये जबरन अभ्यास ने उसे लगभग पागल कर दिया। तैरने से उसे नफ़रत थी।

गिलहरी पेड़ों पर चढ़ने में सबसे माहिर थी, लेकिन उड़ने में औसत प्रदर्शन के लिए किये गये प्रयास ने उसे भी मानसिक स्तर पर लगभग पंगु कर दिया। लेकिन उड़ने का प्रयास तब तक कराया जाता रहा जब तक वह पूरी तरह थक नहीं गयी। परिणाम हुआ चढ़ने में सी और दौड़ने में डी ग्रेड के स्तर तक गिर गयी।

चील अनुशासन के मामले में मुसीबत करने वाली साबित हुई थी। पेड़ के ऊपर तक चढ़ने में तो वह सबको पीछे छोड़ जाती, लेकिन उसका चढ़ने का अपना तरीका था, और परीक्षा के बीच में वह अपना यह तरीका छोड़ने को तैयार नहीं थी।

बिल खोदने वाले जानवर विद्यालय के बाहर रहे और उसे टैक्स के लिए लड़े जो उन पर शिक्षा के लिए लगाया गया था क्योंकि ज़मीन खोदना पाठ्यचर्या में नहीं था। उन्होंने अपने बच्चों को बिज्जू के पास चढ़ने के लिए भेजा और बाद में उन्होंने वैकल्पिक शिक्षा के लिए एक प्राइवेट विद्यालय शुरु किया।

शिक्षक-शिक्षा : नयी दृष्टि

शिक्षक-शिक्षा में आमूल-चूल बदलाव इसलिए आवश्यक हो गया है कि इसके प्रभावों और संभावनाओं का विस्तार हो सके। इसे आधार पत्र के पिछले अनुभागों में इस बात पर विशेष ध्यान दिया गया कि शिक्षक-शिक्षा के बारे में हमारी दृष्टि में एक निश्चित बदलाव लाने की बात करता है। यह सही है कि पहले भी इस तरह के प्रयास हो चुके हैं। इनमें से कई बार शिक्षक-शिक्षा की समीक्षा करने, इसे पुनर्जीवित और पुनर्गाठित करने की कोशिश की गयी है। लेकिन ये प्रयास वास्तविक व्यवहार में नहीं लाये जा सके और कार्यक्षेत्रों में ये प्रासंगिक हैं या नहीं, ऐसा प्रमाण नहीं दे सके।

शिक्षक-शिक्षा को स्कूली व्यवस्था की आवश्यकताओं के प्रति ज्यादा संवेदनशील होना पड़ेगा। इसके लिए शिक्षकों को निम्नलिखित दोहरी भूमिका के लिए तैयार रहना होगा। वे सीखने-सिखाने की परिस्थितियों में उत्साहवर्धक, सहयोगी तथा सीखने को सहज बनाने वाले बनें जो अपने विद्‍यार्थियों को उनकी प्रतिभाओं की खोज में, उनकी शारीरिक तथा बौद्‍धिक क्षमताओं को पूर्णता तक जानने में, उनमें अपेक्षित सामाजिक तथा मानवीय मूल्यों के तथा चरित्र के विकास में तथा जिम्मेदार नागरिकों की भूमिका निभाने में समर्थ बनायें।

एक समूह के सक्रिय सदस्य के रूप में विद्‍यार्थियों के बदलते हुए सामाजिक तथा व्यक्तिगत ज़रूरतों को ध्यान में रखते हुए स्कूली पाठ्‍यचर्या के नवीकरण की प्रक्रिया में योगदान देने के चेतन प्रयास करें। ऐसा करने में वे विगत के अनुभवों के साथ राष्ट्रीय विकास के लक्ष्यों और शैक्षणिक प्राथमिकताओं के प्रकाश में उभरती हुई ज़रूरतों और सरोकारों का ध्यान रखें।

इन अपेक्षाओं से पता चलता है कि अध्यापक बड़े संदर्भ और गतिकी में काम करता है और उससे बड़ी उम्मीदें जुड़ी होती हैं। कहा जा सकता है कि शिक्षक को शिक्षा के सामाजिक संदर्भों के प्रति जवाबदेह और संवेदनशील होना चाहिए। साथ ही उसे विद्‍यार्थियों की पृष्ठभूमि के अंतर, राष्ट्रीय तथा वैश्विक संदर्भों, सामाजिक समता, न्याय आदि के राष्ट्रीय लक्ष्यों की जानकारी भी होनी चाहिए।

इन आकांक्षाओं पर खरा उतरने के लिए शिक्षक-शिक्षा को इस प्रकार का होना चाहिए जो प्रत्येक प्रशिक्षु को समर्थ बना सकें ताकि वह-

- बच्चों का खयाल रख सके और उनके साथ रहना पसंद करे।
- सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक संदर्भों में बच्चों को समझ सके।
- व्यक्तिगत अनुभवों से अर्थ निकालने को अधिगम अर्थात सीखना समझे।
- सीखने के तरीके समझे, सीखने की अनुकूल परिस्थितियाँ पैदा करने के संभावित तरीके जाने तथा सीखने के प्रकार, गति तथा तरीकों

के आधार पर विदयार्थियों की विभिन्नताओं को समझे।

- ज्ञान को चिंतनशील सीखने की सतत उभरती प्रक्रिया।
- ज्ञान को पाठ्यपुस्तकों के बाहूय ज्ञान के रूप में न देखकर साझा संदर्भों और व्यक्तिगत संदर्भो में उसके निर्माण को देखे।
- उन सामाजिक, पेशेवर और प्रशासनिक संदर्भों के प्रति संवेदनशील हो जिनमें उसे काम करना है।
- ग्रहणशील हो और लगातार सीखता रहे, समाज और विश्व को बेहतर बनाने की दिशा में अपनी ज़िम्मेदारियों को समझ सके।
- वास्तविक परिस्थितियों में न केवल समझदारी वाले रवैये को अपनाने की उपमुक्त योग्यता का विकास करें, बल्कि इस तरह की परिस्थितियों का निर्माण करने के भी योग्य बनें।
- उसका भाषायी ज्ञान और दक्षता का आधार ठोस हो। व्यक्तिगत अपेक्षाओं, आत्मबोध, क्षमताओं, अभिरुचियों आदि की पहचान कर सकें।

उद्देश्य :

यह आवश्यक हो गया है कि शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रम इन आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए जवाबदेह हो। यह शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रम में बुनियादी बदलावों दूवारा ही संभव है। इसका मतलब है कि हमें एकदम नयी दिशा में जाने की आवश्यकता है। जिसके लिए हमें आवश्यक सैदूधांतिक और व्यावहारिक बातें करनी चाहिए। इसके पश्चात प्रचलित ज्ञान और व्यवहार करने को उचित रूप से शामिल करने के लिए या फिर उन्हें छोड़ने के लिए उन्हें जाँचा-परखा जाना चाहिए। उल्लेखनीय है कि शिक्षक-शिक्षा के इस नये उपागम में बहुत सारे पहलुओं पर विशिष्ट अवधारणात्मक और व्यावहारिक फोकस होना चाहिए। उनमें से कुछ प्रमुख पहलू निम्नलिखित हैं :

१. सीखना :

विदूयार्थी अधिगम का अनुभव सक्रिय जुड़ाव और सहभागिता के आधार पर प्राप्त करते हैं। इसे करते हुए वे अपने कार्य और विचार गढ़ते हैं या इन्हें संक्षेप में कहें तो इस प्रकार वे अपने ज्ञान का अपने तरीके से निर्माण करते हैं। इसलिए अधिगम कृत्यों की तलाश, विचारों का सम्मिलिन, चिंतन, विश्लेषण और आत्मसातीकरण की प्रक्रिया होती है। इस पर विदूयार्थी के सामाजिक संदर्भ का बड़ा प्रभाव होता है।

२. अधिगम :

अधिगम एक ऐसी प्रक्रिया है जो कई माध्यमों से होती है न कि पूर्व-निर्धारित शिक्षक द्वारा केवल एक माध्यम से। यह आवश्यक रूप से सहभागिता-आधारित प्रक्रिया है होती है जिसमें विद्यार्थी अपना ज्ञान अपने तरीके से बनाता है। इसे यह ग्रहण, पारस्परिक बातचीत, अवलोकन और चिंतन के माध्यम से निर्मित करता है। इस प्रक्रिया के दौरान विद्यार्थी के अधिगम में उतार-चढ़ाव होता रहता है। इसलिए यह प्रक्रिया रेखीय न होकर टेढ़ी-मेढ़ी और जटिल होती है।

अतः अधिगम कोई आसान और सीधी प्रक्रिया नहीं होती। यह जटिल, बहुआयामी और गतिशील प्रक्रिया है।

विद्यार्थी

चूँकि शिक्षक की भूमिका विद्यार्थी और ज्ञान के संदर्भ में आवश्यक मानी जाती है इसलिए शिक्षक-शिक्षा का मुख्य फोकस विद्यार्थी और सीखने पर होना चाहिए। विद्यार्थी को व्यक्ति विशिष्ट के रूप में उसके अपने सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों में देखा जाना चाहिए तथा यह जानना चाहिए कि इसमें अद्भुत क्षमता है। इस अर्थ में, विद्यार्थी केवल एक मनोवैज्ञानिक इकाई मात्र नहीं होता, वह जीवंत सहभागी होता है। वह अधिगम प्रक्रिया में भाग लेना चाहता है और उसके सुधार की दिशा में काम भी करना चाहता है। विद्यार्थी अपने सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों के आधार पर चीज़ों को समझते हैं, अपनी अभिवृत्ति का विकास करते हैं, और अपने व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर अपने तरीके से चीज़ों की व्याख्या करते हैं।

सीखने के तरीके और गति के आधार पर विद्यार्थियों में भिन्नता पायी जाती है। एक ही अवस्था में वे अलग-अलग ढंग से सीखते हैं। यह प्रक्रिया मनोवैज्ञानिक से कहीं अधिक होती है। शिक्षकों को विद्यार्थियों में सीखने की वास्तविक क्षमता की पहचान करने और विद्यार्थियों के सीखने के रास्ते को प्रतिबंधित किये बिना या बिना किसी आदेश के आगे ले जाने के सरल तरीके ढूँढ़ने की ज़रूरत है। शिक्षक-शिक्षा को शिक्षकों को इस दिशा में सक्षम बनाने वाला होना चाहिए कि वह विद्यार्थियों की विविधताओं का सम्मान कर सके और यह भी समझ सकें कि यह एक गतिशील प्रक्रिया है।

इस प्रकार विद्यार्थी सक्रिय और सहयोगी बनेंगे और अपने उद्देश्यों, रणनीतियों तथा परिस्थितियों के प्रति सजग होंगे और साथ ही जिम्मेदार भी होंगे। यहाँ सीखने वालों की क्षमता को स्थायी नहीं माना गया है बल्कि यह माना गया है कि अनुभव के साथ उनका विकास होता है।

शिक्षक :

शिक्षक की भूमिका सीखने के मार्ग में सहायता करने वाले की होती है। शिक्षक वह होता है जो विद्यार्थियों को उनकी क्षमताओं की पहचान कराये, उनके व्यक्तिगत तथा संदर्भ विशिष्ट अनुभवों को इस तरीके से सामने रखे कि वे राष्ट्र के संदर्भ में स्वीकृत हों।

शिक्षक को यह समझना चाहिए कि पाठ्यचर्या विद्यार्थी केंद्रित सीखने की प्रक्रिया के संदर्भ में विकसित होती है, वह पहले से कम नहीं हो सकती। शिक्षक विद्यार्थियों द्वारा सीखे जाने की प्रक्रिया में सहयोग देने के लिए ही तैयार किया जाता है। लेकिन प्रत्येक अधिगम परिस्थिति संचित रूप से शिक्षक को बच्चों की ज़रूरतों को पहचानने के लिए अंतदृष्टि प्रदान करती है।

ऐसी कोई एक पद्धति नहीं है जो सभी विद्यार्थियों को एक ही ढंग से सिखा सके। हर शिक्षक को बोधगम्य अभ्यास द्वारा अलग-अलग विद्यार्थियों में सीखने के तरीके पहचानने होंगे लेकिन इस तथ्य को स्वीकार करते हुए कि सभी विद्यार्थी अपने-अपने ढंग सीखते हैं। शिक्षण विधि की प्रभाविता और उपयुक्तता जाँचने के दो पहलू हैं। पहला है शिक्षक की अपनी शैली जिसमें वह विधि या विधियों का उपयोग करता है। इसका संबंध उसकी अपनी ज़रूरत से होता है। दूसरा है विद्यार्थियों के सीखने का अपना ढंग। अनोखे ढंग की सहभागिता, सीखने या जानने की प्रक्रिया में शिक्षक तथा विद्यार्थी की भूमिका स्पष्ट रूप से सामने लाती है। जब इसमें दोनों ज्ञान की प्रक्रिया में भाग लेते हैं तो लाभान्वित होते हैं। विद्यार्थी के लिए अधिगम ग्रहण करना शैक्षिक परिस्थितियों का एक बड़ा सरोकार है। इस दृष्टि में तकनीकी रूप से दोनों ही सीखने वाले हैं।

शिक्षक को अपने आपको ऐसे पेशेवर के रूप में देखने की आवश्यकता है जिसमं उपयुक्त क्षमता, लगन, उत्साह, नये तरीके अपनाने की लगन और चिंतनशीलता है। उसमें संवेदनशीलता भी है, न केवल विद्यार्थियों और संस्था के लिए बल्कि बृहत् सामाजिक संदर्भ में जिसमें व्यक्ति कार्य करता है, की उभरती चिंताओं के प्रति भी।

शिक्षक को समझ लेना चाहिए कि विद्यार्थी स्कूल में अब उसे ज्ञान के स्रोत के रूप में नहीं देखते। मीडिया ने उनके सामने अनंत संभावनाएँ खोली हैं। फिर भी बहुत सारी ऐसी बातों, जो अव्यवस्थित सूचनाओं के रूप में हैं, को विद्यार्थी को अर्थपूर्ण ढंग तथा सकारात्मक ढंग से सीखना शिक्षक के हिस्से में आता है। अभी आई.सी.टी. जैसी सुविधाओं तक सभी की पहुँच होने में लगेगा। शिक्षक को इस तरह की परिस्थिति में आई.सी.टी. के साथ और इसके बिना प्रभावी रहने के लिए न केवल दक्षता चाहिए बल्कि ऐसी संवेदनशीलता भी जो युवा विद्यार्थियों को उपयुक्त संदर्भ में परिस्थिति को समझने और स्वीकार करने की ओर ले जाए।

ज्ञान :

शिक्षक-शिक्षा में ज्ञान का अवयव शिक्षा अनुशासन के विस्तृत क्षेत्र से लिया गया है। इसमें कई तरह के ज्ञान शामिल हैं उदाहरण के लिए, अवधारणात्मक,तकनीकी तथा पेशेवर इत्यादि। शिक्षक-शिक्षा में ज्ञान के विविध अवयव शुरुआत करने वाले के लिए स्पष्ट होने चाहिए जैसे विद्यार्थी, शिक्षक और शैक्षिक दृष्टिकोण जिसमें किसी के कार्यों को समझा जा सके और शिक्षक-शिक्षा के दौरान अधिगम को अधिक सार्थक, अर्थपूर्ण और उपयोगी बनाया जा सके।

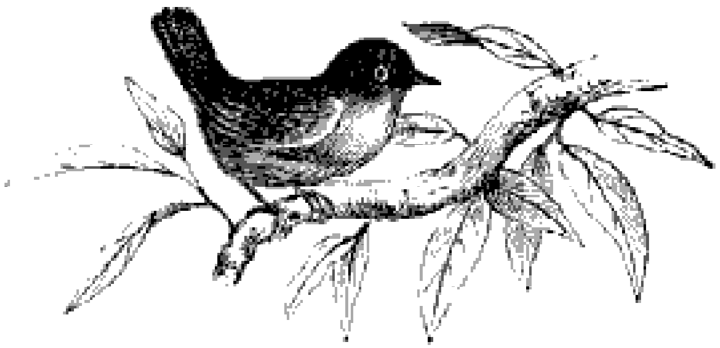

इस तरह समर्थ और सक्षम शिक्षक अच्छा अधिगम वातावरण देने वाला बन जाता है जो यांत्रिक रूप से विद्यमान परिस्थितियों से समायोजन ही नहीं करता बल्कि उन्हें सुधारने का प्रयत्न भी करता है और उसमें आवश्यक तकनीकी जानकारी तथा आत्मविश्वास भी होता है।

मूल्यांकन :

नये शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रम की प्रक्रिया सतत हो, ऐसा सुझाव है। शिक्षक-प्रशिक्षक विद्यार्थी-शिक्षकों का मूल्यांकन उनके गुणों जैसे सहयोग और सहभागिता, अन्वेषण और एकीकरण के आधार पर करते हैं। साथ ही लिखित व मौखिक कौशलों, उनकी शैली तथा प्रस्तुतीकरण में नवीनता आदि के आधार पर भी मूल्यांकन किया जाता है।

मूल्यांकन कई प्रकार के होते हैं। जैसे स्वमूल्यांकन, छात्र-मूल्यांकन, शिक्षक का सकारात्मक प्रतिपुष्टि तथा वर्ष के अंत में किया गया औपचारिक मूल्यांकन। इन सभी मूल्यांकनों का उद्देश्य है विद्यार्थी-अध्यापक अपनी कमियों और अच्छाइयों को समझ सकें और यह समझ सकें कि उसमें क्या सुधार लाया जा सकता है तथा सीखने की प्रक्रिया का अगला लक्ष्य भी निर्धारित कर सकें।

मूल्यांकन आमतौर पर गुणात्मक होगा न कि मात्रात्मक। इससे लगातार यह प्रक्रिया सतत हो और विविध गतिविधियों में उनकी निष्पत्ति के आधार पर उनका स्थान कम होगा।

❖ ❖ ❖

भाषा, भाषा शैक्षिक संबंधित सरकारी व स्वच्छंद संस्थाएँ, वेबसाईट, उपयुक्त ग्रंथ

अ) भाषा विकास के लिए उपयोगित सरकारी संस्थाएँ

क्र. सं.	संस्था का नाम	वेबसइट
1.	सेंट्रल इनस्टिट्यूट ऑफ इंडियन लांग्वेजेस, मैसूर	www.cill.org
2.	कमीशन फर सैंटिफिक अंड टेकनिकल टर्मिनालजी, नई दिल्ली	www.cstt.nic.in
3.	नेशनल कौंसिल ऑफ एड्युकेशनल रीसर्च अंड ट्रैनिंग, नई दिल्ली	www.ncert.nic.in
4.	नेशनल ट्रांश्लेषण मिशन	www.ntm.org.in
5.	केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली	www.hindinideshalaya.nic.in
6.	केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा	www.khsindia.org;

आ) स्वच्छंद संस्थाओं के नाम

क्र. सं.	संस्था का नाम	वेबसइट
1.	सेंटर फर लेरनिंग, बेंगलूर	http://cfl.in
2.	सेंटर फर लेरनिंग, रिसोरसेस, पूणे	www.clrindia.net
3.	दिगंतर शिक्षा एवं खेलकूद समिती, जैपूर	www.digntar.org
4.	एकलव्य, मुंबाई	http://eklavya.in
5.	प्रथम, मुंबाई	www.pratham.org
6.	ऋषीव्याली इनिस्टिट्यूट ऑफ एड्केशन, चित्तूर ज़िला, आ.प्र.	http://www.rishivalley.org
7.	द टीचर फौंडेशन, बेंगलूर	www.teacherfoundation.org
8.	विद्याभवन एड्युकेशन रीसोरस सेंटर, वी.वी. टीचर्स कॉलेज़, उदयपूर	http://vidyabhavansociety-eminar-org

इ) प्रचुरण संस्थाओं के नाम

क्र. सं.	संस्था का नाम	वेबसइट
1.	एमेस्को पब्लिकेशन्स, हैदराबाद	www.emesco.com
2.	भारत ज्ञान विज्ञान समिती (बिजिविएस)	www.bgws.org
3.	सेंटर फर लेरनिंग रीसोरसेस	www.clirindia.net/materials/childrenbooks.html
4.	चंदमामा इंडिया	www.chandamama.com
5.	चिल्ड्रन बुकट्रस्ट (CBT)	www.childrenbooktrust.com
6.	एकलव्य	http://eklavya.in
7.	इंडिया बुक हौज़	www.ibhworld.com
8.	जनचेतन	http://janchetnaa.blogspot.com
9.	कराडी टेल्स कंपनी	www.karaditales.com
10.	कथा, नईदिल्ली	www.katha.org
11.	मेकमिलन पब्लीशर्स	http://international.macmillan.com
12.	नेशनल बुक ट्रस्ट (NBT)	www.nbtindia.org.in
13.	नेशनल कौनसिल ऑफ एड्युकेशनल रिसरर्च एंड ट्रैनिंग	www.ncert.nic.in
14.	पिसियम चिल्ड्रन्स मैगज़ीन	www.pcmmagazine.com
15.	प्रथम बुक्स	www.prathambooks.org
16.	पुस्तक महल	www.pustakmahal.com
17.	रूम टु रीड	www.roomtoread.org

क्र. सं.	संस्था का नाम	वेबसइट
18.	द लरनिंग ट्री स्टोर	http://www.tltree.com
19.	तुलिका बुक्स	www.tulikabooks.com
20.	सरस्वती पब्लीकेशन्स	www.saraswatihouse.com
21.	हिंदी वर्णमाला, उच्चारण ज्ञान तथा भाषा सीखने के लिए -	http://www.anu.edu.au/asianstudies/hindi/pronounce/velar.html; http://pune.cdac.in/html/aai/lilasil.aspx; http://lilappp.cdac.in/; http://www.omniglot.com/writing/syllabic.htm
22.	हिंदी प्रशिक्षण एवं हिंदी सॉफ्टवेयर डाउनलोड करने के लिए-	http://www.hindiforyou.blogspot.com/ http://vishwajitmajumdar.blogspot.com/
23.	ऑनलाइन हिंदी शब्दकोश के लिए -	http://www.shbdkosh.com/; http://dsal.uchicago.edu/dictionaries/caturvedi/ http://hi.wiktionary.org/wiki/Hindi_Glossaries
24.	हिंदी साहित सभी 22 भारतीय भाषाओं के लिए पौद्योगिकी विकास जानने तथा सरल टायपिंग सीखने जैसे आकर्षक सॉफ्टवेयर निशुल्क डाउनलोड करने के लिए	http://www.ildc.in/Hindi/hdownloadhindi.html
25.	हिंदी सीखने के लिए, हिंदी से रोज़गार समाचार के लिए, हिंदी पुस्तकों के लिए और हिंदी अध्यापन विकास के लिए सहायक वेवसाइट	www.rajbhasha.nic.in; www.ildc.gov.in; www.bhashaindia.com; www.ssc.nic.in; www.parliamentofindia.nic.in; www.ibps.in; www.khsindia.org; www.hindinideshalaya.nic.in